A Thousand Splendid Suns

हज़ारों दमकते आफ़ताब

ख़ालिद हुसैनी

द काइट रनर के लेखक की दिल को छू लेने वाली कृति

Hissa-2

बयालीस

लै ला

एक काग़ज़ी थै ले में अज़ीज़ा ने ये चीजें पै क कीं: अपनी फू लदार कमीज़ और मोज़ों का अके ला जोड़ा अपने बे मे ल ऊनी दस्ता,नेएक पु राना कोंहड़े के रं ग का कं बलिस पर सितारे और धू मके तू बने हुए थेएक दरार पड़ा हुआ प्लास्टिक का कप, एक के ला और अपने पां सों का से ट।

2001 में लै ला के ते ईसवें जन्मदिन से कु छ हीदिन पहले की अप्रै ल की एक सर्द सु बह थी। आसमान स्याह था और नाखु शगवार ठं डी हवा स्क्रीन डोर को भड़भड़ा रही थी।

'लै ला ने कु छदिन पहले सु ना थकि अहमद शाह मसू द फ्रां स गया था और उसने यू रोपीय सं सद से बात की थी। मसू द अब अपने उत्तरी इलाके में था जहां वो उत्तरी गठबं धन की रहनु माई कर रहा था। यह गठबं धन तालिबान के ख़िलाफ़ अभी लड़ रहा अके लाविरोधी समू ह था। यू रोप में मसू द नेश्चिम को अफ़ग़ानिस्तान के आतं कवादीशिविरों के बारे में चे ताया था और अमेरिका के साथसाथ उनसे फ़रियाद की थी कि वो तालिबान के ख़िलाफ़ लड़ाई में उनकी मदद करें ।

'अगर सदर बु श हमारी मदद नहीं करते' उसने कहा था, 'तो ये दहशतगर्द जल्दी ही अमेरिका और यू रोप को नु क़सान पहुं चाएं गे ।

इसके महीने भर पहले लै ला को पता लगा कि तालिबान ने बमियान के विशाल बु द्धों की दरारों में टीएनटी लगा कर उन्हें उड़ादिया था। उन्होंने

कहा था कि बु द्धों की मूर्तियां बु तपरस्ती और गु नाह की चीजें थीं। अमेरिका से ले कर चीन तक पू री दुनिया ने इसका विरोध किया। पू री दुनिया की सरकारों, इतिहासकारों और पु रातत्ववे त्ताओं नेचिट्ठियां लिख कर तालिबान से फ़रियाद की कि अफ़ग़ानिस्तान के इन महान ऐतिहासिक कलाकृतियों को तबाह न किया जाए। लेकिन तालिबान ने अपनी करते हुए दो हज़ार साल पु राने बु द्धों को बम को उड़ियाा। हर धमाके के साथ वे अल्लाह-ओ-अकबर कहते, हर बार धू ल के बादलों में मूर्तियों के हाथ या पै र उड़ने पर खु शी से चिल्लाते । लै ला को1987 में उनमें से बड़े बु द्ध के ऊपर बाबी औरिक़ाके साथ खड़े होना याद आया। धू प से रोशन उनके चे हरों पर हवा के झोंकों का पड़नाीचे दमकती हुई वादी में गोल-गोल घू मते बाज़ को उड़ते दे खना याद आया। लेकिन जब लै ला ने मूर्तियों के तोड़े जाने के बारे में सु ना तो उस पर इसका असर नहीं हुआ। उसके लिए मुश्किल से ही ये मायने रखती थी। जब उसकी अपनी ज़िंदगी धू ल मेंमिल गई थी तो उसे मूर्तियों की क्या परवाह होती?.

जब तक रशीद ने नहीं कहाकि उसके चलने का वक़्त हो गया है,वो बै ठक के एक कोने में शॉलपर बिना कु छ बोले, पत्थर जै सा चे हरा बनाए बै ठी रही। उसकेबिखरे हुए बालों की लटें चे हरे पर झू ल रही थीं। चाहे वो कितनी भी सां स खींचे, लै ला को लग रहा थाकि वो अपने फें फड़ों में पर्याप्त हवा नहीं भर पा रही थी।

कारते ह्से ह के रास्ते में जल्मै रशीद के बां हों में उछलता रहा और अज़ीज़ाम्मका हाथ पकड़े चु पचाप उसकी बगल में जल्दी-जल्दी चलती रही। हवा अजीजा की ठोढ़ी के नीचे बं धी गं दी स्कार्फको और उसकी पोशाक की किनारी को उड़ा रही थी। हरे क क़दम के साथ अज़ीज़ा अब और उदास होती जा रही थी,ज्यों-ज्यों वो महसू स करने लगी थीकि उससे झू ठ बोला गया था। अज़ीज़ा को सच बताने कीहिम्मत लै ला नहीं

जु टा पाई थी। उसने उसे बताया थाकि वो एक स्कू ल जा रही थी, एक ऐसा ख़ास स्कू ल जहां बच्चे खाते और सोते हैं और क्लास के बाद घर नहीं लौटते । अब अजीजा बाहर लै ला से वो सवाल कर रही थी,जो वो पिछले कईदिनों से उससे पू छ रही थी। क्या बच्चे अलग-अलग कमरों में सोते हैं या सारे एक ही बड़े कमरे में रहते हैं?क्या वो दोस्त बनाएगी?

क्या लै ला को यकीन थाकि वहां टीचर अच्छे होंगे?

और सबसे ज़्यादा, मु झे वहांकितने समय तक रहना होगा?

वो एक कब्ज़ाई हुई, बै रकनु मा इमारत से दो ब्लॉक पहले रुक गए।

'जल्मे और मैं यहां इं तज़ार करें,'रशीद ने कहा। 'ओह, में भू ल जाऊंइससे पहले..'

रशीद ने अपनी जे ब से एक च्यू इं ग गम का पैकेट निकाला और विदाई के वक़्त के तोहफ़े के बतौर अज़ीज़ा की तरफ़ बढ़ाया। वो जड़ और उदार दिख रहा था। अजीजा ने उसे लेलिया और बु दबु दा कर शुक्रिया कहा। अज़ीज़ा के सलीके और माफ़ कर दे ने की उसकी बड़ी क़ाबिलियत पर लै ला मु ग्ध हो गई और उसका आं खें भींग गईं। उसकादिल उमड़ पड़ा और इस दुख से वो बे सु ध हो गईकि आज दोपहर में अज़ीज़ा उसकी वग़ल में नहीं सोई होगी, कि वो अपने सीने पर अज़ीज़ा के हल्के हाथ का वज़न,अपनी पसलियों में अज़ीज़ा के सिर का दबाव, उसकी गर्दन को गर्माहट से भरती अज़ीज़ा की सां सों,अपने पे ट को दबाती उसकी एड़ियों को महसू स नहीं कर पाएगी।

जब अज़ीज़ा दूर ले जाई जाने लगी तो जल्यै रोने,चिल्लाने लगा, जीजा! ज़ीज़ा ! अपने अव्वा की बां हों में कसमसाने और पां व झटकने लगा,अपनी वहन की पु कारता रहा जब तककि सड़क पार एक मदारी के बं दर की तरफ़ उसका ध्यान नहीं बं ट गया।

आखिरी के दो ब्लॉक मरियम, लै ला और अज़ीज़ा अके ले गईं। इमारत पर पहुं चे तो लै ला को उसकी दरकी हुई बाहरी दीवार, लटकी हुई छतें, गायव खिड़कियों पर कीलों से ढुंके हुए लकड़ी के तख्ते औरगिरती हुई दीवार के ऊपर लगे झू ले का ऊपरीसिरा दिखा।

वी दरवाजे पर रुक गए और लै ला ने अज़ीज़ा कोफिर से वही बात कही, जो वो उसे पहले कह चु की थी।

'और जब वो तु म्हारे अब्बा के बारे में पू छें गे तो तु म क्या कहोगी?'

'उन्हें मु जहिदीनों ने मार डाला,' अजीजा ने कहते हुए ऐसा मुं ह बनाया मानी वा इसके वारे में बहुत नहीं जानती हो, लेकिन उसे पता होकि यह जोखिम से भरा हुआ है ।

'अच्छा है । अजीजा, समझ गईं ना?'

'क्योंकि यह एक खास स्कू ल है,' अजीजा ने कहा। अब जब वो यहां

आ चु के थे और इमारत एक हकीकत थी, इस बात से वोहिली हुई दिख रही थी। उसका निचला होंठ कां प रहा था और उसकी आं खें रोने-रोने को हो रही थीं और लै ला ने यह दे खलिया कि वो बहादुर बनने केलिए कितनी जद्दोजहद कर रही थी। 'अगर हम सच बता दें,' अजीजा ने एक पतली आवाज में बिना सां सलिए हुए कहा, 'तो वो मु झे नहीं रखें गे । यह एक खास स्कू ल है । मैं घर जाना चाहती हूं ।

' 'मैं पू रे वक़्त आती रहूं,' लै लाकिसी तरह बोल पाई। 'वादा करती हूं ।

'मैं भी,' मरियम ने कहा। 'हम यहां तु मसेमिलने आएं गे,' अजीजा जो और हमे शा की ही तरह हम साथ खे लें गे । बस कु छ समय की बात, जबतक तु म्हारे अब्बा को काम नहींमिल जाता।'

'यहां खानामिलता है,' लै ला बे चै न होते हुए बोली। उसकेकेबुजे सु कू मिला कि अज़ीज़ा यह नहीं दे ख सकती थी कि वो भीतर ही भीतर कै सेविखर रही थी। 'यहां तु म भू खी नहीं रहोगी। वो भात और रोटी और पानी दे ते हैंशायद फल भी ।'

'लेकिन यहां आप नहीं रहें गी। और मे रे साथ खालारियाम नहीं होंगी।' 'मैं आकर तु मसेमिला करूं गी,' लै ला ने कहा। 'पू रे वक़्त । मु झे दे खो अज़ीज़ा,मैं आकर तु मसेमिलूं गी। मैं तु म्हारी अम्मी हूं । अगर इसमें मे री जान भी चली जाए तब भी मैं तु मसे आकरमिलूं गी'।

यतीमखाने का डायरे क्टर एक झुका हुआ, पतले सीने वाला आदमी था,जिसका चे हरा खु शगवार लकीरों से भरा था। वो गं जा था और उसकी लं बीबिखरी हुई दाढ़ी थी। आं खें मटर की तरह थीं। उसका नाम जमान था। उसने टोपी पहन रखी थी। उसके चश्मे के शीशे चटके हुए थे ।

अपने दफ्तर की तरफ़ ले जाते हुए उसने लै ला औरियाम से उनके नाम पू छे । उसने अजीजा का नाम और उम्र भी पू छा। वो एक कम रोशनी वाले लियारे से होकर गु जरे जहां नं गे पां वबिक्खेर कर झां क रहे थे । कु छ केसिर मुं डे हुए थे कु छ के नहीं। उन्होंने उधड़ी हुई आस्तीनों वाले, खोटे परघिस कर तार-तार हो चु की चीथड़े हो आई जींस पहन रखी थी। उनके कोटों में टे प की पै बं द लगी थी। लै ला को साबु न और टे ल्कम, अमोनिया

और पे शाब की गं ध महसू स हुई। उसने महसूकिया कि लै ला भी समझने लगी थी,और अब सु बक रही थी।

लै ला को आं गन की एक झलकमिली घास-पतवार, सू खा हुआ झू ला,पिचकी हुई बास्के टबॉल । जिन कमरों से होकर वे गु ज़रे उनमें कोई समसामान नहीं था, खिड़कियां प्लस्टिक की चादरों से ढं की गई थीं। एक कमरे से एक लड़कनिकला और उसने लै ला की कोहनी पकड़ ली और उसकी गोद में चढ़ने की कोशिश करने लगा। एक सहायक ने अपना झाड़न नीचे रखा और बच्चो के हाथिया।

जमान यतीमों के साथ नर्मी से पेश आता दिख रहा था। पास से गुजरते हुए उसने कुछ सिरों को थपथपाया, उन्हें एकाध दोस्ताना बातें कीं, उनके बाल सहलाए और यह सब उसने बिना अहसान जताए किया। बच्चों को उसका छूना अच्छा लगता था। लैला को लगा कि वो सारे उसे उम्मीद के साथ देख रहे थे।

वो उन्हें अपने दफ्तर में ले गया जिसमें बस तीन फोल्डिंग कुर्सियां और बिखरे हुए कागजों के ढेर से भरी डेस्क थी।

'आप हेरात से हैं,' जमान ने मरियम से कहा। 'आपके लहजे से मैं बता सकता हूं।

अपनी कुर्सी पर पीछे की तरफ़ झुक कर पेट पर अपने हाथ बांधते हुए उसने बताया कि उसका साला वहां रहा करता था। इस मामूली हावभाव में भी लैला ने उसकी सिविधियों में मेहनत के कांम पर गौर किया। और हालांकि वो फीके से मुस्कुरा रहा था, लैला ने महसूस किया कि उसके इस मजाकिया और खुशनुमा मिजाज़ के भीतर कोई परेशानी, कोई घाव, कोई निराशा और पराजय का भाव छुपा हुआ है।

'वो शीशे बनाता था,' ज़मान ने कहा। 'उसने ये खूबसूरत हरे हंस बनाए थे। आप उन्हें धूप में रखें तो वो भीतर से दमक उठते थे, मानो उनके भीतर नन्हें-नन्हें जवाहिरात भरे हुए हों। आप हेरात वापस गई हैं?'

मरियम ने कहा कि वो नहीं गई है।

'मैं खुद कांधार से हूं। क्या आप कभी कांधार गई हैं? हमारा शहर? यह प्यारी जगह है। वो बागीचे और अंगूर ओह, अंगूर। वो जीभ पर जादू कर देते।'

दरवाजे पर जमा हो गए कुछ बच्चे भीतर झांक रहे थे। ज़मान ने पश्तो में नर्मी से उन्हें जाने को कहा।

'बे शक मैं हे रात को भी प्यार करता हूं । कलाकारों और ले खबूफियों और सं तों का शहर। आपको वह पु राना मज़ाक पता हैकि आप जिस किसी के पै र को भी खरचिए आप पाएं गेकि आपने एक शायर को खोद दिया है ।

लै ला की बगल में अज़ीज़ा ने नाक से सां स ली।

ज़मान ने आह भरी। 'आह, वह। मैं ने आपको हं सदिया, नन्हीं हमशीरा । अक्सर ये सबसे मुश्किल काम होता है । मैं कु छ दे र किलिए तो फिक्र कर रहा था। मु झे लगाकि मु झे मेंु की तरह बां ग दे ना पड़े गा या गधे की रें कना पड़े गा। लेकिन आप तो हं स दीं। और इतनी प्यारी हैं आप'।

उसने अज़ीज़ा को ले जाकर कु छ दे र सं भाले रखनेलिये एक मददगार को भीतर बु लाया। अज़ीज़ा कू द कर मरियम की गोद में चढ़ गई और उससेचिपट गई।

'हम बस बातें करने जा रहे , मेरी जान,' लै ला ने कहा।'मैं यहीं होऊं गी। ठीक? यहीं।'

'क्यों नहीं हम कु छमिनटों के लिए बाहर चलें, अज़ीज़ा जो?' मरियम ने कहा। 'तु म्हारी अम्मी काका ज़मान से बातें करना चाहती हैं । बस कु छमिनटों के लिए। अब, आओ चलें ।'

जब वो अके ले रह गए,तो ज़मान ने अज़ीज़ा के पै दा होने की तारीख,उसकी अब तक की बीमारियों का ब्योरा, एलर्जी वगै रह के बारे में पू छा। उसने अज़ीज़ा के अब्बा के बारे में पू छा और लै ला को एक ऐसा झू ठ बोलते हुए अजीब महसू स हुआ जो वास्तव में सच था। जमान ने सु उसके भाव से न तां वां भरोसा जाहिर हो रहा था और न ही सं दे ह। उसने कहाकि वो इज़्ज़त के नाम पर यह यतीमखाना चला रहा था। अगर एक हमशीरा कहती हैं कि उनके शौहर मर चु के हैं और वो अपने बच्चे की दे खभाल नहीं कर सकतीं,तो इस पर सवाल नहीं करता था।

लै ला रोने लगी।

ज़मान ने कलम रखदिया।

'मैं शर्मिंदा हूं,' अपनी हथे ली से अपना मुं ह दबाती हुई लै ला फटी हुई आवाज़ में बोली।

'मु झे दे खिए हमशीरा ।'

'कै सी मां अपने खु द के बच्चे को छोड़ती है ।

'मु झे दे खिए ।'

लै ला नेनिगाह उठाई।

'ये आपका कसू र नहीं है । आपने सु ना आपका कसू र नहीं है । कसू रवार वो जं गली वहशी हैं । एक पश्तू न होने के नाते उन्होंने मु झे सा किया है । उन्होंने मे रे लोगों के नाम को जलील किया है । और आप अके ली नहीं हैं हमशीरा। यहां हर वक़्त आपकी तरह मां एं आती रहती-हैं र वक़्त-ऐसी मां एं यहां आती रहती हैं जो अपने बच्चों का पे ट नहीं भर सकतीं क्यों कि तालिबान उनको बाहर नहीं निकलने दें गे कि वो रोजी-रोटी कमा सकें । इसलिए आप खु द को कसू रवार मत ठहराइए। कोई आप पर इल्ज़ाम नहीं लगा रहा। मैं समझता हूं ।'वो आगे की तरफ़ झु क आया। 'हमशीरा। मैं समझता हूं ।'

लै ला ने बु र्के के कपड़े से अपनी आं खें पोंछीं।

'जै सी ये जगह है ज़मान ने आह भरी और हाथ से इशारा किया, 'आप दे ख सकती हैं कि यह बहुत ही भयानक हालत में है । हमे शा हमको बहुत कम माली मदद मिलती है, हमे शा ही हम घिसटते हुए जै सों से काम चलाते हैं । हमें तालिबान से बहुत कम या कु छ भी मदद नहीं मिलती। लेकिन हम इं तजाम कर ले ते हैं । आपकी तरह हम भी वो करते हैं जो हमें करना है । अल्लाह बड़ा और रहीम है और वही मदद करता

है और जब तक वो मदद करे गा मैं इसका ख्याल रखूं गा कि अज़ीज़ा को रोटी मयस्सर हो और कपड़े मिलते रहें । इतना मैं वादा करता हूं आपसे' ।

लै ला ने सिर हिलाया ।

'ठीक है?'

वो दोस्ताना तरीके से मु स्कु रा रहा था लेकिन रोइए मत, हमशीरा। अपनी रुलाई उसे दे खने नहीं दीजिए।'

लै ला ने फिर से आं खें पोंछीं 'खु दा आपका भला करे' उसने भरे गले से कहा 'खु दा आपका भला करे बिरादर।'

हुआ। लेकिन जब विदा ले ने का वक़्त आया तो लै ला को जो डर था वही

अजीजा पर खौफ सवार हो गया।

घर लौटते हुए पू रे रास्ते मरियम के सहारे झुकी हुई लै ला को अजीजा की तीखी चीखें सु नाई दे ती रहीं। अपने दिमाग में उसने जमान का मोटा गठीला हाथ अजीजा के हाथों के करीब दे खा। उन्हें अजीजा को लै ला से छुड़ाने के लिए खींचते हुए दे खा पहले तो नर्मी से फिर सख़्ती और इसके बाद ताकत से । उसने दे खा कि कोने पर जल्दी से मु ड़ते हुए जमान को अजीजा लात मार रही है जैसे अज़ीजा की चीखें सु नाई दे रही थीं, मानो वो इस धरती से गायब हो रही हो। और लै ला ने खु द को दे खा गलियारे में सिर ताने दौड़ रही थी और उसके गले से चीखें निकल रही थीं।

'मैं उसकी गं ध को महसू स कर सकती हूं' घर पर उसने मरियम को बताया। उसकी आं खें मरियम के कं धों के पार, आं गन के पार दीवारों के पार पहाड़ों की तरफ़ उठीं जो सिगरे ट पीने वालों की थू क की तरह स्याह थे । मैं उसकी नींद की गं ध महसू स कर सकती हूं । आपको क्या आपको भी यह गं ध आ रही है?'

'ओह लै ला जो,' मरियम ने कहा। 'ऐसा मत करो। इससे क्या होगा? क्या भला होगा इससे ?'

पहले पहल रशीद लै ला का दिल बहलाता और उनके उसके, मरियम और जल्लै के- साथ यतीमखाने तक जाता। हालांकि चलते हुए वो यह पक्का कर ले ता कि वो उसकी दर्द में डूबी हुई निगाहों से वकिफ रहे, लै ला ने उस पर जो मुश्किलें डाल दी हैं उन पर उसकी बड़बड़ाहटें सु न पाए, कि कै से यतीमखाने की आवाजाही में उसके पां वुख्द जाते थे । उसने यह सुनिश्चित किया कि लै ला जाने कि कितने बु रे तरीके से वो थक जाता था।

'मैं अब जवान नहीं रहा,' वो कहता। 'ऐसा नहीं है कि तु म परवाह करती हो। अगर तु म्हारे पास उपाय होता तो तु म मु झे कु चल कर चली जातीं। बिना तु म ऐसा नहीं करतीं लै ला। तु म्हारे पास कोई उपाय नहीं है ।

वो यतीमखाने से दो ब्लॉक पहले अलग हो जाते और वो वहां पंद्रह मिनटों से ज़्यादा इं तजार नहीं करता। वो कहता, 'एक मिनट भी दे र हुई तो मैं चल पूंडा। और मैं जो कह रहा हूं वो करूं गा भी।

लै ला उससे मिन्नतें, फरियादें करती रहती कि वो अजीजा के साथ बिताने के लिए कु छ और मिनटों की इजाजत दे दे । अपने लिए और मरियम के लिए, जो अजीजा की गै रमौजू दगी में बहुत उदास हो गई थी, हालांकि हमे शा की तरह मरियम अपना दुख खु द ही चु पचाप सहती रहती थी। और जल्लै के लिए भी, जो हर रोज अपनी बहन को पू छता रहता था और इस कदर चिल्लाता कि कई बार उसे रोने के दौरे पड़ जाते जिनसे पार पाना मुश्किल होता ।

कभी-कभी यतीमखाने के रास्ते में रशीद रुक कर शिकायत करता कि उसके पां व सु न्न हो रहे हैं । फिर वो घू म जाता और घर की तरफ़ लं बे-लं बे क़दम बढ़ाते हुए चलने लगता। तब ऐसा नहीं लगता कि उसके पां व सु न्न हो रहे थे । या फिर अपनी चीख चटकारता और कहता, 'मे रे फे फड़े, लै ला। मे रा दम फू ल रहा है । शायद कल मु झे बे हतर महसू स हो या शायद परसों। हम दे खें गे।' वो एक उखड़ती हुई सां स का दिखावा भी नहीं करता।

अक्सर वो पलट कर ते ज़ते ज़ घर की तरफ़ लौट पड़ता औरसिगरे ट जला ले ता। लै ला को बे चारगी में बे चै नी और गु स्से में कां पते हुए उसके पीछे घर आना पड़ता।

तभी एक दिन उसने लै ला से कहाकि वो अब और उसे ले कर नहीं जाएगा।'पू रेदिन सड़कों पर चल कर मैं थक गया हूं,' वो बोला, 'काम की तलाश करते हुए।'

'तो मैं खु द चली जाऊं गी,'लै ला ने कहा।'तु म मु झे नहीं रोक सकते रशीद । सु ना तु मने?जितना चाहो उतना मु झे मार सकते हो लेकिन मैं जाती रहूं गी।'

'जो तु म चाहो वो करो। लेकिन तु म तलिबान से नहीं बच पाओगी। फिर मत कहना कि मैं ने चे ताया नहीं था।'

'मैं तु म्हारे साथ चलू,ं' मीरियम ने कहा।

लै ला ने इसकी इजाजत नहीं दी।'आपको जल्मै के साथ घर पर रुकना होगा। अगर हम रोकलिए गए... मैं नहीं चाहती कि वो उसकी दे खभाल करे '।

और इस तरह अचानक लै ला कीजिंदगी अजीजा से मिलने के उपाय खोजने केदर्दइगिर्द घू मने लगी। आधे वक़्त तो वो यतीम खाने तक जा ही नहीं पाई। सड़क पार करते हुए उसे कोई तालिबान दे ख ले ता और वो सवालों में उलझ कर रह जाती- तु म्हारा नाम क्या है? तु म कहां जा रही हो? तु म अके ली

क्यों हो? तु म्हारा महरम कहां है?और फिर उसे घर लौटादिया जाता। अगर वो खु शकिस्मत होती तो फटकारा जाता या पीछे एक लात मारी जाती या पीठ पर धक्का देदिया जाता। दूसरे मौक़ों पर उसे लकड़ी के डं डेपे ड़ की ताजी टहनियों, छोटे कोड़ों थप्पड़ों और मु क्कों जै सी चीजों का सामना करना पड़ता ।

एक दिन एक नौजवान तालिब ने लै ला को हिंसा एं टीना से मारा। जब वो मार चु का तो उसने लै ला की गर्दन के पीछे आखिरी धक्का दे ते हुए कहा, 'अगर मैं ने तु म्हें दोबारा दे खा तो इतना पीटूंगा कि तु म्हारी हड्डियों से तु म्हारी मां का खू न बहकर निकले गा।'

इस बार लै ला घर लौटी। पे ट के बल पड़े हुए लै ला को लग रहा था कि वो बे वकू फ़ है, एक दयनीय जानवर है । मरियम उसकी खू न से सनी हुई पीठ और जां घों पर गीला कपड़ा रखती तो वो सिसक उठती। लेकिन अक्सर तै ला टूटने से इन्कार कर दे ती। वो ऐसा दिखाती मानो वो घर लौट रही हो, फिर वो सड़क पर दूसरी तरफ़ चली जाती। कभी कभी वो एक ही दिन में दो, तीन या चार बार पकड़ी जाती, उससे सवाल पू छे जाते, डां टा जाता। फिर कोड़े गिरते और एं टीना हवा को चीरते हुए आते और बिना अज़ीज़ा की झलक पाए, अपने पां व घसीटते हुए, खू न में सनी घर लौटती। जल्दी ही लै ला ने ज़्यादा तहें पहननी शु रू कर, दीं सर्दी में भी वो बुर्के के नीचे दो, तीन स्वे टर पहनती ताकि पिटाई के दौरान चोट से बच सके ।

लेकिन लै ला अगर तलिबान से बचनिकलती तो इसके बाद हासिल तोहफा इन सबके लायक था। वो अज़ीज़ा के साथ जितना चाहे उतना वक़्त गु जार सकती थी, यहां तक कि घं टों भी। वो आं गन में, झू लों के से ट के पास, सारे बच्चों और उनसे मिलने आई मां ओं के साथ बै ठते और इस हफ़्ते अजीजा ने जो सीखा था, उस पर बातें करते ।

अज़ीज़ा ने बताया कि काका ज़मान ने उन लोगों को हर रोज़ पढ़ाने का कायदा बनाया था। ज़्यादातर दिनों में पढ़ना और लिखना, कभी कभी भू गोल, थोड़ा इतिहास या विज्ञान, पे ड़ों और जानवरों के बारे कु छ।

'लेकिन हमें पर्दे गिरा कर रखने होते हैं,' अजीजा ने कहा, 'ताकि तालिबान हमें दे ख न लें।' उसने बताया कि अगर तालिबान जां च-पड़ताल करने आए तो उस मौके के लिए काका जमान के पास बु नाई के कां टे और धागों के

गोले थे । 'हमें किताबें रख कर बु नाई करने का दिखावा करना था।'

एक दिन अजीजा से मिलने के दौरान लै ला नेकर्बु पीछे खोंसे हुए एक अधे ड़ औरत को अपने तीन बे टों और एक बे टी सेमिलते दे खा। लै ला उसका बीमार मुं ह और स्याह बाल नहीं पहचान पाई।किन्तु उसने उसका तीखा चे हरा, भारी भौंहें पहचान लीं। उसे उसकी चादरकाले स्कर्ट, रूखी आवाज याद आ गई। उसे याद आ गया कि कै से वो अपने खू ब काले बालों का इतना कस कर जू ड़ा बनाती।उसकी गर्दन के पीछे आप नन्हें खड़े बालों को दे ख सकते थे । लै ला को उस औरत द्वारा छात्राओं कोर्दो पकरने से मना करना और यह कहना याद आया कि औरतें और मर्द बराबर होते हैं कि अगर मर्द पर्दा नहीं करते तो औरतों के पर्दा करने की कोई वजह नहीं है ।

एकाएक खाला रं गमाल नेनिगाह उठाई और लै ला की नज़र उससेमिली, लेकिन लै ला को अपनी इस पु रानी टीचर कीनिगाह में जान-पहचान की कोई रोशनी नहीं दिखी। खाला की निगाह उस पर पल भर को भी नहीं ठहरी।

'वो धरती की सतह में पड़ी दरारें हैं,' अज़ीज़ा ने कहा। 'उनको फॉल्ट कहते हैं'।

यह जू न, 2001 के एक जु मे कीर्मादोपहर थी। वो चारों-लै ला, जल्मै, मरियम और अज़ीज़ा यतीमखाने के पिछवाड़े में बै ठे हुए थे । रशीद इस बार मान गया था कभी कभार वो मान जाता था और उन चारों के साथ आया था। वो सड़क पर आगे बसस्टॉप के पास इं तज़ार कर रहा था।

नं गे पां व बच्चे उनके आसपास चक्कर रहे थे । बच्चेबिना किसी उत्साह के एकपिचकी हुई फु टबॉल को किक मारते हुए उसके पीछे भाग रहे थे ।

'और दरारों की दूसरी तरफ़ चट्टानों की परतें हैं, जिनसे धरती की सतह बनती है,' अज़ीज़ा कह रही थी।

किसी ने अज़ीज़ा के चे हरे पर से बालों को हटा कर उन्हें सफाई से उसिरके ऊपर करके एकपिन लगा दिया था। लै ला को यह दे ख कर अच्छा लगा कि कौन उसकी बे टी के पीछे बै ठा हो,गा किसने उसके बालों को एक के ऊपर एक सजाया होगा, किसने उसेस्थिर बै ठने को कहा होगा।

अज़ीज़ा अपने हाथ खोले, हथेलियां ऊपर उठाए और उनको एक दूसरे से रगड़ कर कु छ दिखा रही ती। जल्मै पू रे मन से उसे सु न रहा था।

'के क्ट्रनिक प्ले टें, कहते हैं उन्हें।

'टे क्ट्रनिक,' लै ला ने कहा। बात करने पर रुक्ता था। उसका जबड़ा, उसकी पीठ और गर्दन अब भी दुख रहे थे। उसके होंठ सू जे हुए थे और उसकी जीभ उसके सामने के नीचे के दां त की खाली जगह पर जा, रही थी जिसे रशीद ने दो दिन पहले तोड़दिया था। मम्मी और बाबी के मरने और अपनी जिंदगी में उलट-पलट हो जाने के पहले लै ला ने कभी यकीन नहीं किया था कि एक इन्सानी दे ह इतनी पिटाई, ऐसी लगातार हिंसा बर्दाश्त कर सकती है और तब भी काम करते रह सकती है।

'ठीक। और जब वो एक दूसरे से होकर गु ज़रती, हैं तो वो आपस में रगड़ खाती हैं- दे खो मम्मी? और इससे ऊर्जा निकलती है, जो धरती की तह में दौड़ती है और यह डोलने लगती है।

'तु म बहुत समझदार होती जा रही हो,' मरियम ने कहा। 'अपनी बु द्ध खाला से ज़्यादा समझदार'।

अज़ीज़ा का चे हरा चमक उठा और चौड़ा हो गया। 'आप बु द्ध नहीं हैं खाला मरियम। और खाला जमान कहते हैं कि कभी कभी चट्टानें बहुत, बहुत नीचे अपनी जगह बदलती हैं और वहां नीचे इतना ज़ोर का और डरावना होता है, लेकिन हम सतह पर हल्का सा जलजला ही महसू स करते हैं। बस हल्का सा जलजला'।

इससे पहले जब वो मिलने आए थे तो उन्हें हवा में मौजू द उन ऑक्सीजन अणु ओं के बारे में सु नाना था, जो सू रज की रोशनी में से नीले रं ग को बिखे र दे ते हैं। अगर धरती पर हवाएं और गै सें नहीं, तो लीजा ने बिना सां स लिए कहा, तो आसमान नीला नहीं होता बल्कि काला समं दर होता और सू रज अं धे रे में चमकता एक बड़ा सितारा होता।

'इस बार क्या अजीजा हमारे साथ घर चल रही है?' जल्मै ने कहा।'जल्दी ही, मे रे जान,' लै ला ने कहा। 'जल्दी ही।'

लै ला ने उसे जाते हुए दे खा। वो अपने अब्बा की तरह झुक कर, पं जे भीतर की तरफ़ मोड़े हुए चल रहा था। वो झू ले के से ट की तरफ़ गया, खाली सीट धके ली और अख़िर में एक कं क्रीट पर बै ठ गया, जिसकी दरार में घास उगी हुई थी।

पानी पत्तियों पर से उड़ता है।'मम्मी, आप नहीं जानतीं? जै से रस्सी पर

टं गे हुए घु ले कपड़ों से उड़ता है । और इससे पे ड़ों में पानी का बहाव होने लगता है । धरती से जड़ों के ज यह पे ड़ के तने में पहुं चता है, जिससे होकर टहनियों और पत्तियों में जाता है । इसे ट्रांसपिरे शन कहते हैं ।

कई बार लै ला सोचती कि अगर काका ज़मान के खुफ़िया सवकों के बारे में तालिबान को पता लग जाए तो वो उनका क्या करें गे ।

जब वो मिलने आते तो अज़ीज़ा ज़्यादा चु प रहने की इजाजत नहीं दे ती। वो पू रे जोश में बोलती और गू ं जती हुई आवाज़ में बोलती रहती। उसको इन विषयों से बहुत ले ना-दे ना नहीं था और वो बस यों ही अपने हाथ भां जा करती थी। उसके हाथों का हिलाया जाना उसकी अपनी प्रकृति से मे ल नहीं खाता था। उसने एक नई हं सी सीख ली थी। सचमु च में यह उतनी हं सी नहीं थी, जितनी वे उसकी घबराहट की निशानी थी, जिसके बारे में लै ला ने अं दाजा लगाया। वो दरअसल अपना भरोसा जमाए रखने की कोशिश में ऐसा करती है ।

कु छ दू सरे बदलाव भी आए थे । अज़ीज़ा के नाखु नों में मै ल पर लै ला का ध्यान जाता और अज़ीज़ा इस पर गौर करती कि लै ला ने यह दे ख लिया है और फिर अपने हाथों को अपनी जां घों में छु पा ले ती। जब आसपास में कोई बच्चा चिल्लाता, उसकी नाक से रें ट बह रही होती या अगर कोई बच्चा नं गा-धड़ं ग पास से गु ज़र जाता, उसके बाल धू ल में अटे होते तो अज़ीज़ा की सिसकियां जल्दी-जल्दी नाचतीं और फौरन इसकी

वजहें बताने लगती। वो मानो की मे ज़बान थी जो मे हमानों के सामने घर की गं दगी और अपने बच्चों की ज़ाहिर हो जाने से शर्मिंदा थी।

यह पू छने पर कि वो किस तरह यहां रह रही है, वो एक अस्पष्ट लेकिन खु शमिजाजी भरा जवाव दे ती ।

'अच्छे से खाला। मैं अच्छी हूं ।

क्या बच्चे तु म्हें तं ग करते हैं?

नहीं, मम्मी। हरकोई अच्छा है ।

क्या तु म खा रही हो? अच्छे से सो रही हो?

खाना। सोना भी। हां ।पिछली रात हमने भे ड़ का गोश्त खाया। या शायद पिछले हफ्ते ।

जब अजीजा इस तरह बोलती तो लै ला को उसमें मरियम की अच्छी खासी झलक मिलती।

अजीजा अब हकलाने लगी थी। सबसे पहले इस पर मरियम ने गौर किया। यह बहुत हल्का था, लेकिन इस पर ध्यान जाता था। वो सबसे ज़्यादा 't' से शु रू होने वाले शब्दों पर हक़लाती। लै ला ने जजमान को इसके बारे में बताया। उन्होंने भौं चढ़ाई और बोले, 'मु झे लग कि वो हमे शा से एकलाती रही है'।

उस जु मे को वो थोड़ा घू मने के लिए अजीजा के साथ यतीमखाने से निकले और रशीद से मिले, जो बस स्टॉप के पास उनका इं तजार कर रहा था। जल्यै ने जब अपने अब्बा को दे खा तो उसने खु शी से चीख कर कु छ कहा और लै ला की बां हों में कसमसाया। अजीजा शां त भाव से रशीद से मिली, लेकिन इस शांति में विरोध शामिल नहीं था।

रशीद ने कहाकि उन्हें जल्दी चलना चहिए, काम पर लौट जाने के पहले बस उसके पास दो घं टे बचे हुए हैं । इं टरकॉन्टिनें टल में डोरमै न के बतौर यह उसका पहला हफ़्ता था। दोपहर से छह बजे तक उसे हफ़्ते में छह दिन ड्यू टी करनी होती। रशीद कारों के दरवाजे खोलता, सामान ढोता, कई बार कु छ गिर कर बिखर जाता तो वो उसे साफ़ करता। कभी-कभी दिन के अख़िर में रेस्टोरें ट में बफ़े-स्टाइल की दावत के बाद रशीद बचे हुए कु छ खाने के साथ घर लौटता और वो उसके बारे में बात करने से बचता ते ल में तर ठं डे बुर्गे कोफ्ते के भु नी हुई बगलें जिसकी चमड़ी सख़्त और सू खी होती, भरा हुआ पास्ता चीमड़ हो गया होता, कड़े और कं कड़ीले चावल। रशीद ने लै ला से वादा किया कि एक बार वो कु छ पै सों की बचत कर ले तो अजीजा घर आ सकती है ।

रशीद ने अपनी वर्दी पहन रखी थी-एक लाल बरगं डी पॉलिस्टर सू ट, सफ़े द शर्ट, क्लिप-ऑन टाई, विसर टोपी जो उसके सफ़े द बालों पर कस जाती थी। इस वर्दी में रशीद बदल जाता था। वो डरा हुआ, दयनीय रूप से उलझा हुआ, करीब करीब किसी को नु क़सान नहीं पहुं चाने लायक लगता था। वो किसी ऐसे आदमी की तरह हो गया था जिसने विरोध में एक आह तक भरे बिना, अपने सामने रख दी गई जलालत की जिंदगी को अपना लिया था। वो ऐसा आदमी लगता जिसके हार मान कर टूट जाने में बे चारगी भी थी और जो तारीफ के कबिल भी था।

वो बस पकड़ कर टाइटेनिक सिटी गए। वो नदी की पे टी में चले जिसके सू खे हुए किनारों पर दोनों तरफ़ कामचलाऊ दुकानें खड़ी थीं। पु ल के करीब

जब वो सीढ़ियां उतर रहे थे तो नं गे पां वों वाली लाश रेलिंग से लटकी हुई थी, उसके कान कटे हुए थे और रस्सी के एक सिरे पर बं धी हुई थी। नदी में वो ख़रीदारों, पै से बदलने वालों और ऊबे हुए दिख रहे एनजीओ कार्यकर्ताओं, सिगरे ट बे चने वालों और बु में ढं की औरतों की भीड़ में मिल गए, जो लोगों को फर्जी एं टीबायोटिक प्रेस्क्रिप्शन दिखा कर भीख मां ग रही थीं ताकि वो उन्हें खरीद सकें । कोड़े लहराते, नसवार चबाते तालिब टाइटेनिक सिटी में गै रमु सलिम हं सी, और बिना बुर्के वाले चे हरों की ताक में गश्त कर रहे थे ।

पोस्तीन कोट विक्रे ता और एक नकली फू लों की दुकान के बीचखिलौनों के एककियोस्क से जल्मै ने एक रबड़ की बास्के टबॉल चु नीजिस पर पीले-नीले घे रे थे ।

'तु म भी कु छ चु नो,'रशीद ने अज़ीज़ा से कहा।

अज़ीज़ा ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखाई, शर्मिंदगी के साथ जै सी की तै सी बनी रही।

'जल्दी। मु झे घं टे भर में काम पर लौटना' है ।

अज़ीज़ा ने एक गम्बॉल मशीन चु नी इसमें कैं डी पाने केलिए एक सिक्का डालना होता है, और फिर नीचे के फ्लै प डोर से वोसिक्का वापस मिल जाता है ।

लेकिन जब दुकानदार ने कीमत बताई तो रशीद की भौंहे तन गईं। मोलतोल की बकझक का एक दौर चला जिसके अख़िर में रशीद ने अजीजा को लगभग डपटते हुए कहा मानो अज़ीज़ा उसके साथ बकझक कर रही थी, 'लौटा दो। मैं दोनों नहींख़रीद सकता।'

लौटते हुए अज़ीज़ा की ऊपर सेदिखती खु शमिजाज़ी यतीमखाने के करीब जानेजाते मिट गई। उसने हाथों को लहराना बं द करदिया। उसका चे हरा भारी हो गया। हर बार ये होता था। अब लै ला की बारी थीकि वो बातें करती रहे असहजता से भरी हं सी हं,सेउदासी भरी चु प्पी को अनवरत लेकिन बिना मकसद की बातों से तोड़े । इसमें सिम भी उसका साथ दे ती।

बाद में, जब रशीद ने उन्हें पहुं चा कर काम पर जाने केलिए बस पकड़ ली, लै ला ने दे खकि अज़ीजा यतीमखाने केपिछवाड़े में खड़ी दीवार को खु रचती हुई हाथहिला कर विदा कह रही है । उसने अजीज़ा की हक़लाहट के बारे

में सोचा और अजीजा द्वारा बताए गए दरारों और गहराई में होने वाले ताकतवर टकरावों के बारे में सोचा जिसे हम सतह पर बहुत हल्के कं पन के बतौर ही दे ख पाते हैं ।

'चले जाओ!' जल्मै चिल्लाया।

'हुश,' मरियम ने कहा। 'किस पर चिल्ला रहे हो?' उसने हाथ से इशारा किया। 'वहां । वो आदमी।'

लै ला ने उसकी उठी हुई उंगलियों की दिशा में दे खा। घर के दरवाजे के सामने एक आदमी इसके सहारे झुका हुआ था। जब उसने उन लोगों को पास आते दे खा उसने सिर घु माया। उसने बं धी हुई बां हें खोल दीं। लं गड़ाते हुए उनकी तरफ़ एक क़दम बढ़ा।

लै ला रुक गई।

उसके गले से एक घु टी हुई आवाज़ निकली। उसके घु टने की ताकत समाप्त हो गई। एकाएक उसने चाहा, उसे ज़रूरत महसू स हुई कि मरियम की बां हों, उसके कं धों, उसकी कमर या किसी भी चीज़ के सहारे वो टे क लगा सके । लेकिन वो नहीं कर पाई। वो हिम्मत नहीं जु टा पाई। वो एक पे शी हिलाने तक की हिम्मत नहीं जु टा पाई। वो सां स ले ने या यहां तक कि पलकें झपकाने तक की हिम्मत नहीं कर पाई, क्योंकि उसे डर था कि उससे कु छ छू टे गा पर एक मृ गमरीचिका है, एक नाजु क भ्रम है जो हल्की सी हरकत से भी गायब हो जाएगा। लै ला जड़ खड़ी रही और तरिक़ को तब तक दे खती रही जब तक उसके सीने ने जबरन हवा नहीं खींची और जलती हुई आं खों ने झपक नहीं ली। और किसी तरह, जादू से, सां स ले ने के बाद और आं खें खोलने और बं द करने के बाद भी वो वहां खड़ा था। लेकिन अब भी वहां खड़ा था।

लै ला ने खु द को उसकी तरफ़ एक क़दम बढ़ जाने दिया। फिर एक और कदम। और फिर एक और। और फिर वो दौड़ पड़ी।.

तैं तालीस

मरियम

ऊपर मरियम के कमरे में जल्मै बहुत गु स्से में था। कु छ दे र तक वो अपनी नई रबड़ की बास्के टबॉल चारों तरफ़, फर्श पर, दीवारों पर उछालता रहा। मरियम ने उसे ऐसा करने से मनाकिया, लेकिन वो जानती थी उसमें जल्मै को रोक पाने का साहिकार नहीं था और उसने गें द को उछालना जारी रखा। वो मरियम को तौहीन भरी नजरों से दे खता भी रहता। कु छ दे र तक उन्होंने अपनी खिलौना कार चलाई। ये एक एं बु लें स थी जिसके दोनों तरफ़ लालु मोटे शब्दों मेंलिखा हुआ था। वो उसे कमरे में इस पार से उस पार दौड़ाते रहे ।

इसके पहलेु जब वो दरवाजे पर तरिक़ से मिले थे, जल्मै ने अपनी बास्के टबॉल को सीने से चिपका लिया था और अपना अं गू ठा मु ं ह में डालिया था- ऐसा वो सिर्फ तभी करता था, जब उसे कु छ बु रा होने का अं दे शा होता था। वो तरिक़ को सं दे ह से दे ख रहा था।

'ये आदमी कौन है?' अब उसने कहा। 'मु झे वो पसं द नहीं।

मरियम उसे समझाने जा रही थी, इसके बारे में कु छ कहने जा रही थी, वो और लै ला साथ-साथ बड़े हुए थे लेकिन जल्मै ने उसे बीच में ही कदिया और एं बु लें स को उसकी सामने की जाली जल्मै की तरफ़ करके उसे वापस भे जने को कहा। और जबरियम ने ऐसाकिया तो जल्मै ने कहाकि उसे फिर से बास्के टबॉल चहिए।

'कहां है ये?' उसने पू छा।'वो गें द कहां है जो बाबा जान ने मुझेदिलाई

थी? कहां है ये? मु झे चहिए! मु झे चहिए! उसकी आवाज ऊं ची हो रही ती और हर शब्द के साथ तीखी होती जा रही थी।

'ये यही थी,' मरियम बोली और वो चिल्लाया, 'नहीं, ये खो गई है । मैं जानता हूं । मु झे अभी पता तिा वो खो गई है! कहां है ये कहां है?'

'यहां,' अलमारी के नीचे से जहां वो लु ढ़ककर चली गई थी गें द निकालते हुए मरियम ने कहा। लेकिन जल्मै ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहा था और मु क्के चला रहा था और रोते हुए कह रहा थि कि यह वही गें द नहीं है । यह वही नहीं हो सकती क्योंकि उसकी गें द तो खो गई थी और यह नकली वाली गें द है, उसकी असली गें द कहां चली गई? कहां? कहां कहां कहां?

वो तब तक चिल्लाता रहा जब तक लै ला को ऊपर आकर उसे पकड़ कर हिलाना-डुलाना नहीं पड़ा। उसने अपनी उं गलियां उसके कसे हुए काले चु ं वराले बालों में, गीले गालों पर फिराईं और उसके कान में अपनी जीभ चटकारी ।

मरियम कमरे के बाहर इं तज़ार करती रही। सीढ़ियों के ऊपर से उसे दत्त तारिक़ के लं बे पां व दिख रहे थे, उसका एक असली पां व और दूसरा नकली पां व, और उनके ऊपर पहनी खाकी पैं ट। उसके पां बिना दरी बाली बै ठक की फ़र्श पर फै ले हुए थे । तब उसे यह समझ में आया कि जब वो जलील को फोन करने के लिए उस दिन रशीद के साथ कॉन्टिनें टल होटल गई थी तो डोरमै न का चे हरा जाना-पहचाना क्यों लग रहा था। उसने टोपी और चश्मा पहन रखे थे इसलिए वो तब समझ नहीं पाई थी। लेकिन अब मरियम को नौ वरस पहले नीचे बै ठक में उस आदमी का रूमाल से अपनी भौंहें पोंछना और पानी मां गना याद आया। अब उसके दिमाग में हर तरह के सवाल उठे : क्या सु ल्फासिगरेटें भी नाटक का हिस्सा थीं। किसने झू ठ बोला था, कायल कर दे ने वाले ब्योरे दिए थे? और रशीद ने अं बुजा शरीफ को-अगर सचमु च ये उसी का नाम हो-कितने पै से दिए थे ताकि वो तारिक़ की मौत की कहानी मु ना कर लै ला को तोड़ सके?

चवालीस

लै ला

तारिक़ ने बताया कि उसके साथ कोठरी में रहे लोगों में से एक के चचेरे भाई को एक बार फ्लेमिंगो (मराल पक्षियों) की तस्वीरें बनाने के लिए सरे आम कोड़े लगाए गए थे। उसे इन चिड़ियों के लिए एक लाइलाज लगाव था।

'पूरी स्के चबुक में,' तारिक़ ने बताया। 'उनकी दर्जनों आयल पेंटिंग्स थीं। झीलों में टहलते हुए, दलदल में धूप से कते हुए और शायद सूरज के डूबने के दौरान उड़ाने भरते हुए भी।

'फ्लमिंगो,' लै ला ने कहा। वो दीवार के सहारे टेक लगाए अपना अच्छा पांव घुटनों से मोड़ कर बैठे हुए तारिक़ को देख रही थी। उसमें तारिक़ को फिर से छूना चाह रही थी, जैसा कि इसके पहले उसने सदर दरवाज़े के पास उसे छुआ था, जब वो उसके पास दौड़ी हुई गई थी। अब वो यह सोच सोच कर शर्मिंदा हो रही थी कि कैसे उसने अपनी बांहें उसके गले में डाल दी थीं और उसके सीने में रोई थी। कैसे उसने लड़खड़ाती हुई मोटी आवाज़ में उसने बार बार उसका नाम लिया था। उसे जानने का मन किया कि क्या उसने कुछ ज़्यादा ही बे करारी और सिरासा ज़ाहिर की थी? शायद उसने ऐसा किया था। लेकिन वो इससे बच नहीं सकती थी। और अब वो फिर से उसे छूने को तरस रही थी ताकि खुद को फिर से यकीन दिला सके कि वो सचमुच वहां मौजूद थी, कि वो एक सपना, एक परछाई नहीं था।

'सचमुच,' तारिक़ कह रहा था। 'फ्लमिंगो।'

तारिक़ ने बताया कि जब तालिबान को उसकी तस्वीरें मिलीं तो उन्होंने चिड़िया के लंबे और नंगे पांवों को अपमानजनक माना। तब उन्होंने चचेरे भाई के पैरों को बांध कर उसके तलवे के खून से लथपथ होने तक

कोड़े लगाए, उन्होंने कहा कि वो इन दो रास्तों में से चु न सकता है या तो वो अपनी तस्वीरों को नष्ट कर दे या फिर फ्लमिंगो को तहजीब वाला बनाए। तब चचे रे भाई ने बश उठाई और हर चिड़िया के पै रों के ऊपर पजामे बनादिए।

'और फिर इस्लामी चिड़ियाएं बन गईं' तारिक ने कहा।

लै ला को हं सी आई लेकिन उसने उसे दबादिया। उसे अपने पीले पड़े दां तों और हुए सामने के दां त पर शर्म आ रही थी। उसे अपने मु रझाए हुए चे हरे और सू जे हुए होंठों पर शर्म आ रही थी। उसने चाहा कि उसे चे हरा घोने या कम से कम बालों में कं घी कर ले ने का ही मौका मिला होता।

'लेकिन आख़िरी हं सी उस चचे रे भाई की होगी' तारिक़ ने कहा। 'उसने पजामे वाटरकलर से बनाए। जब तालिबान चले जाएं गे तो वो बस उन्हें धो दे गा।' वो मु स्कु राया। लै ला ने गौर किया कि तारिक़ का भी एक दां त गायब था और उसने उसके हाथों की तरफ़ दे खा।

'सचमु च ।'

उसने सिर पर एक पकोल पहन रखी थी, पै रों में हाइकिंग बू ट थे और उसकी खाकी पैं ट की कमर में एक काला ऊनी स्वे टर बं धा हुआ था। वो हल्के से मु स्कु रा रहा था और धीरे धीरे हिला रहा था। लै ला को याद नहीं आया कि पहले भी उसने यह सचमु च शब्द कभी कहा था। उसे उसका यह उदास हाव भाव, गोद में तं बू की तरह तनी हुई उं गलियां, सिर का हिलाना भी याद नहीं आया। यह सब नया था। एक ऐसा परिपक्व शब्द, ऐसा परिपक्व हाव भाव, और इसे इतना स्तब्धकारी क्यों होना चहिए? तारिक अब एक बालिग था। पच्चीस साल का आदमी जिसकी हरकतों में धीमापन और मु स्कान में थकान भरी हुई थी। लं बा, दाढ़ीवाला और लै ला के सपनों से ज़्यादा पतला लेकिन मज़बू त हाथों वाला, एक मे हनती इन्सान के हाथ जिसमें घु मावदार, भरीपू री नसें थीं। उसका चे हरा अब भी पतला और खू बसू रत था लेकिन उसकी चमड़ी अब गोरी नहीं रह गई थी। उसके ललाट पर मौसम की मार के, धू प से जले के निशान थे । ऐसे ही निशान उसकी गर्दन पर भी थे । उसका पकोल सिर पर पीछे की ओर खिसका हुआ था और लै ला दे ख सकती थी कि उसके बालगिरने शु रू

हो गए थे । लै ला को जितना याद था, उसके मु काबले उसकी आं खों का भू रापन अब फीका, ज़्यादा उदास या शायद कमरे में रोशनी जै सा था।

लै ला ने तारिक़ की अम्मी, उनके इत्मीनान से भरे तौर-तरीकों, उनकी समझदार मु स्कु राहट, उनके फीके जामु नी विग के बारे में सोचा। और तारिक़ के अब्बा के बारे में भी सोचा, उनकी भें गी निगाह, उनकी मज़ाकिया हसी के बारे में सोचा। थोड़ी दे र पहले के वेरवाज़े पर आं सु ओं से भरी आवाज़, सें ड़खड़ाते हुए शब्दों में उसने तारिक़ को बताया कि उसके अम्मी अब्बू के साथ क्या हुआ होगा, उसने इसके बारे में क्या सोचा था। और तारिक़ ने अपना सिर झटका था। इसलिए उसने अब पू छा कि उसके अम्मी-अब्बू कै से हैं । किंतु वो पछताई, जब तारिक़ ने निगाहें नीची कर लीं और थोड़े अनमने ढं ग से कु लमु ज़र गए ।

'मु झे अफसोस है' ।

'खै र। हां । मैं भी। लो' उसने अपनी जे ब से एक छोटा सा काग़ज़ का थै ला निकाला और उसे दे दिया। 'अल्योना की तरफ़ से बधाइयां '। भीतर प्लास्टिक में लिपटी हुई पनीर का एक टुकड़ा था।

'अल्योना। एक प्यारा नाम है ।' लै ला ने आगे की बात बिना हिचकिचाए कहने की कोशिश की। 'तु म्हारी बीवी ?'

'मे री बकरी।' वो इस तरह मु स्कु रा रहा था मानो उसे इसकी आशा थी, मानो वो इं तज़ार कर रहा हो कि लै ला कोई बात याद कर सके ।

और तब लै ला को याद आया। एक सोवियत फ़िल्म । अल्योना कै प्टन की बे टी थी। वो लड़की जिसने पहले मे ट से प्यार किया था। ये वो दिन था जब उसने, तारिक़ और हसीना ने सोवियत टैं कों और जीपों को काबु ल छोड़ते दे खा था, वो दिन जब तारिक़ ने अजीब सी रूसी फर की टोपी पहनी थी।

'मु झे उसे ज़मीन पर खूं टे से बां धना पड़ा,' वह आदमी बता रहा था। 'और भेड़ियों की वजह से एक बाड़ बनानी पड़ी। पहाड़ियों के नीचे, जहां मैं रहता हूं, वहां से करीब-करीब चौथाई मील दूर जं गली इलाका है। ज़्यादातर चीड़ के पे ड़ हैं, कुछ फर और दे वदार हैं। इसलिए ज़्यादातर तो जं गलों में ही रहते हैं, लेकिन मिमियाती हुई बकरियां और घू मना-फिरना पसं द करने वाली बकरियां भेड़ियों को बाहर खींच सकती हैं। इसलिए बाड़ बनाई। खूं टा गाड़ा।'

लै ला ने पू छा कि वो किन पहाड़ियों के नीचे रहता है।

'पीर पं जाल, पाकिस्तान,' उसने बताया। 'मैं जहां रहता हूं वो जगह मु रीं

कही जाती है। गर्मियों में रहने की जगह है, इस्लामाबाद से घं टे भर की दूरी पर है। यह समु द्र तल से ऊपर पहाड़ी और हरीभरी जगह है जहां ढे र सारे पे ड़ हैं। इसलिए यह गर्मियों में ठं डी रहती है। सै लानियों के लिए सबसे अच्छी जे ह है।'

उसने बताया कि ब्रिटिशों ने इसे अपने रावलपिंडी के फौजी मु ख्यालय के नज़दीक एक हिल स्टे शन के रूप में बनाया था, ताकि विक्टोरियाई लोग गर्मी से भाग कर शरण ले सकें। तारिक ने बताया कि तु म वहां अब भी औपनिवेशिक दौर के कु छ बचे-खु चे निशान दे ख सकती हो, कभी कभार के चायखानों में टिन की छतों वाले बं गले, जिन्हें कॉटे ज कहा जाता है, ऐसी ही चीज़ें। खु द शहर ही छोटा और खु शनु मा था। मु ख्य सड़क मॉल कही जाती थी, जहां डाकघर, बाज़ार, कु छ रे स्टोरें ट और दु कानें थीं, जो सै लानियों से रं गे हुए गिलासों और हाथ से बु नी दरियों के लिए कई गु ना ऊं चे दाम वसू ल करतीं।

अजीब था कि मॉल वनवे ट्रैफिक वाली सड़क था, जिस पर एक हफ़्ते एकदिशा में ट्रैफिक चलता और अगले हफ़्ते दूसरी दिशा में।

'मु कामी लोग बताते हैंकि आयरलैं ड में भी कई जगहों पर ऐसी ही ट्रिक व्यवस्था है,' तारिक़ ने बताया। 'मैं नहीं जानता। जो भी हो, यह प्यारा है । यह एक सादीज़िंदगी है, लेकिन मु झे पसं द है । मु झे वहां रहना पसं द है '।

'अपनी बकरी के साथ, अल्योना के साथ।'

लै ला का इरादा गु पचु प तरीके से बातचीत के एकसिलसिले में दाखिल होने का था, जै सेकि वहां उसके साथ भेड़ियों द्वारा बकरियों के खाने कीचिंता करने वाला और कौन था। लेकिन तारिक के वलसिर हिलाता रहा।

'मु झे तु म्हारे अम्मीब्बू केलिए भी अफसोस है,' तारिक़ ने कहा।

'तु मने सु ना' ।

'मैं ने कु छ पड़ोसियो से पहले बात की थी,' उसने कहा। एक पल की चु प्पीजिसके दौरान लै ला को है रानी हुई कि पड़ोसियों ने उसे क्या बताया होगा।'मैं किसी को पहचान नहीं पाया। मे रा मतलब हैकि पु राने दिनों का कोई नहीं था।

'वो सब चले गए। कोई ऐसा नहीं बचाजिसे तु म जानते थे ।

'मैं काबु ल को पहचान नहीं पाया'।

'मैं भी नहीं,' लै ला ने कहा।'और मैं कभी यहां से नहीं गई।

'मम्मी का एक नया दोस्त है,' जल्मै ने तारिक़ के चले जाने पर उसी रात खाने के बाद कहा।एक मर्द ।'

रशीद ने निगाह उठाई। 'उसका दोस्त है?'

तारिक़ ने पू छकि क्या वो सिगरे ट पी सकता है ।

तारिक़ ने एक कटोरी में राख झाड़ते हुए बतायकि वो पे शावर के करीब नसिर बाग रिफ्यू जी कैं प में कु छ वक़्त के लिए ठहरे थे । जब वो और उसके अम्मी-अब्बू पहुं चे तो वहां साठ हज़ार अफ़ग़ान पहले से ही रह रहे थे ।

'यह जलोज़ई जै से दूसरे कैं पोंउनसे खु दा बचाए,जितना बु रा नहीं था' उसने कहा। 'एक बार तो मैं ने अं दाज़ा लगायाकि यह एक तरह का मॉडल कैं प था। शीत यु द्ध केदिनों में यह एक ऐसी जगह था, जिसे दिखा कर पश्चिमी दे श यह सबित करते कि वो अफ़ग़ानिस्तान में के वल हथियारों की खे प ही नहीं भे ज रहे थे ।

लेकिन वह सोवियत जं ग के दौरान हुआ करता था,तारिक़ ने बताया, जिहाद के दिनों में जब पू री दुनिया की दिलचस्पी यहां थी। वो खु ले हाथों फं ड दे ने और मारग्रे ट थै चर के दिनों में थे ।

'बाक़ी तु म जानती हो लै ला। जं ग के बाद सोवियत बिखर गया और पश्चिम ने मुं ह फेरलिया। अफ़ग़ानिस्तान में अब उनका कु छ भी दां व पर नहीं लगा था और रकम ख़त्म हो गई। अब नासिर बाग में बस तं बू धू ल और खु ले सीवर भर हैं । जब हम वहां पहुं चे तो उन्होंने हमें एक छड़ी और कै नवस की एक चादर पकड़ाई और हमसे कहाकि हम खु द तं बू बना लें ।

तारिक ने उसे वह बात बताई जो उसे नसिर बाग के बारे में सबसे ज़्यादा याद आती थी, कहां वो एक बरस रहा था। यह भू रा रं ग था।'भू रे तं बु । भू रे लोग। भू रे कु त्तेऔर भू री।'

वहां एक ठूंठ था, जिस पर वो रोज़ चढ़ा करता था। वहां वो एक शाखा के दोनों तरफ़ पां व फै ला कर बै ठ जाता और धू प में ले टे शरणार्थियों को दे खा करता। उनके जख्म औरूंठ साफ़दिखते । वो नन्हें कमज़ोर बच्चों को जे री कै नों में पानी ढोते,आग जलाने केलिए कु त्ते की लीद को जमा करते,भोथरी छुरियों से लकड़ी के एक-47 बनाते, आटे की बोरियां घसीटते

दे खता । शरणार्थी कस्बे में चारों तरफ़ हवा तं बु ओं को फड़फड़ाती हर जगह घास-पतवार के टुकड़े उड़ाती, मिट्टी की झोंपड़ियों की छतों पर से उड़ाई जाती पतं गों को ऊं चा उठाती ।

'ढे र सारे बच्चे मर गए। चिंश, टीबी, भू खकु छ भी कह लो। ज़्यादातर तो पेंचिश से । उफ खु दा लै ला। मैं ने इतने सारे बच्चों को दफनाए जाते दे खा। दे खनेलिए इससे बदतर चीज़ कोई नहीं होगी।

उसने अपने पां व मोड़े । कु छ दे र तक खामोशी रही।

'मे रे अब्बा वो पहली सर्दियां नहीं पार कर पाए' उसने कहा। 'वो सोते हुए ही मर गए। मु झे नहीं लगता कि उन्हें कोई दर्द हुआ था।'

उसने बताया कि उन्हीं सर्दियों में उसकी अम्मी को न्यू मोनिया हो गया और वो लगभग म ही गईं, वो मर ही जातीं अगर शिविर का एक कैं प डॉक्टर नहीं होता, जिसने एकस्टे शन वै गन को मोबाइल क्लिनिक बना रखा. था। वो सारी रात जगी रहतीं, बु खार में तपती हुईं गाढ़ा, गहरा लाल बलगम फें कती रहतीं। तरिक़ ने बताया कि डॉक्टर से मिलने की कतारें लं बी हुआ करती थीं। कतार में खड़ा हर कोई कां पता रहता कराहता, खां सता, कु छ के पां वों पर पाखाना बहता रहता, कु छ दूसरे इतने थके हुए या भू खे या बीमार होते कि कु छ बोल नहीं पाते ।

'लेकिन वो डॉक्टर एक भला आदमी था। उसने मे री अम्मी की अच्छे से दे खभाल, की उन्हें कु छ दवाएं दीं और उन सर्दियों में उनकी जान बचा ली।' ठीक उन्हीं सर्दियों में तरिक़ ने एक बच्चे पर धौंस जमाई।

'बारह या शायद ते रह साल का होगा,' उसने सपाट तरीके से कहा। 'मैं ने शीशे का एक टुकड़ा उसके गले पर रखा और उसकी कं बल उससे छीन ली। उसे मैं ने अपनी अम्मी को दिया।

तारिक़ ने कहाकि अम्मी की बीमारी के बाद उसने खु द से कसम खाईकि वो अगली सर्दियां शिविर में नहीं गु ज़ारें गे । वो काम करे, गा पै से बचाएगा और वो पे शावर के एक अर्पीमें ट में चले आएं, जोहां गर्माहट और साफ़ पानी होगा। जब बसं त आया तो उसने काम की तलाश की। समयसमय पर एक ट्रक सु बहसु बह शिविर में आता था और दोएक दर्जन बच्चों को बटोर कर पत्थर हटाने या बागीचों में से ब चु नने लिए ले जाता था। इसके बदले में छोटी सी रकमिलती, कभी कभी एक कं बल या जू तों का एक

जोड़ा। तारिक़ ने बतायाकि वो उसे नहीं चाहते थे ।

'मे रे पां व पसिगाह डालते और बातख़त्म हो जाती।'

कु छ दूसरे काम भी थे । गड्ढे खोदना, झोंपड़ियां बनाना, पानी ढोना, आउटहाउस में से फावड़े से पाखाना निकालना। लेकिन बड़े लोग इन कामों केलिए एक दूसरे से झगड़ते रहते औरतिक़ को कभी मौक़ा ही नहीं मिला।

तभी एक दिन उसकी भें ट एक दुकानदार से हुई। वह1993 का पतझड़ का मौसम था।

'उसने चमड़े का एक कोट लाहौर पहुं चाने लिए मु झे रकम की पे शकश की। रकम ज़्यादा नहीं लेकिन काफ़ी थी। एक या शायद दो महीनों के अपार्टमें ट केकिराए के लिए काफ़ी थी।'

तारिक़ ने बतायाकि दुकानदार ने उसे एक बसटिकट और लाहौर रे लवेस्टे शन के करीब एक नु क्कड़ का पता दिया, जहां उसे दुकानदार के एक दोस्त को वह कोट पहुं चाना था।

'मैं पहले से ही जानता था। बे शर्मैं जानता था,' तारिक़ ने कहा। 'उसने मु झसे कहाकि अगर मैं पकड़ा जाता हूं तो यह मे री अपनीज़िम्मे दारी होगी, कि मु झे यह याद रखना चहिए कि वो जानता था कि मे री

अम्मी कहां रहती हैं । लेकिन रकम इतनी अच्छी थी कि ये सब बातें बे असर रहीं। और चीज़ें फिर से आ रही थीं।'

'तु मकितनी दूर तक गए?' लै ला ने पू छा।

'बहुत दूर नहीं,' उसने हं सते हुए कहा। उसकी आवाज़ में माफ़ी और शर्मिंदगी का पु ट था। 'बस पर भी कभी नहीं चढ़ पाया। लेकिन मैं सोचता थाकि मैं सुरक्षित था, महफू ज़ था। मानो वहां कहीं कोई एकाउं टें ट,था एक ऐसा आदमी जो अपने कानों के पीछे पेंसिल खोंसे रहता और इन सारी चीज़ों काहिसाब-किताब रखता, चीज़ों को मिलाता और नीचे दे खते हुए कहता,हां, हां, उसे येमिल सकता है, हम उसे जाने दे सकते हैं । इस आदमी ने पहले ही बकाए का भु गतान कर दिया है ।

सिलाइयों के नीचे हशीश थी और जब पुलिस ने कोट में ु ली मारी तो वह पू री सड़क परबिखर गई।

तारिक फिर से हं सा जब उसने यह कहा। यह एक ऊं ची हो,तहिला

दे ने वाली हं सी थी और लै ला को याद आया कि जब वो छोटे थे तो वो शर्मिंदगी को ढं कने केलिए और अपनी वे वकू फ़ी भरे कारनामों को हल्का करने केलिए कै से हं सा करता था।

'वो लं गड़ा है,' जल्यै ने कहा।

'क्या ये वही है, जिसके बारे में मैं सोच रहा?' 'हूंवो के वलमिलने आया था,' मरियम नें कहा।

'तु म चु प रहो,' रशीद ने तड़कते हुए एक उं गली उठाई। वो लै ला की तरफ़ मु ड़ा। 'अच्छा, तु म क्या जानती हो? लै ला और मजनूं का फिर से मिलन । पु राने ज़माने की तरह।' उसका चे हरा पत्थर की तरह हो गया। 'तो तु मने उसे भीतर आने दिया। यहां । मे रे घर में । तु मने उसे भीतर आने दिया। वो यहां मे रे बे टे के साथ'था।

'तु मने मु झे ठगा। तु मने मु झसे झू ठ' बौला ने अपने दांकिटकिटाते हुए कहा। 'तु मने एक आदमी को भे जा जिसने मे रे सामने बै ठक़सु म जानते थेकि अगर मु झे लगे गकि वो जिंदा था तो मैं चली जाऊं गी'।

'और तु म मु झसे झू ठ नहीं बोल सकतीं' शीद गरजा। 'तु मने सोचकि मु झे पता नहीं लगे गा तु म्हारे हरामी के बारे में? तु मने मु झे बे वकू फ़ स मझा ?'

तारिक़ जितना ही बातें करता, लै ला को उस पल का उतना ही डर लगता जब वो चु प हो जाएगा। उसके बाद आने वाली चु प्पी इस बात का सं के त होगी कि अब ब्योरे दे ने की बारी लै ला की है । उसे अपनी आपबीती बतानी होगी । जिन बातों को यकीनन वो पहले से ही जानता था, उनकी पुष्टि करनी होगी। जब वो रुका तो लै ला को लगाकि वो अचे त हो जाएगी। उसने अपनी आं खें फे र ली थीं। वो नीचे उसके हाथों को दे ख रही थी, उसके बिखरे हुए, काले बालों को जो इन बीच के बरसों में उन हाथों के पीछे उग आए थे ।

तारिक़ ने जे ल में बिताए दिनों के बारे में बहुत कु छ नहीं कहा। बस उसने यही बताकि वहां उसने उर्दू बोलना सीख लिया था। जब लै ला ने पू छा तो उसने बे चै नी से अपना सिर झटक दिया। इस इशारे में लै ला ने जं ग लगी सलाखें और बिना नहाई हुई दे हों, हिंसक आदमियों और भरे हुए हॉलों

और बे कार की चीज़ों के साथ सड़ती हुई छतों को दे खा। उसने उसके चे हरे में कि वह जलालत, पतन और निराशा से भरी हुई जगह थी।

तारिक़ ने कहाकि उसकी अम्मी ने उसकी गिरफ्तारी के बाद उससे मिलने की कोशिश की थी।

'वो तीन बार आईं। लेकिन मैं कभी उनसे मिल नहीं पाया,' उसने कहा ।

उसने उन्हें एक चिट्ठी लिखी और उसके बाद कु छ और चिट्ठियां । यहां तक कि उसे सं दे ह हुआ कि वो उनको मिलती भी थीं या नहीं।

'और मैं ने तु मको लिखा ।'

"तु मने लिखा ?'

'ओह, ढे रों' उसने कहा। 'तु म्हारे दोस्त रूमी मे री लिखाई से जल मरते ।'

वो फिर से हं सा। इस बार गरजदार हं सी मानो वो अपनी बे बाकी से स्तब्ध था और उसने जो किया था उससे शर्मिंदा था।

ऊपर जल्मै फिर गें द मारने लगा था।

'तो पु रानेदिनों की ही तरह, रशीद ने कहा ।'तु म दोनों। मु झे अं दाज़ा है कि तु मने उसे अपनी सू रत भी दिखाई होगी।'

'उन्होंने दिखाई,' जल्मै ने कहा। इसके बाद लै ला से बोला 'आपने किया था मम्मी, मैं ने आपको ऐसा करते दे खा था।'

'तु म्हारे बे टे को मे री उतनी परवाह नहीं है' लै ला ऊपर से लौटी तो तरीक़ ने कहा।

'मु झे अफसोस है' उसने कहा। 'यह बात नहीं है । वो बस.. छोड़ उसे ।' फिर उसने जल्दी से बात बदल दी क्योंकि जल्मै के बारे में इस तरह सोचना उसे परे शान कर रहा था और वो कसू रवार महसू स कर रही थी। क्योंकि जल्मै एक बच्चा था, नन्हा सा बच्चा जो अपने अब्बा से प्यार करता था और इस अजनबी के लि उसका सहज विरोध समझ में आने लायक और जायज़ था।

और मैं ने तु मको लिखा।

ढे रों।

'तु म मुर्री में कितने समय से हो'

'एक साल से भी कम समय से' तारिक़ ने कहा।

उसने बताया कि जे ल में वो एक बू ढ़े से मिला। सलीम नाम का यह आदमी पाकिस्तानी था और कभी का फील्ड हॉकी खिलाड़ी था। जे ल में उसका आना जाना लगा रहता था और अभी एक पुलिया पुलिस को चाकू मारने के इल्ज़ाम में दस बरसों से सजा काट रहा था। हर जे ल में सलीम जै से लोगों से तारिक़ ने बताया। हमे शा ही कोई न कोई चालाक और रसू ख वाला इं सान होता था जो व्यवस्था को चलाता था और तु म्हें चीजें मु हैया कराता, पैसे के आस पास मौक़े और जोखिम हर वक़्त मं डराया करते थे । ये सलीम ही थे जिन्होंने अम्मी के बारे में सच के सवालों को बाहर भे जा। ये सलीम ही थेजिन्होंने उसे बै ठा कर मम्मी, अब्बाओं जै से लहजे में उसे बताया कि वो सर्दी लगने से मर गई थीं।

तारिक़ ने पकिस्तानी जे ल में सात बरस बिताए। 'मैं आसानी से छू ट गया,' उसने कहा। 'मैं खु शकिस्मत था। यह पता लगा कि मे रे मामले की सु नवाई कर रहे जज के भाई की बीवी एक अफ़ग़ानी औरत थी। हो सकता है कि उसने रहमदिली दिखाई हो। मैं नहीं जानता।'

जब तारिक़ की सज़ा ख़त्म हुई तो 2000 की सर्दियों का शु रुआती वक़्त था। सलीम ने अपने भाई का पता और फोन नं बर उसे दिया। उसके भाई का नाम सईद था।

'उन्होंने कहा कि सलीम का मुर्री में एक होटल है' तारिक़ ने बताया । 'बीस कमरे और एक लाउं ज। ये सै लानियों के ठहरने की एक छोटी सी जगह है । उन्होंने कहा कि उसे बताना कि तु म्हें मैं ने भे जा है ।

तारिक़ को बस से उतरते ही सर्दी पसं द आ गई। इसके बर्फ़ से लदे हुए सनोबर, ठं डी, साफ़ हवा, बं द शटरों वाले लकड़ी के कॉटेज, चिमनियों से गोल-गोल ऊपर उठता धु आं ।

सईद का दरवाज़ा खटखटाते हुए तारिक़ सोच रहा था कि ये वो जगह है जहां उसकी अब तक की जानी पहचानी बदहाली की दुनिया की कोई जगह नहीं बल्कि यहां तो मुश्किलों और गम भी फू हड़ लगते हैं और उनकी कल्पना 'भी नहीं की जा सकती।

'मैं ने खु द से कहा कि ये ऐसी जगह है जहां आदमी कामयाब हो सकता है ।

तारित को इमारत की दे खभाल करने और छोटे-मोटे मरम्मत के कामों के लिए रख लिया गया। उसने बताया कि उसने आधी तनख्वाह वाले एक महीने के ट्रायल के दौरान अच्छा काम किया, जिसका जिम्मा सईद ने उसे दिया था। तारिक़ के बोलने में लै ला सईद को दे खती, जिनके बारे में उसने कल्पना की कि वो पतली आं खों और लाल चे हरे वाले इं सान, थी। से प्शन ऑफिस की खिड़की के पास खड़े होकर वो तारिक़ को लकड़ियां काटते और राहदरी पर से फावड़े के रिए बर्फ हटाते दे ख रहे थे । उसने उन्हें रिक्ता के पै रों पर झुकते हुए दे खा। जब तारिक़ सिंक के नीचे चू रहे पाइप की मरम्मत कर रहा था। उन्हें गायब हो गई नकदी के लिए रजिस्टरों की जां च करते दे खा ।

तारिक्त ने बताया कि उसकी कोठरी रसोइए के छोटे बं गले की बगल में थी। रसोइया एक मे ट्रनु मा उम्रदराज़ बे वा थी, जिसका नाम अदीबा था। दोनों कोठरियां होटल से अलग थीं और उनको बादाम के पे ड़ों का एक झुं ड, एक पार्क बें च और पिरामिड की शक्ल का एक फव्वारा मु ख्य इमारत से अलग करता था, जो गर्मियों में पू रे दिन पानी उड़ाता रहता था। लै ला ने कोठरी में तारिक़ की कल्पना की जो अपने बिस्तर पर बै ठा हुआ खिड़की से बाहर के पत्तियों से भरी दुनिया को दे ख रहा था।

ग्रे स पीरियड के अखिर में सईद ने तारिक़ की तन्खवाह पू री कर दी और उससे कहा कि उसे दोपहर के खाने के पै से नहीं दे ने होंगे । उन्होंने उसे एक ऊनी कोट और एक नया दिया। जब तारिक़ ने बताया कि वो उस आदमी की दयाशीलता पर रो पड़ा था।

अपनी पहली पू री तनख्वाह जे ब मेंलिए तारिक़ शहर गया और अल्योना खरीद लाया।

'उसके बाल कमाल के सफ़े द,हैंतारिक़ ने मु स्कु राते हुए कहाकु छ सु बहों मेंजब सारी रात बर्फ़ पड़ी हो, खिड़की से बाहर दे खने पर उसकी बस दो आं खें और थू थनदिखाई देती है ।

लै ला नेसिर हिलाया। फौरन एक और खामोशी उनके बीच आकर बै ठ गई। ऊपर जल्मैंफिर से दीवारों पर गें द मारने लगा था।

'मु झे लगाकि तु म मर गए थे' लै ला ने कहा।

'मु झे पत्ता है । तु मने मु झे बताया।

लै ला की आवाज़ टू ट गई। उसे अपना गला साफ़ करना पड़ा, हिम्मत

जु टानी पड़ी। 'जो आदमी ख़बर दे ने आया था वो इतना सं जीदा श्ा मैं ने उस पर भरोसा करलिया, तारिक़। मैं ने चाहाकि मैं न करूं, लेकिन मैं नेकिया। और तब मु झे लगाकि मैं इतनी अके ली औरबिखरी हुई हूं । वरना मैं रशीद से शादी करने को राजी नहीं हुई होती। मैं नहीं हुई होती।

'तु म्हें ऐसी बात करने की ज़रूरत नहीं,हैउसने नर्मी से, उसकी आं खों में दे खने से बचते हुए कहा। उसने यह बात जै से कहीउसमें कोई छुपी हुई नाराज़गी और तोहमत नहीं थी। कसू रवार ठहराने का कोईनिशान नहीं था।

'लेकिन मैं कहूं गी। क्योंकि उससे शादी करने की इससे भी एक बड़ी वजह थी। ये एक ऐसी बात, हैजिसे तु म नहीं जानते, तारिक़। कोई है । मु झे तु म्हें बताना होगा।

'क्या उसके साथ तु मने भी बै ठ कर बातें ?' रशीद ने जल्मै से पू छा।

जल्मै ने कु छ नहीं कहा। लै ला ने अब उसकी आं खों में झांक और असमं जस दे खी। मानो उसे यह बात समझ में आ गई थी कि उसने जो बात खोल दी थी वो उसके ख्यालों से कहीं ज़्यादा बड़ी निकल रही थी।

'मैं ने तु मसे एक सवाल किया है, लड़के !'

जल्मै ने थू क निगली। उसकी निगाह अस्थिर थी। 'मैं ऊपर मरियम के साथ खे ल रहा था'।

'और तु म्हारी अम्मी?'

जल्मै ने रोने-रोने को होते हुए, माफ़ी मां गती हुई नज़र से लै ला की तरफ़ दे खा ।

'ठीक है जल्मै' लै ला ने कहा। 'सच कह दो।'

'वो... वो नीचे उस आदमी से बातें कर रही थीं' उसने पतली आवाज़ में कहा, जिसे एक फु सफु साहट से भी मुश्किल से ही ऊं ची थी।

'मैं समझता हूं' रशीद ने कहा। 'मिलाजु ला काम। टीमवर्क ।'

जाते वक़्त तरिक़ ने कहा, 'मैं उससे मिलना चाहता हूं । मैं उसे दे खना चाहता हूं।' 'मैं इसका इं तज़ाम करूं गी' लै ला ने कहा।

'अज़ीज़ा। अज़ीज़ा।' वो शब्दों के मज़े ले ता हुआ मु स्कु राया। जब रशीद उसकी बे टी का नाम ले ता था तो लै ला को वो बु ज़ुर्ग लगभग फू हड़ लगता था।

'अजीज़ा। यह प्यारा है ।'

'जितनी प्यारी वो है । दे ख ले ना।

उन्होंने अख़िरी बार जब एक दूसरे को दे खा था तब से दस बरस बीत चु के थे । लै ला के मन में हर वक़्त गली में उनकामिलना और छुप कर चू मना घु मड़ता रहता था। उसे जानने का मन कर रहा थाकि वो अब उसको कै सी लग रही थी। क्या वो उसे अब भी प्यारी लग रही थी? या क्या वो उसे बू ढ़ीघिस गई, दयनीय लग रही थी मानो एक डरी हुई अकड़ी हुई उम्र दराज़ औरत हो ? लगभग दस बरस । लेकिन एक पल के लिए वहां धू प में तारिक़ के साथ खड़े रहना ऐसा था मानो ये बरस बीते नहीं हों। उसके अम्मी-बू की मौतें, रशीद से उसकी शादी, हत्याएं, यहां तक के उसके बच्चे-ये सारा कु छ एक सपने की तरह लगे।एक अजीब से लं बे सफ़र जै सा,मानो वो पिछली दोपहर के उनके साथ और इस पल के बीच का एक छोटा सा अं तराल भर थे ।

तब तारिक़ का चे हरा बदल कर गं भीर हो गया। वो इस भाव को जानती थी। ये वही भाव थाजो उस दिन उसके चे हरे पर थाइतने बरसों पहले उस वक़्त जब वो दोनों बच्चे हुआ करते, सबसे वो अपना पां व खोल कर खादिम की तरफ़ दौड़ा था। अब उसने एक हाथ आगे बढ़ाया और लै ला केनिचले होंठ का कोना छू लिया।

'उसने तु म्हारे साथ यहींकिया,' उसने सर्द आवाज़ में कहा।

इस छुअन के साथ ही लै ला को उस दोपहर का पागलपन याद आया,जिस दिन उसकी कोख में लै ला आई थी। लै ला के गले पर उसकी सां सें,तारिक़ के कू ल्हे कीमांसपेशियों का फड़कना, उसकी छातियों पर उसका दबाव, एक दूसरे में गुं थे हुए उनके हाथ ।

'मैं चाहता हूंकि काश तु म्हें अपने साथ ले जा पाता,'तारिक़ लगभग फु सफु साया ।

लै ला ने रोने से बचने कीकोशिश में अपनीनिगाह नीचे कर ली।

'मैं जानता हूंकि तु म अब एक शादीशु दा औरत और एक मां हो। औरूसकी तरफ़ मैं इतने बरसों के बा,द इतने सारे हादसों के बाद तु म्हारे दरवाज़े पर खड़ा हूं । शायद यहसिु नना जायज़ नहीं है, लेकिन मैं इतनी दूर तु म्हें दे खने आया हूं ,औरओह, लै ला, मैं चाहता हूंकि मैं तु म्हें छोड़ कर कभी नहीं जाऊं ।

'ऐसा मत कहो,' वो भर्राए गले से बोली ।

'मु झे और सख़्त कोशिश करनी चाहिए थी। जब मे रे पास मौक़ा था तो तु मसे शादी कर ले नीहिया थी। तब हर चीज़ अलग होती।'

'ऐसी बातें मत करो। मे हरबानी करके । इससेदर्दहोता है ।

उसने सिर हिलाया और उसकी तरफ़ क़दम बढ़ाया। फिर खु द को रोकलिया। 'मैं किसी चीज़ का अं दाज़ा नहीं लगाना चाहता। और मैं इस तरह हवा में से यहां तु म्हारे सामने आकर तुज़िंदगी में उथलपु थल नहीं लाना चाहता । अगर तु म चाहती होकि मैं चला जाऊं, अगर तु म चाहती होकि मैं पकिस्तान लौट जाऊं तो एक बार कह दो लै ला। मैं सच कह रहा हूं । कह दो और मैं चला जाऊं गा। मैं किुम्हें से परे शान नहीं करूं गा। मैं चला जाऊं गा

'नहीं!' लै ला ने इतनी ते ज़ी से कहकिजितना उसका इरादा नहीं था। उसने पायाकि उसने उसके हाथों को उसकी तरफ़ हाथ बढ़ा दिया है, कि वो उसके हाथों को पकड़ रही है । उसने अपना हाथ नीचे करलिया। 'नहीं। मत जाओ, तारिक़। नहीं। मे हरबानी करके रुक जाओ '।

तारिक़ ने सिर हिलाया।

'वो दोपहर से आठ बजे तक काम करते हैं । कल दोपहर बाद आना।

मैं तु म्हें अज़ीज़ा के पास ले चलूं गी।

-'मु झे रशीद का डर नहीं है,तु म्हें पता है'।

'मैं जानती हूं। कल दोपहर बाद आना'।

'और फिर ?'

'और फिर... मैं नहीं जानती। मु झे सोचना होगा। .ये'

'मैं जानता हूंकि ये है' उसने कहा।'मैं समझता हूं। मु झे अफसोस है। मु झे काफ़ी सारी चीज़ोंलिये अफसोस है।

'अफसोस मत करो। तु मने वादाकिया था कि तु म आओगे। और तु म आए हो।

उसकी आं खें भींग गईं।'तु म्हें दे ख कर अच्छा लग़ाले ला।

लै ला ने अपनी जगह कां पते हुए खड़े, उसे दू जाते दे खा। उसने सोचा,दो रों पत्र और उस पर डर की एक और लहर दौड़ गई, उदासी और दृख की एक लहर, लेकिन साथ ही कु छ बे चै न और बे करार उम्मीद भी थी।

पैं तालीस

मरियम

'मैं ऊपर मरियम के साथ खे ल रहा था' जल्मै ने कहा।

'और तु म्हारी अम्मी?'

'वो... वो नीचे उस आदमी से बातें कर रही थीं।' 'समझ गया,' रशीदू ने कहा। 'सबकी मिलीभगत ।'

मरियम ने उसके चे हरे को सु कू न से भर कर ढीला पड़े हुए दे खा। उसने साफ़ साफ़ उसकी ललाट की तहें दे खीं। उसकी आं खों से सं दे ह और परे शानी ग़ायब हो चुकी थी। वो तन कर बै ठा था और थोड़ी सी दे र के लिए वो महज सोचता हुआ-सा दिखा, मानो एक जहाज़ के कप्तान को अभी अभी हुए गदर की खबर दी गई हो और वो अपने अगले क़दम के बारे में सोच-विचार रहा हो।

उसने निगाह उठाई।

मरियम ने कु छ कहना शु रू किया लेकिन उसने हाथ उठाया और उसे दे खते हुए बोला, 'बहुत दे र हो गई है मरियम।'

जल्मै से उसने बहुत धीमी आवाज़ में कहा, 'तु म ऊपर जाओ लड़के।' जल्मै के चे हरे पर मरियम ने खतरे के सं के त दे खे । वो असहज रूप से उन तीनों को दे ख रहा था। उसे महसू स हुआ कि उसकी चु प्पी ने कमरे में एक गं भीर शक्ल अख्तियार कर ली है, बहुत गं भीर। उसने खिसियाई हुई-सी, अफसोसनाक निगाह से पहले मरियम और फिर अपनी अम्मी को दे खा।

ललकारती हुई आवाज़ में रशीद ने कहा, 'अभी!'

उसने जल्मै को कोहनी से पकड़ा। जल्मै ने चु पचाप खु द को ऊपर ले आने दिया।

मरियम और लै ला ज़मीन में आं खें गाड़े जड़वत खड़े रहे। उनका एक दूसरे को दे ख ले ना रशीद के नज़रिए को मज़बू त करे गा कि जब वो ऐसे लोगों के लिए दरवाज़े खोल रहा था और उनका सामान घसीट रहा था, जो उसकी तरफ़ निगाह उठा कर दे खते भी नहीं हैं तो उसकी पीठ पीछे, उसके अपने ही घर में उसके प्यारे बे टे की मौजू दगी में एक अश्लील साज़िश चल रही थी। उन दोनों में से कोई कु छ भी नहीं बोला। वो ऊपर गलियारे में कदमों की आहटें सु न रही थीं। यह भारी और अपशगु न से भरी हुई आहट थी। दूसरी आवाज़ एक चं चल नन्हें जानवर के बड़बड़ाने की आवाज़ थी। उन्होंने घु टती आवाजें, चिंचियाती हुई फरियाद, रू खा जवाब, दरवाज़े का बं द होना, चाबी घू मने की करकराती हुई आवाज़ सु नी। फिर एक जोड़ी लौटते हुए पां वों की आहट। जो अब ज़्यादा बे सब्र लग रही थी।

मरियम ने सीढ़ियों पर धमधम करते हुए नीचे आते पां वों को दे खा । उसने रशीद को चाबी को जे ब में रखते दे खा, उसकी बे ल्ट दे खी जिसका छे दों वाला हिस्सा उसकी मुट्ठी के चारों तरफ़ लिपटा हुआ था। उसके पीछे लटक रहा नकली पीतल का बकल हर क़दम पर उछल रहा था।

वो उसे रोकने के लिए आगे बढ़ी, लेकिन रशीद ने उसे पीछे धके ल दिया और उसकी बगल से ते ज़ी से आगे बढ़ गया। बिना कु छ कहे उसने लै ला पर बे ल्ट घु माई। यह उसने ऐसी ते ज़ी से किया कि लै ला के पास पीछे हटने या रुक पाने या अपने बचाव में हाथ उठा पाने का कोई मौक़ा नहीं था। लै ला ने अपनी कनपटी पर उं गली फिराई और भौंचक होकर खू न को और रशीद को दे खा। गै रयकीनी की यह निगाह बस एक या दो पलों के लिए ही रही, जिसकी जगह नफ़रत से भरी हुई किसी चीज़ ने ले ली।

रशीद ने फिर से बे ल्ट घु माई।

इस बार लै ला ने खु द को हाथ के अगले हिस्से ढं का और बे ल्ट को पकड़ने की कोशिश की। उससे बे ल्ट छू छ गई और रशीद ने फिर से बे ल्ट घु माई। लै ला ने इस बार बे ल्ट को पकड़ लिया, लेकिन रशीद ने झटक कर बे ल्ट खींच ली और उस पर फिर से वार किया। इसके बाद लै ला कमरे में

भाग रही थी और मरियम चिल्लाते हुए रशीद से फ़रियादें कर रही थी, जो लै ला का पीछा कर रहा था और उसका रास्ता रोक कर अपनी बे ल्ट उस पर फटकार रहा था। एक मौके पर लै ला ने झुककर वार बचा लिया और किसी तरह रशीद की कान के ऊपर एक घूं सा जमाया, जिस पर उसने गाली दी और पहले से ज़्यादा बे चै नी से उसका पीछा करने लगा। उसने लै ला को पकड़ लिया, उसे दीवार से लगा कर बे ल्ट से बार बार उसे मारने लगा। बकल उसे सीने के धे उसकी उठी हुई बां ह, उसकी उं गलियों पर चोट कर रहा था और जहां भी पड़ता था, खू न निकाल ले रहा था।

मरियम भू ल गई कि कितनी बार बे ल्ट ने वार किया था, कितनी बार रोते हुए उसने रशीद से फ़रियादें कीं, कितनी बार वो दां तों और मु क्कों और बे ल्ट के बे मे ल झड़प के चारों ओर मं डराई हिंसा के बाद जाकर उसने रशीद के चे हरे को नोचती हुई नाखूनों को दे खा। टूटे हुए नाखु न जबड़ों को खरोंच रहे थे, उसके बाल खींच रहे थे और उसकी ललाट को नोच रहे थे । यह समझने में कितना वक़्त लगा कि वो उं गलियां उसकी अपनी थीं, और वो इससे है रान भी थी और खु श भी।

रशीद ने लै ला को छोड़ दिया और उसकी तरफ़ मु ड़ा। पहले तो उसने मरियम को दे खे बिना उसकी तरफ़ निगाह डाली, फिर उसकी आं खें सिकु ड़ीं, तसल्ली से मरियम का जायजा लिया। मरियम को उनमें पल भर के लिए उलझन दिखी जो है रानी में, फिर नापसं दीदगी में, यहां तक कि निराशा में बदल रही थी।

मरियम ने उस पहले मौक़े को याद किया जब उसने ये आं खें दे खी थीं। जलील निगाहों के नीचे, शादी के बुके के भीतर, शीशे में कै से उन दोनों की निगाहें शीशे में फिसलीं और एक दूसरे से मिलीं। रशीद की बे रुखी से भरी आं खें और मरियम की डरी हुई, झुकी हुई और करीब करीब शर्मिंदा आं खें ।

शर्मिंदा ।

मरियम ने अब उन्हीं आं खों में दे खा कि वो कितनी बे वकू फ़ हुआ करती थी।

क्या वो एक धोखे बाज़ बीवी थी? उसने खु द से पू छा। एक आत्मसं तु ष्ट बीवी के लज्जाजनक औरत ? मर्यादाहीन? फू हड़? उसने इस आदमी का जानबू झ कर क्या नु क़सान किया था जो वो इस तरह जलता था, लगातार

हमले करता था, उसको सताने में उसे आनं द आता था. जब रशीद बीमार था तो क्या उसने उसकी दे खरे ख नहीं की? उसे और उसके दोस्तों को खिलाया नहीं, एक फर्ज़ की तरह उसकी चीज़ों की साफ़-सफाई नहीं की?

क्या उसने इस मर्द को अपनी जवानी नहीं दे दी थी?

क्या वो न्यायोचित रूप से कभी इस नीचता के लायक थी?

रशीद ने जब बे ल्ट ज़मीन पर गिराई तो उसकी धप से आवाज़ आई। इस धप ने बताया कि कु छ काम खाली हाथों से किए जाने लायक होते हैं ।

लेकिन वो ज्यों ही उसकी तरफ़ झुका, मरियम ने उसके पीछे लै ला को दे खा जो ज़मीन पर से कु छ उठा रही थी। उसने लै ला का हाथ सिर के ऊपर उठते मु ड़ते और रशीद के चे हरे की बग़ल में घू मते हुए दे खा। शीशा बिखरा । पानी पीने के गिलास के टू टे हुए नु कीले टु कड़े ज़मीन पर बरसे । लै ला के हाथों पर खू न लगा था रशीद के गाल में बने घाव से खू न बह रहा था उसकी गर्दन से खू न निकल रहा था और उसकी कमीज़ पर खू न था। वो दां त पीसते हुए और जलती हुई आं खों के साथ पीछे मु ड़ा।

रशीद और लै ला एक दूसरे को पीटते हुए ज़मीन पर ढह पड़े । अगले पल में रशीद ऊपर था और उसके हाथ लै ला के गले पर कस चु के थे ।

मरियम ने उस पर नाखु नों से हमला किया। उसने उसके सीने पर मारा। उसने को पू री ताकत लगा कर धक्का दिया। वो लै ला की गर्दन पर कसी उं गलियों को खोलने के लिए जू झती रही। उसने दां त गड़ाए। लेकिन उसने लै ला की सां स की नली को कसे रखा और मरियम ने दे खा कि उसका इरादा इसे अं जाम तक पहुं चाने का था।

वो उसे गला घोंट कर मार दे ना चाहता उन दोनों के पास इसमें करने लिए कोई उपाय नहीं था।

मरियम पीछे हटी कमरे से बाहर निकल गई। वो ऊपर पां वों की धमक के प्रति सचे त थी, वो तालाबं द दरवाज़े पर बजती उन नन्हीं हथेलियों को ले कर सचे त थी। उसने सितारा पार किया। सदर दरवाज़े से होकर गु जरी। उसने आं गन को पार किया।

औजारों के छप्पर से उसने फावड़ा उठाया।

रशीद ने उसके कमरे में वापस आने पर गौर नहीं किया। वो अब भी लै ला के ऊपर झुकी हुई पागल आं खें लिए बै ठा था और उसके हाथों ने लै ला

की गर्दन कस रखी थी। लै ला का चे हरा अब नीला पड़ रहा था और उसकी आं खें पलट गई थीं। मरियम ने दे खा कि अब लै ला जू झ नहीं रही थी। वो उसे मार डालने जा रहा है, उसने सोचा। सचमु च उसका यही इरादा है । और मरियम ऐसा नहीं होने दे सकती। ऐसा नहीं होने दे गी। शादी के इन सत्ताईस बरसों में रशीद ने मरियम से बहुत कु छ छीना है । वो उसे लै ला को छीनते हुए नहीं दे खे गी।

मरियम ने अपने पै रों को मज़बूत किया और फावड़े के हत्थे पर अपनी पकड़ को मज़बूत किया। उसने उसे ऊपर उठाया। उसने यह नाम पु कारा। वो चाहती थी कि वो यह दे खे ।

'रशीद !'

रशीद ने ऊपर दे खा ।

मरियम ने हमला किया।

उसने रशीद की कनपटी पर चोट की थी। धक्के ने उसे लै ला पर गिरा दिया।

रशीद ने हथे ली से अपना सिर छुआ। उसने अपनी उं गलियों के पोरों पर खू न को दे खा और फिर मरियम पर निगाह डाली। मरियम को ऐसा लगा कि उसने रशीद के चे हरे को गिनपड़ते दे खा है । उसने कल्पना की कि उनके बीच कु छ गु ज़रा, है कि शायद उसने सचमु च में उसके दिमाग में कु छ समझदारी पर दस्तक दी है । मरियम को लगा कि शायद रशीद ने भी मरियम के चे हरे में कु छ दे खा, कु छ ऐसा जिसकी वजह से वो पीछे हट गया। शायद उसने आत्मत्याग के निशान दे खे हों सारी कुर्बानियां, उसके साथ इन सारे बरसों में रहने के लिए अपनी जिंदगी पर थोपे गए बोझ को दे खा हो लगातार नीचा दिखाए जाते रहने और हिंसा से भरी जिंदगी, मीनमे खनिकालने और नीचता से भरी जिंदगी। क्या यही सम्मान मरियम ने उसकी आं खों में दे खा था? पछतावा ?

लेकिन तब रशीद का ऊपरी होंठ एक द्वे ष से भरी हुई हं सी में मु ड़ा और मरियम तब इसे पू रा नहीं कर पाने की गलती को जान गई, जो उसे गैरज़िम्मे दारी भी महसू स हुई। अगर उसने रशीद को अब खड़ा हो दिया तो रशीद को जे ब से चाबी निकाल कर उस कमरे में जाने में जहां उसने जल्मै को बं द कर रखा, और चाबं दू क निकाल कर लाने में कितना वक़्त लगे गा? अगर मरियम को इसका यकीन होता कि रशीद सिर्फ मरियम को गोली मार तक सं तोष कर

ले गा कि इसकी सं भावना है कि वो लै ला को छोड़ दे गा तो वो फावड़ा नीचे कर ले ती। कि न रशीद की आं खों में उसने दोनों की मौत दे खी।

और इसलिए मरियम ने फावड़ा ऊपर उठाया, इतना ऊपर उठाया जितना वो उठा सकती थी। उसे इतना ताना कि वो उसकी पीठ से हल्के से ने छ लगा। उत्ते ने उसे घु मा दिया ताकि नु कीला सिरा सामने रहे और ऐसा करते हुए उसने जाना कि पहली बार वो अपनी जिंदगी का रास्ता खु द तय कर रही है ।

और इसके साथ मरियम ने फावड़े से चोट की। इस वार उसके पास जितनी ताकत थी, उसने लगा दी थी।

छियालीस

लै ला

लै ला अपने ऊपर ुझे चे हरे क्रसारे दां तों और तं बाकू और अपशगु न से भरी आं खों को जानती थी। उसे हल्का-हल्का मरियम का भी भान था, जो उस चे हरे के पीछे मौजू द थी औ िसकी मुट्ठियां बरस रही थीं। उनके ऊपर छत थी और यह छत ही थी जिसकी तरफ़ लै ला का ध्यान गया था। उस पर आस्पार फै ले सां चे का गहरा निशान था मानो कपड़े पर स्याही हो। प्लास्टर में दरार थी जो एक भावहीन मु स्कान या घु ड़की थी। यह इस परनिर्भर करता था कि आप कमरे केकिस कोने से उसे दे ख रहे हैं । लै ला हर वक़्त सोचा करती कि वो झाड़ू में कपड़े का ुकड़ा बां ध कर मकड़ियों का जाला साफ़ कर दे गी। तीन बार उसने और मरियम ने उन पर सफ़े दी की थी। अब वो दरार मु स्कान नहीं बल्कि चिढ़ाती हुई कनखी बन गई थी। और वो अब धुं धली पड़ रही थी। छत सिकु ड़ रही थी, उठ रही थी, उससे दू ऊपर किसी धुं धलके की तरफ़ जा रही थी। यो तब तक ऊपर उठती रही जब तक वो डाक टिकट के आकार की नहीं रह गई, सफ़े द और चमकदार । उसके चारों ओर की हर चीज़ कोबिखरे हुए अं धे रे ने सोख लिया था। अं धे रे में रशीद का चे हरा धू प के ुकड़े जै सा था।

अब अं धा कर दे ने वाली रोशनी के ुकड़े उसकी आं खों के सामने, थोड़ा-थोड़ा चां दी केसितारें फू ट रहे हों। रोशनी में अजीबोगरीब ज्यमितीय आकृतियां, कीड़े, अं डे की शक्ल जै सी चीजें बन रही थीं, ऊपर-नीचे, अगल-बगल आ-जा

रही थीं, एक दूसरे में मिल जा रही थीं, बिखर रही थीं, मिल कर कोई दूसरी चीज़ बना रही थीं, फिर फीकी पड़ती हुई अं धे रे में गु म हो जा रही थीं।

आवाजें घु टी-घु टी थीं और दू से आ रही थीं।

उसकी आं खों की पु तलियों के पीछे उसके बच्चों के चे हरे जगमगा रहे धे मीर धुं धले पड़ते जा रहे थे। चौकन्नी और बोझिल, जानकार और राज़ों को छुपाने वाली अज़ीज़ा। एक कां पती हुई बे करारी के साथ अपने अब्बा की और दे खते हुए जल्मै ।

लै ला ने सोचा कि तब इसी तरह अं त आ जाएगा। कितना दयनीय अं त

लेकिन तभी अं धे रा छं टने लगा। उसे महसू स हुआ वो उठा रही है, उसे उठाया जा रहा है । धीरे धीरे छत वापस लौट आई, फै ल गई और अब लै ला उसकी दरार को फिर से दे ख सकती थी। और यह वही पु रानी उदास मु स्कु राहट थी।

उसे हिलाया जा रहा था। क्या तु म ठीक हो? जवाब दो, क्या तु म ठीक हो? मरियम का खरोंचों से भरा और फिक्र से बोझिल चे हरा लै ला के ऊपर झुका हुआ था।

लै ला ने सां स ले ने की कोशिश की। इससे उसका गला जलने लगा। उसने फिर से कोशिश की। इस बार पहले से भी ज़्यादा जलन हुई और सिर्फ़ उसका गला ही नहीं, सीना भी। और फिर वो खां सने लगी और ज़ोर ज़ोर से सां स ते ने लगी। वो हां फ रही थी किन्तु सां सें ले रही थी। उसका अच्छा कान बजा।

उठ कर बै ठने पर जो पहली चीज़ उसने दे खी यो रशीद था। वो पीठ के बल पड़ा हुआ था। बिना पलकें झपकाए घू र रहा था, पर कु छ दे ख नहीं रहा था। उसके होंठ गोताकु ड़े हुए थे । उसके मुं ह से हल्के गु लाबे रं ग का झाग निकल कर उसके गालों पर बह गया था। उसकी पैं ट के सामने का हिस्सा गीला था। ले ला की निगाह उसकी ललाट पर पड़ी।

फिर उसने फावड़ा दे खा।

उसकी कराह निकल गई। 'ओह,' उसने कां पते हुए कहा। वो महज़ इतना

ही कह पाई, 'ओह मरियम ।'

कराहती और अपने हाथों को एक दूसरे पर मारते हुए लै ला ते ज़ी से चल रही थी, जबकि मरियम रशीद के करीव अपने हाथों को अपनी गोद में रखे हुए शां त और बिना हिले-डुले बै ठी रही। दे र तक मरियम ने कु छ भी नहीं कहा ।

लै ला का मुं ह सू ख गया था और वो हक़ला कर वोल रही थी। वो बु री तरह कां प रही थी। उसने मन से चाहा कि वो रशीद की तरफ़, उसके खु ले हुए मुं ह की तरफ़, उसकी खु ली हुई आं खों, कॉलर वोन के गड्ढे में जमे खू न की तरफ़ नहीं दे खे ।

बाहर रोशनी मं द पड़ रही थी। परछाइयां गहरा रही थीं। मरियम का चे हरा इस रोशनी में पतला और मुर्झाया सा दिख रहा था, लेकिन वो उत्तेजित या डरी हुई नहीं दिख रही थी। वो बस फिक्रमं द थी, सोच रही थी, अपने में इस कदर डूबी हुई कि जब एक मक्खी उसकी ठोढ़ी पर बै ठी तो उसने इस पर ध्यान नहीं दिया। वो वस वहां बै ठी रही। उसका निचला होंठ बाहर निकला हुआ था और वो ऐसा तब करती थी जब वो ख़यालों में डूबी होती थी।

आख़िर में मरियम ने कहा, 'बै ठ जाओ, लै ला जो।'

लै ला उसकी वात मानते हुए बै ठ गई।

'हमें इसे हटाना होगा। जल्मै इसे दे ख नहीं सकता।

रशीद को विछाने के चादर में लपे टने से पहले मरियम ने उसकी जे ब से सोने के कमरे की चाबी निकाल ली थी। लै ला ने घु टनों के नीचे उसके पै र पकड़े और मरियम ने उसके हाथों को पकड़ा। उन्होंने उसे उठाने की कोशिश की, लेकिन वो वहुत भारी था उन्हें उसे घसीटना पड़ा। जब वो सदर दरवाज़े से गु ज़र रही थीं और आं गन में जा रही थीं तो रशीद का पां व चौखट में फं स गया और उसकी टां ग बगल से मु ड़ गई। वो पीछे हटीं और उन्होंने फिर से कोशिश की। ऊपर कु छ धमक की आवाज़ आई और लै ला के पां वों ने जवाब दे

दिया। रशीद उससे छूट गया। कंधे झुकाए वो ज़मीन पर बैठ गई। वो सुबकती हुई कांप रही थी और मरियम को अपने कूल्हों पर हाथ रखे हुए उसके पास खड़े होकर कहना पड़ा उसे हिम्मत जुटानी होगी। कि जो हो चुका वो हो चुका ।

कुछ देर बाद लैला उठी और उसने अपना चेहरा पोंछा। अगला किसी दूसरी घटना के वो रशीद को आंगन तक ले गईं। वो उसको औज़ारों वाले

छप्पर में ले गईं। उन्होंने उसे काम करने की एक बेंच पर छोड़ा। उस पर उसकी आरी, कुछ कीलें, एक छेनी, एक हथौड़ी और बेलन जैसा लकड़ी का एक टुकड़ा था, जिससे रशीद जल्मै के लिए कोई चीज़ बनाने वाला था, लेकिन कभी नहीं बना पाया।

फिर वो वापस लौटीं। मरियम ने अपने हाथ धोए, उन्हें बालों में फिराया, गहरी सांस ली और छोड़ी। 'अब तुम अपने जख्मों की देखभाल करने दो। तुम्हारे हर जगह जख्म हैं लाजो।'

मरियम ने कहा कि उसे चीज़ों के बारे में सोचने के लिए उस रात की ज़रूरत है । ताकि वो अपने ख्यालों को जुटा सके और कोई मंसूबा बना सके ।

'एक उपाय है,' उसने कहा। 'और बस मुझे उसे खोजना है ।

'हमें जाना पड़ेगा। हम यहां नहीं रह सकते,' लैला ने एकदम टूटी हुई, सूखी-सी आवाज़ में कहा। अचानक उसने उस आवाज़ के बारे में सोचा जो रशीद के सिर पर लगते फावड़े ने पैदा की होगी और इस पर लैला का शरीर आगे को झुक गया। उसके सीने में जलन होने लगी

मरियम ने लैला के वापस ठीक होने तक इंतज़ार किया। इसके बाद उसने लैला को लिटा दिया और उसके सिर को अपनी गोद में रखते हुए मरियम ने कहा कि फिक्र करने की बात नहीं है कि सब ठीक होगा। उसने कहा कि वो चली जाएंगी वो लैला, बच्चे और तारिक़ भी। वो इस घर को, इस निर्मम शहर को छोड़ देंगे ।

मरियम ने उसके बालों में उंगलियां फिराते हुए कहा कि वो इस उदास दे श को ही छोड़ दें गे और कहीं ऐसी महफू ज जगह चले जाएं गे जहां कोई उन्हें ढूंढ नहीं पाएगा, जहां वो अपने अतीत को भु ला कर पनाह खोज सकें गे ।

'ऐसी जगह जहां पे ड़ हों,' उसने कहा। 'हां । खू ब सारे पे ड़।

मरियम ने कहा कि वो किसी ऐसे शहर के सिरे पर एक छोटे से घर में रहेंगी, जिसका नाम भी उन्होंने नहीं सु ना था, या फिर वो दूर-दराज़ के किसी गां व में जहां सड़कें पतली और कच्ची होंगी। उन के दोनों तरफ़ सारी किस्मों के पे ड़ों और झाड़ियों की कतारें होंगी। शायद वहां कोई राह होगी, ऐसी राह होगी जो घास के मै दानों तक ले जाएगी, जहां बच्चे खे ल सकें, या बजरी की सड़क होगी जो उन्हें एक साफ़ नीली झील तक ले जाएगी, जहां ट्राउट मछलियां तै र रही होंगी और सतह से नरकट झां क रहे होंगे । वो भे ड़ें पालेंगी, मु

पालें गी और मिल कर रोटियां बनाएं गी और बच्चों को पढ़ना सिखाएं गी। वो अपने लिए नई जिंदगियां बनाएं गी सु कू न से भरी अके ली जिंदगियां और उन्होंने अब तक जो कु छ भी सहा, वो उसका बोझ उन पर से उतर जाएगा और बो उन सारी खुशियों और सादगी भरी समृद्धि के लायक होंगी, जिन्हें वो अपने लिए तलाशें गी।

लै ला हौसला बढ़ाती हुई बु दबु दाती रही। वो दे ख रही थी कि यह मुश्किलों से भरी जिंदगी होगी, लेकिन यह खुशियां दे ने वाली होगी, जिन मुश्किलों पर वो नाज़ कर सकें गी, उन्हें अपना सकें गी, उनका मोल कर सकें गी, मानो वो खानदान से विरासत में मिली चीज़ हो। मरियम की नर्म, मां जै सी आवाज़ जारी रही लै ला को राहत से भरती रही। एक उपाय है । उसने कहा था और सवे रे यही काम बताने वाली थी कि क्या करना है और वो इसे करें गी और हो सकता है कि कल इस वक़्त वो इस नई जिंदगी की राह पर होंगी। एक ऐसी ज़िंदगी जो सं भावनाओं और खुशियों और खु शनु मा परे शानियों से भरपू र होगी। लै ला इसके लिए शुक्रगु ज़ार थी कि मरियम प्रभारी थी, जो सु लझी हुई और गं भीर थी, उन दोनों के लिए सोच पाने में सक्षम थी। उसका अपना दिमाग तो घबराया हुआ, अव्यवस्थित-सा था।

मरियम उठी। 'अब तु म्हें अपने बे टे को दे खना हिचाहिए।' उसके चे हरे पर व्यथा का ऐसा भाव शायद ही लै ला ने कभी किसी इं सानी चे हरे पर नहीं दे खा था।

लै ला को वो अं धे रे में रशीद के गद्दे की सिलवट कर ले टा हुआ मिला। वो उसकी बगल में चादर के नीचे सरक आई और कं बल उसके ऊपर खींच लिया।

'क्या तु म सो रहे हो?'

बिना उसकी तरफ़ मु ं ह किए उसने कहा, 'अभी नहीं सो सकता। अभी बाबा जान ने मे रे साथ बबलु आयतें नहीं पढ़ी हैं।'

'आज की रात शायद मैं ये आयतें तु म्हारे साथ पढ़ सकती हूं।

'तु म उस तरह नहीं पढ़ सकतीं, जिस तरह वो पढ़ सकते हैं'।

उसने उसके नन्हें कं धे भींच लिए। उसकी गर्दन के पीछे चू म लिया।

'मैं कोशिश कर सकती हूं।'

'बाबा जान कहां हैं?'

था। 'बाबा जान चले गए' लै ला ने कहा। उसका गला फिर से रुं ध रहा

और पहली बार एक बड़ा, भयानक झू ठ बोला गया। और कितनी बार इस झू ठ को बोलना होगा? लै ला ने दुखी होते हुए सोचा। और कितनी बार जल्मै को धोखा दिया जाएगा? उसने खु शी से मगन जल्मै की

कल्पना की, जब रशीद के घर लौटने पर वो उसके स्वागत में दौड़ पड़ता था और रशीद उसे कंधों से उठा ले ता और गोल गोल घु माने लगता, जब तक कि जल्मै के सीधे तने हुए पां व हवा में उड़ने नहीं लगते। इसके बाद दोनों खिलखिलाते जब जल्मै एक नशे में झू मते आदमी की तरह लड़खड़ाता। उसने उनके उत्पाती खे लों, उपद्रव से भरी हं सी और रुकिया निगाहों के बारे में सोचा।

अपने बे टे के लिए शर्म और दुख का एक बादल लै ला पर टू ट पड़ा।

'वो कहां चले गए?'

'मु झे नहीं पता, मे रे प्यारे'।

वो कब लौटने वाले थे, क्या बाबा जान जब लौटें गे तो उसके लिए तोहफा लाएं गे?

लै ला ने जल्मै के साथ इक्कीस बार सात आयतें मां गी। इक्कीस बार बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम-सात उं गलियों के हरे क जोड़ों पर एक एक बार। उसने उसे अपने चे हरे के सामने हथेलियों को जोड़ा और उनमें दम फूं कते दे, ख़त्म के बाद जल्मै ने अपने दोनों हाथों को उलट कर ललाट पर रखा और भगाने के सं किस और बु दबु दाया, बबलू, चले जाओ, जल्मै के लिए मत आना, उसका तु म्हारे साथ कोई ले ना दे ना नहीं है। बबलू, चले जाओ। इसके बाद ख़त्म करते हुए उन्होंने तीन बार अल्लाहो अकबर कहा। और बाद में, उस रात, बहुत बाद में लै ला एक दबी हुई आवाज़ को सु न कर है रान रह गई क्या बाबा जान मे री वजह से चले गए? आपके और नीचे आए उस आदमी के बारे में मैं ने उनसे जो कहा था उसकी वजह से चले गए

उसे तसल्ली दिलाने और यह कहने के इरादे से वो उसके ऊपर झुकी कि इसमें तु मने कु छ नहीं किया है, जल्मै। नहीं। तु म्हारा कोई कसू र नहीं है। लेकिन वो सो रहा था, उसका नन्हा सीना उठ रहा था, गिर रहा था।

लै ला जब बिस्तर पर गई तो उसका दिमाग दबा हुआ, असमं जस में था और किसी तर्क संगत तरीके से सोच पाने के काबिल नहीं था। लेकिन जब वो नमाज

के लिए पु कारते मु ज़्ज़िन की आवाज़ से उठी तो ज़्यादातर उदासी जा चु की थी।

वो उठ बै ठी और कु छ दे र जल्मै को अपनी ठोढ़ी के नीचे रखे सोते हुए दे खती रही। लै ला मरियम की कल्पना की कि जब वो सो रहे थे तो वो बीच रात में उनके कमरे में चु पचाप आई थी और उन्हें दे खते हुए अपने मन में मं सू बे बना रही थी।

लै ला बिस्तर से उठी। खड़े होने के लिए उसे कोशिश करनी पड़ी। हर कहीं उसे दर्द हो रहा था। उसकी गर्दन, उसके कं धे, उसकी पीठ, उसकी वां हें, उसकी जां चें, हर जगह रशीद की बे ल्ट की बकल के दिए जख्म थे । दर्द में सिकु ड़ते हुए वो सोने के कमरे से बाहर निकल गई। मरियम के कमरे में रोशनी स्याह नहीं थी, बल्कि ज़्यादा गहरा अं धे रा था। यह ऐसी रोशनी थी, जिसे लै ला हमे शा बोलते हुए गोंद और घास की पत्तियों से लु ढ़कर गिरती ओस से जोड़ कर दे खती थी। मरियम एक कोने में खिड़की की तरफ़ मुं ह किए जाने माज़ पर बै ठी हुई थी। धीरे-धीरे लै ला उसके सामने ज़मीन पर बै ठी।

'तु म्हें सवे रे जाकर अज़ीज़ा से मिलना चाहिए,' मरियम ने कहा।

'मैं जानती हूं कि आप क्या कहना चाहती हैं ।'

'चलना नहीं। बस ले ले ना। तु म लोगों में मिल जाओगी। टैक्सियां अलग हैं । पक्के तौर पर तु म उनमें अके ली सफ़र करती दिख जाओगी।'

'पिछली रात आपने जो वादा किया था...'

लै ला बात पू री नहीं कर सकी। पे ड़, झील, बिना नाम वाला गां व। उसने दे खा कि वह एक धोखा था। मन को सु कू न पहुं चाने के लिए एक प्यारा सा झू ठ। जिस तरह एक परे शान बच्चे को मनाने के लिए तरह-तरह की आवाजें निकाली जाती हैं ।

'मैं ने वो वादकिया था,' मरियम ने कहा। 'मे रा मतलब थाकि वो सब तु म्हारेलिए होगा, लै ला जो।'

'मैं आपके बगै र उसमें से कोई भी चीज़ नहीं चाहती,' लै ला फटी हुई आवाज़ में बोली।

मरियम फीके ढं ग से मु स्कु राई ।

'आपने जै सा कहा था,मैं वै सा ही चाहती हूं,मरियम। हम सब साथ जाएं गे, आप, मैं और बच्चे । पाकिस्तान में तरिक़ के पास जगह है । हम वहां कु छ समय तकुपछसकते हैं, चीज़ों के शां त होने का इं तज़ार कर सकते हैं।'

'यह मु मकिन नहीं है, मरियम ने गं भीरता के साथ कहा मानो एक मा अपने अच्छे इरादों वा, लेकिन भटकी हुई औलाद को समझा रही हो।

'हम एक दूसरे का ख्याल रखें गे,' लै ला ने कहा। उसके शब्द गले में फं स रहेउसकी आं खें आं सु ओं से गीली हो गई थीं। 'जै सा आपने कहा घा। नहीं। बदले में मैं आपकी दे खभाल करूं गी।

'ओह लै ला जो।'

लै ला हक़लाते हुए बड़बड़ाती रही। उसने मनु हाकिया। वादे किए। उसने कहाकि वो सारी साफ़-सफाई करे गी और सारा खाना भी बनाएगी। 'आपको कु छ भी नहीं करना होगा। कभी भी नहीं। आप आराम करें गी, सोएं गी, बागीचा लगाएं गी। जो भी आप चाहें, वो आप कहें गी और मैं लाकर दूं गी। ऐसा मत कीजिए मरियम। मु झे मत छोड़िए। अज़ीज़ा का दिल मत तोड़िए ।'

'वो रोटियां चु राने केलिए हाथ काट ले ते हैं,' मरियम ने कहा। 'तु म्हें क्या लगता हैकि जब उन्हें एक मरे हुए शौहर और दो लापता बीवियों का पता लगे गा तो वो क्या करें गे?'

पाएगा।' 'किसी को पता नहीं लगे गा,' लै ला ने सां स ली'कोई हमें नहीं तलाश

'वो तलाश लें गे । देखवे र। वो खू न के लिए कु त्ते हैं मरियम की आवाज़ नीची और सतर्क थी। इससे लै ला के वादे सनक से भरे ,हुए हुए और बे वकू फ़ाना लग रहे थे ।

'मरियम, मे हरबानी-'

'जब वो तलाश लें गे तो वो तु म्हें भी मुजरितना ही गु नाहगार ठहराएं गे ।

तारिक़ को भी। मैं तु म दोनों को फरार लोगों की तरह भागभाग कर जीने नहीं दूंगी। अगर तु म दोनों पकड़े गए तो तु म्हारे बच्चों का क्या होगा?'

लै ला की आं खें भर आई। वो चु भ रही थीं।

'कौन उनकी दे खभाल करे गा? तालिबान? एक मां की तरह सोचो लै ला जा। एक मां की तरह सोचो। मैं सोच रही हूं ।'

'मैं नहीं सोच सकती ।'

'तु म्हें सोचना होगा।

'यह नाइं साफ़ी है' लै ला फटी हुई आवाज़ में बोली।

'लेकिन यह है । यहां आओ। यहां आकर ले टो।

लै लाघिसटती हुई बढ़ी और फिर से अपनासिर मरियम की गोद में रखदिया। उसे वो सारी दोपहरें याद आईं जो उन्होंने साथ गु ज़ारी थींएक दूसरे के बाल गूं थे, मरियम उसके बे तरतीब ख्यालों और उसकी मामू ली कहनियों को एक कृ तज्ञता के साथ सु नती थी। उसके चे हरे पर ऐसे इं सान का सा भाव रहता था जिसे एक अनोखे और इच्छित सौभाग्य से नवाज़दिया गया हो।

'यह इं साफ़ है' मरियम ने कहा। 'मैं ने हम दोनों के शौहर का कत्लकिया है । मैं ने तु म्हारे बे टे को उसके बाप से महरूमकिया है । यह सही नहीं होगाकि मैं भाग जाऊं । मैं नहीं भाग सकती। अगर वो हमें कभी नहीं पकड़ पाएं तब भी, मैं कभी..' उसके होंठ कां प उठे 'मैं तु म्हारे बे टे को अब से नहीं भाग सकती। कै से मैं उसे दे खूं गीकै से मैं उसे दे खनेलिए खु द को तै यार कर पाऊं ,लै ला जो?'

मरियम ने लै ला के बालों की एक लट को लपे टा और एक ज़िद्दी लट को सु लझाया।

'मे रेलिए यहीं सब कु छख़त्म हो गया। अब और कु छ मैं नहीं चाहती। जो कु छ भी मैं ने कभी चाहा, था क नन्हीं बच्ची की तरह तु मने उसे मु झेदिया है । तु मने और तु म्हारे बच्चों ने मु झे इतनीखु शियां दी हैं । यह ठीक है, लै ला जो। यही ठीक हैं । इतनी उदास मत होओ।'

मरियम ने जो कु छ भी कहा था लै ला उसमेंकिसी भी चीज़ के लिए तर्कसं गत जवाब नहीं खोज पाई। लेकिन वो इधर-उधर की बातें करती रही, रोपे जाने का इं तज़ार करते फलदार पे ड़ों और पाले जाने का इं तज़ार करती मुर्गियों के बारे में बे मे ल और बचकानी बातें करती रही। वो बे नाम शहरों में छोटे घरों के बारे में और ट्राउट से भरी झीलों तक सफ़र के बारे में बातें करती रही। और ख़ामोशी में जब शब्द सू ख गए तब भी आं सू नहींतब लै ला बस यही कर सकीकि उसने हार मान ली औरकिसी बड़े के अकाट्य तर्क के आगे हार चु के बच्चे की तरह रोने लगी। वो इतना ही कर सकी कि उसने खु द को ऊपर उठाया और मरियम की गोद की खु शनु मा मांहट में अपना चे हरा आख़िरी बार के लिए धं सालिया ।

उस सु बह बाद में मरियम ने जल्मै के दोपहर के खाने लिए रोटियां और सू खे चिलगोज़े पै क किए। अज़ीज़ा के लिए भी उसने कु छ चिलगोज़े और जानवरों के आकार वाले बिस्कु ट पै क किए। उसने यह सब काग़ज़ के एक थै ले में रखा और लै ला को दिया।

'अज़ीज़ा को मे री तरफ़ से चू म लेना,' उसने कहा। 'उसे बताना कि वो मे री आं खों का नू र है और मेरे दिल का सु ल्तान है । क्या तु म यह मेरे लिए. करोगी?'

लै ला ने सिर हिलाया। उसके होंठ भिंचे हुए थे ।'बस पकड़ ले ना,' जै सा मैं ने कहा था और अपना सिर झुकाए हुए रखना ।' 'मैं आपको कब दे खूं ,' मरियम? अपनी गवाही के पहले मैं आपसे मिलना चाहती हूं । मैं उन्हें बताऊं गी कि यह कै से हुआ था। मैं बताऊं गी कि इसमें आपका कसू र नहीं था कि आपको यह करना पड़ा। वो समझ जाएं गे, नहीं क्या मरियम? वो समझ जाएं गे '।

मरियम ने उसे नमी से दे खा।

जल्मै के आगे वो पं जों के बल झुक गई। उसने एक लाल टी-शर्ट और चीथड़े हो आई खाकी पैं ट पहन रखी थी। उसके पां वो में रशीद द्वारा मं डाई से लाए गए से कें ड हैं ड काउब्वाय बू टों की जोड़ी थी। उसने अपनी नई बास्के टबॉल दोनों हाथों से पकड़ रखी थी। मरियम ने उसके गालों को चू म लिया।

'तु म अब एक अच्छे, मज़बू त बे टे बन जाना,' उसने कहा। 'अपनी अम्मी से अच्छे से पे श आना।' उसने अपनी हथेलियों में उसका चे हरा थाम लिया। वो पीछे हटा, लेकिन मरियम ने पकड़े रखा।'मैं बहुत शर्मिंदा हूं जल्मै जो । यकीन मानो कि तु म्हारे सारे दर्द और उदासी के लिए मैं बहुत शर्मिंदा हूं ।'

सड़क पर साथ जाते हुए लै ला ने जल्मै का हाथ पकड़ लिया। नु क्कड़ पर मु ड़ने से ठीक पहले लै ला पीछे मु ड़ी और उसने मरियम को दरवाज़े पर खड़े दे खा। मरियम ने सिर पर एक सफ़े द स्कार्फ़ ओढ़ रखी थी, उसने सामने से बटनबं द एक गहरा नीला स्वे टर और सफ़े द सू ती पजामा पहना था। स्याह वालों की एक लट उसकी ललाट पर खु ल कर लटक आई थी। धू प की किरणें उसके चे हरे और कं धों पर बिछे पड़ रही थीं। मरियम ने स्ने ह से हाथ हिलाया।

वो नु क्कड़ पर मु ड़ गए और लै ला नेरियम को फिर कभी नहीं दे खा।

सैं तालीस

मरियम

यह इतने बरसों के बादफिर से एक कोल्बा में वापसी जै सा लगा था।

वलायत महिला जे लचिकन स्ट्रीट के करीब शाहेनौ में एक चौकोर नीरस इमारत थी। यह एक बड़े रिसर के बीच मेंस्थित था, जिसमें मर्द कै दी रखे जाते थे । एक तालाबं द दरवाज़ारियम और दूसरी औरतों को चारों तरफ़ के मर्द कैदियों से अलग करता था। मरियम ने पां च कोठरियां गिनीं। वो बिना किसी साज-सामान वाले कमरे थेजिनकी दीवारें गं दी थीं और रं ग छोड़ रही थी। उनमें छोटीखिड़कियां लगी थीं, जिनसे आं गनदिखता था। खिड़कियों पर सलाखें लगी थीं, हालांकि दरवाज़ों में ताला नहीं था और औरतें अपनी मर्जी से आं गन में जाने को आज़ाद थीं।खिड़कियों पर शीशे नहीं थे । पर्दे भी नहीं थे, जिसका मतलब यह था कि आं गन में गश्त कर रहे सिपाही गार्ड कोठरियों के भीतर भी नज़र रखते थे । कु छ औरतोंने शिकायत की कि गार्ड खिड़की के बाहरसिगरे ट पीते थे और अपनी लाल आं खों और वहशी मु स्कान के साथ भीतर झां कते ।कि वो उनके बारे में आपस में फू हड़ मज़ाक करतें । इस वजह से ज़्यादातर औरतें हमेशाबुर्का पहने रहतीं और के वल सू रज ढल जाने के बाद ही उन्हें उठनेदीं। मु ख्य दरवाज़े में ताला लगादिया जाता और गार्ड अपनी चौकियों पर चले जाते ।

मरियम पां च औरतों और चार बच्चों के साथ अं धे रे में बिताती । उन रातों में जबबिजली रहती वो नगमा को छत तक ऊपर उठाते, जो एक

छोटी सी, सपाट सीने और खूब घुंघराले काले वालों वाली लड़की थी। वहां एक तार जिसकी बाहरी परत निकल गई थी। नगमा उस नंगे तार को बल्ब के तले में लपेट दी कि वो जल सके।

शौचालय अलमारियों की तरह पतले थे। सीमेंट की शेल्फ चटख गई थी। ज़मीन में एक छोटा चौकोर छेद था जिसके तले में पाखाने का ढेर था। छेद के दोनों ओर पांव आती-जाती रहतीं।

जेल के बीच में एक खुला चौकोर आंगन था और उसके बीच में एक कुआं था। कुएं में बाल्टी नहीं थी, जिसका मतलब था कि आंगन में पानी जमा हो जाता और पानी का स्वाद सड़ा हुआ लगने लगता। हाथ से धुले मोज़ों और डायपरों से भरे रहने वाले कपड़े सुखाने के तार पूरे आंगन में एक-दूसरे से उलझते हुए फैले हुए थे। जहां कैदी अपने मुलाक़ातियों से मिलते थे, वहीं उनके लिए परिवारवालों द्वारा लाए गए चावल उबाले जाते थे। जेल कैदियों को खाना नहीं देता था। आंगन ही बच्चों के खेलने की जगह थी। मरियम को पता लगा कि अनेक बच्चे विलायत में ही पैदा हुए थे और उन्होंने कभी इन दीवारों से बाहर की दुनिया नहीं देखी थी। मरियम उन्हें एक दूसरे के पीछे भागते, जीवंतता से भरे खेल खेलते देखती। वहां बदबू देते पाखाने और विलायत में और उनकी अपनी देहों में बसी गई पेशाब की गंध की परवाह नहीं रहती। वो तालिबानी गार्डों की तरफ़ भी ध्यान नहीं देते, जब तक कि कोई उन्हें थप्पड़ नहीं लगा देता।

मरियम का कोई मुलाकाती नहीं था। उसने तालिबान अफसरान से पहली और अखिरी चीज़ यही मांगी थी। उसे कोई मुलाकाती नहीं चाहिए।

मरियम की कोठरी की औरतों में से कोई भी हिंसक जुर्म के लिए बंद नहीं थी। वो सभी घर से भागने के एक ही जुर्म में बंद थीं। नतीजे में मरियम ने उनके बीच खासी बदनामी हासिल कर ली थी और एक सेलिब्रिटी बन गई थी। औरतें उसे आदरलगभग मुग्धभाव से देखतीं। वो उसे अपने कंबल पेश करतीं। उनमें उसके साथ अपना खाना बांटने की होड़ रहती।

सबसे फुर्तीली नगमा थी, जो हमेशा उसकी कोहनियां पकड़े रहती और मरियम जहां जाती उसके पीछे-पीछे वो भी जाती। नगमा इस किस्म की इंसान

थी जिसे बदकिस्मती की ख़बरें फैलाने में मज़ा आता था, चाहे वो ख़बरें दूसरों की हों या उसकी अपनी। उसने बताया कि उसके अब्बा ने उसके लिए उससे तीस साल बड़े एक दर्ज़ी को जबान दे दी थी।

'वो गू की तरह महक़ता है और उंगलियों से भी कम उसके दांत थे,' नगमा दर्ज़ी के बारे में बताती ।

उसने एक नौजवान के साथ गर्ल्स भाग जाने की कोशिश की, जिससे वो प्यार करती थी। वो एक मुकामी मुल्ला का बेटा था। वो बस काबुल से बाहर तक जा सके । जब वो पकड़े गए और वापस लाए गए तो मुल्ला के बेटे को कोड़े लगाए, जिसके बाद उसने माफ़ी मांग ली और कहा कि नग्मा ने अपनी औरताना अदाओं से उसे लुभाया था। उसने बताया कि नगमा ने उस पर मंत्र चलाया था। लड़के ने वादा किया कि वो फिर से कुरान के अध्ययन में मन लगाएगा। मुल्ला का बेटा छोड़ा गया। नगमा को पांच सालों की सज़ा हुई।

उसने बताया कि यहां जेल में रहना अच्छा है । उसके अब्बा ने कसम खाई थी कि जिस दिन वो जेल से रिहा होगी, वो छुरी से उसका गला काट देंगे ।

नगमा को सुनते हुए मरियम ने उस सुरंग सुबह में देखे सितारों की चमक और सफ़ेद कोह पहाड़ियों के ऊपर सरकते पतले गुलाबी बादलों को याद किया, जब नाना ने उससे कहा था उत्तर की तरफ़ दिखाती हुई कंपास की सुई की तरह एक स्त्री की उंगली इल्ज़ाम लगाने के लिए हमेशा औरत को ही खोजती है । हमेशा। इसे याद रखना मरियम ।

मरियम की सुनवाई पिछले हफ़्ते शुरू थी। उसका कोई कानूनी सलाहकार नहीं था, आम सुनवाई हुई न सबूतों को परखा गया और न अपील की गुंजाईश थी। पूरी चीज़ पंद्रह से भी मिनटों तक चली। बीच वाला जज एक नाजुक सा दिखने वाला तालिब था और वही उनका रहनुमा था। वह गैरमामूली तरह से पतला था, जिसकी पीली झूलती हुई चमड़ी और घुंघराली लाल दाढ़ी थी। उसने चश्मा पहन रखा था जिसमें उसकी आंखें बड़ी-बड़ी दिख रही थीं और यह उजागर कर रही थीं कि उसकी आंखों का सफ़ेद हिस्सा कितना पीला है । उसकी गर्दन इतनी पतली थी कि ऐसा नहीं लग रहा था कि उसके सिर पर बंधी पेचदार पगड़ी का बोझ सह पाएगी।

से पू छा।'आप इसे कबू ल करती हैं हमशीरा' उसने थकी हुई आवाज़ मेंफिर

'हां, मैं कबू ल करती हूं मरियम ने कहा।

उस आदमी ने सिर हिलाया। या शायद नहीं हिलाया था। कहना मुश्किल था। उसका सिर और हाथ लगातार कां प रहे थे,जो मरियम को मु ल्ला फै जु ल्ला केहिलने की याददिलाते थे । जब जज ने चाय पी तो वो अपनी कप नहीं उठा पाया। उसने अपनी बाईं तरफ़ खड़े चौड़े कं धों वाले एक आदमी को इशारा किया, जो आदर से कप को उसके होठों तक ले गया। इसके बादतालिब ने नर्मी से अपनी आं खें बं द कर लीं,छ बु दबु दाया और शुक्राने का एक सुं दर सा भाव बनाया।

मरियम को इस आदमी में एक सु कू नदे ह गु ण कां पता लगा। जब वो बोलता तो उसमें झू ठ और दया की झलक मिलती। उसकी मु स्कान धीरज से भरी हुई थी। वो मरियम को फटकार भरी नज़रों से नहीं दे खता। वो उसे नफ़रत या तोहमत से नहीं बल्कि हल्की सी माफ़ी भरे अं दाज़ में संबोधित करता ।

'आप पू री तरह समझती हैंकि आप क्या कह रही हैं?' जज की दाहिनी तरफ़ वाले हड़ीले चे हरे वाले कि चाय दे ने वालेतालिब ने उससे पू छा। ये उन तीनों में सबसे नौजवान था। वो जल्दी-जल्दी बोलता था और उसमें ज़ोरदार और गु रू र से भरा हुआ आत्मविश्वास था। वो इससे चिढ़ गया था कि मरियम पश्तो में नहीं बोल सकती थी। वो मरियम से एक झगड़ालु नौजवान की तरहभिड़ गया, जिसे अपना अख्तियार पसं द था, जो हर जगह जुर्म ही जुर्म दे खता रहता था और सोचता थाकि फै सले सु नाना उसका जन्मसिद्ध अधिकार है ।

'मैं समझती हूं मरियम ने कहा।

'मु झे है रानी,है नौजवान तालिब ने कहा। 'खु दा ने हमें अलग-अलग : बनाया है, आपको औरत और हमें मर्द। हमारे दिमाग अलग हैं । आप उस तरह सोच सकने के काबिल नहीं हैं, जिस तरह हम सोच सकते हैं ।

पश्चिमी डॉक्टरों और उनके साइंस ने भी इसे साबित किया है। यही वजह है कि हमें मर्द गवाह सिर्फ एक चाहिए होता है, जबकि औरतें दो।'

'मैं ने जो किया उसे मैं कबूल करती, बिरादर,' मरियम ने कहा। 'लेकिन अगर मैं ने ऐसा नहीं किया होता तो वो उसे मार डालता। वो उसका गला घोंट रहा था।'

'ऐसा आप कह रही हैं। लेकिन तब औरतें तो हर वक़्त हर तरह की कसमें खाती ही रहती हैं।'

'मैं सच कह रही हूं'।

'क्या आपका कोई गवाह है? आपकी अंबाग के अलावा कोई?'

'कोई नहीं,' मरियम ने कहा।

'तब ठीक है।' उसने अपने हाथ पटके और मक्कारी से हिनहिनाया। इसके बाद बीमार दिख रहा तालिब बोला।

'पेशावर में मेरा एक डॉक्टर, है उसने कहा। 'कमाल का एक नौजवान पाकिस्तानी दोस्त। मैं उससे एक महीना पहले मिला था और फिर पिछले हफ्ते भी मिला। मैं ने कहा मुझे सच्चाई बताओ दोस्त और उसने मुझसे कहा कि तीन महीने, मुल्ला सहिब या ज़्यादा से ज़्यादा छह महीने बेशक सब खुदा की मर्जी है।'

उसने अपनी बाईं तरफ़ के चौड़े कंधे वाले की तरफ़ हिलाया और उसके द्वारा पेश की गई चाय की एक और घूंट भरी। उसने अपने कांपते हाथ को पलट कर मुंह पोंछा। 'जीवन को छोड़ना मुझे नहीं डराता कि मेरा अकेला बेटा पांच साल पहले गुज़र चुका है। ज़िंदगी ने मुझको इतने गम दिए हैं कि हम अब बर्दाश्त नहीं कर सकते। नहीं मुझे यकीन है कि जब वक़्त आएगा तो मैं खुशी से विदा हो जाऊंगा।

'जो बात मु झे डराती है, हमशीरा, वो वह दिन है जब खु दा अपने सामने बु लाएगा और पू छेगा मने वै सा क्यों नहीं किया जै सा मैं ने कहा था, मु ल्ला? क्यों तु मने मे रे कानू नों का पालन नहीं किया? तब मैं उसको क्या जवाब दूं गा, हमशीरा ? उसके हुक्मों को न मानने के लिए मे रे पास अपने बचाव में क्या हो गा? मैं बस यही कर सकता हूं, हम सब यही कर सकते हैं कि हमें जो वक़्त दिया गया है, उसमें हम उन कानू नों पर चलें जो उस खु दा ने हमारे लिए बनाए हैं । जितना साफ़ मैं अपने अं त को दे खता हूं, हमशीरा, जितना मैं अपने हिसाब के दिन के करीब होता हूं, उतनी ही मज़बू ती से मैं खु दा की बातों पर चलता हूं । चाहे ये राह ना भी दर्दनाक साबित हो।'

उसने अपनी मसनद हटाई और उसके चे हरे पर दर्द का भाव आया।

'जो आप कहती हैं उस पर मु झे यकीन है कि आपके शौहर झगड़ालू मिजाज़ के थे,' उसने फिर से बोलना शु रू किया। अपनी चश्मे वाली आं खों से

उसने मरियम को जड़ कर दिया था। उसकी निगाह सख़्त भी थी और तसल्ली दे ने वाली भी।'लेकिन मैं आपकी कार्रवाई की क्रू रता से बे चै न हूं, हमशीरा । मु झे उससे परे शानी, जो आपने कर दिया है । मैं इससे परे शान हूं कि जब आप ये कर रही थीं ऊपर उनका नन्हा बच्चा उनके लिए रो रहा था।

'मैं ऊबा हुआ हूं और मर रहा हूं, और मैं मे हरबान होना चाहता हूं । मैं आपको माफ़ करना चाहता हूं कि जब खु दा मु झे बु लाएगा और कहे, लेकिन माफ़ी दे ना तु म्हारा काम नहीं था मु ल्ला, तो मैं क्या कहूं गा?'

उसके सथियों ने सिर हिलाया और प्रशं सा से भरी निगाहों से दे खने लगे 'कोई बात है जो मु झसे कह रही है कि आप बु री औरत नहीं हैं, हमशीरा । लेकिन आपने एक बु रा काम किया है । और आपने जो किया है, उसके लिए आपको कीमत चु कानी ही पड़े गी। इस मामले में सिया में कोई अनिश्चितता नहीं है । यह कहता है आपको भी वहीं भे ज दिया जाना चाहिए, जहां मैं जल्दी ही जाने वाला हूं ।

'आप समझीं हमशीरा ?'

मरियम ने नीचे अपने हाथों को दे खा। उसने कहा वो समझ गई है ।

'अल्लाह आपको माफ़ करे ।'

उसे बाहर ले जाने से पहले उन्होंने मरियम को एक दस्तावे ज़ दिया कि वो अपने बयान पर और मु ल्ला द्वारा सु नाई गई सज़ा पर दस्तखत करे । तीनों तालिबान की नज़रों के सामने मरियम ने अपना नाम लिखा-मीम, रे, ये और मीम और उसने याद किया कि पिछली बार उसने अपना नाम सत्ताईस बरस पहले जलील की टे बल पर, एक और मु ल्ला की दे खती हुई निगाह के सामने एक दस्तावे ज़ पर लिखा था।

मरियम ने दस दिन जे ल में बिताए। वो कोठरी की खिड़की के पास बै ठी रहती, आं गन में जे ल के जीवन को दे खती। जब गर्मियों की हवाएं आतीं तो वो काग़ज़ के टुकड़ों को ते ज़ हवा के झोंकों के साथ इधर-उधर उड़ते और जे ल की दीवारों के ऊपर जाते दे खती। वो हवाओं द्वारा धू ल का उड़ाया जाना दे खती, खेती एवं डर की शक्ल में आं गन में उनका उठना दे खती। हर कोई, साथी कै दी, बच्चे, मरियम अपनी कोहनियों के भीतर अपना चे हरा छु पा ले ती, लेकिन धू ल उनको नहीं बख़्शती। वो उनके नाक और कान में, आं खों की बरौनियों और चमड़े की तहों में, दां तों के बीच की जगहों में भर जाती। के वल शाम

के समय ही हवाएं बं द होतीं। और अगर रात में हवा बहती तो इतने सं कोच के साथ बहती कि मरियम को आई अपनी बहनों की ज्यादतियों का पश्चाताप कर रही हो।

वलायत में मरियम के अखिरी दिन, नगमा ने उसे एक सं तरा दिया। उसने उसे मरियम की हथे ली पर रख दिया और उसकी मुट्ठी बं द कर दी। फिर वो रोने लगी।

'आप मे री अब तक की सबसे अच्छी दोस्त हैं,' उसने कहा।

मरियम ने बाक़ी का दिन सलाखों वाली खिड़की के पास बै ठ कर नीचे घाटियों को दे खते हुए बिताया। कोई खाना बना रहा था और ज़ीरे की महक़ वाले धु एं और सर्द हवा का एक झोंका खिड़की में दाखिल हुआ। मरियम बच्चों को आं गन में आं खों पर पट्टियां बां धे खे लते हुए दे खा। दो नन्हीं बच्चियां एक गीत गा रही थीं और मरियम को अपना बचपन याद आया, जब जलील ने उसे यह गीत गाकर सु नाया था, जब वो एक पत्थर पर बै ठे हुए धारा में मछली मार रहे थे।

लिलि लिलि बर्डबाथ
सिटिंग ऑन एक डर्ट पाथ
मिनो सै ट ऑन दरिम एं ड ट्रै क
स्लिप्ड, एं ड इन द वाटर शी सैं क

मरियम ने पिछली रात के सपनों को अलग-अलग किया। उसने ग्यारह कं कड़ों का सपना दे खा था, जिनको उसने एक दूसरे के ऊपर खड़ा किया था। फिर से नौजवान हो गया जलील, उसी जीत ले ने वाली मु स्कान गड्ढे पड़ती ठोढ़ियों और पसीने के धब्बों के साथ, कं धे पर कोट लहराते हुए अपनी बे टी को ले जाने के लिए एक चमचमाती काली बु ईक रोडमास्टर से आया था। मु ल्ला फै जु ल्ला अपनी तस्बीह के दाने फे र रहे थे, उसके साथ धारा के किनारे टहल रहे थे। उन दोनों की परछाइयां पानी में तै र रही थीं और किनारे की धार पर नीली-लै वें डर जं गली अड़ि श पसरी हुई थी, जो सपने में लौंग की तरह महक़ रही थी। उसने कोल्बा के चौखट पर खड़ी नाना का सपना दे खा। वो मद्धिम और दूर से आ रही आवाज़ में मरियम को रात के खाने के लिए बु ला रही थीं। मरियम

ठं डी, उलझी हुई घास में खे ल रही थी जहां चींटियां रें गतीं और भौरे भागते फिरते और हर तरह की हरियाली के बीच टिड्डे कू द रहे थे। ऊं चे रास्ते पर चढ़ता एक ठे ला चरचरा रहा था। गायों के गले में घंटियां बज रही थीं। पहाड़ी पर भे ड़ें बलबला रही थीं।

गाजी स्टेडियम जाता हुआ हुआ ट्रक जब रास्ते के गड्ढे पार करता या उसके लिए पत्थरों पर पड़ते तो उसकी सीट पर बै ठी मरियम को धक्के लगते। इन धक्कों से उसकी कू ल्हे की हड्डी दुख रही थी। एक नौजवान, हथियारबं द तालिब उसके सामने बै ठा उसे दे ख रहा था।

मरियम को जानने की इच्छा हुई कि क्या वो उनमें से एक होगा। यह प्यारा सा दिख रहा नौजवान जिसकी आं खें गहरी काली हैं और चे हरा हल्का सा नु कीला है जिसकी काले नाखु न वाली जर्मनी ट्रक की बग़ल में थपथपा रही है।

'क्या आप भू खी हैं अम्मी?' उसने पू छा। मरियम ने सिर हिला कर मना किया। 'मे रे पास बिस्कु ट है। ये अच्छा है। अगर आपको भू ख लगी हो तो आप खा सकती हैं। मु झे बु रा नहीं लगे गा।

'नहीं। तशक्कु र, बिरादर।'

उसने सिर हिलाया और उसे दया से दे खने लगा। 'क्या आपको डर लग रहा है अम्मी?'

मरियम के गले में कु छ फं स गया। कां पती हुई आवाज़ में मरियम ने उसको सच्चाई बता दी। 'हां, मु झे बहुत डर लग रहा है।'

'मे रे पास मे रे अब्बा की एक तस्वीर है' तालिब ने कहा। 'मु झे उनकी याद नहीं है। वो कभी सा इकिलों की मरम्मत करते थे, मैं बस इतना ही जानता हूं। लेकिन मैं नहीं जानता कि वो कै से चलते थे, कै से हं सते थे या उनकी आवाज़ कै सी थी।' उसने दू सरी तरफ़ दे खने के बाद मरियम को दे खा। 'मे री अम्मी कहा करती थीं कि वो जितने लोगों को जानती थीं, उनमें वो सबसे बहादु र थे। एक शे र की तरह। वो कहतीं। लेकिन उन्होंने मु झे बताया कि जिस सु बह कम्युनिस्ट उन्हें ले गए, वो बच्चों की तरह चिल्ला रहे थे। मैं आपको यह इसलिए बता रहा हूं कि आप जानें कि डरना एक सामान्य बात है। इसमें शर्मिंदा होने

की कोई बात नहीं है, अम्मी।'

उस दिन पहली बार मरियम थोड़ा सा रोई थी।

हज़ारों आं खें उस पर टिकी हुई थीं। सफ़े दी की भीड़ में बे हतर नज़ारे के लिए गर्दनें तनी हुई थीं। चीभें चटक रही थीं। जब मरियम को ट्रक से उतारा जा रहा था तो भु नभु नाता हुआ शोर पूरे स्टेडियम में फै ल गया। लाउस्पीकर ने उसके जुर्म का एलान किया तो मरियम ने हिलते सिरों की कल्पना की। लेकिन वो यह दे खने के लिए निगाह नहीं उठा सकी कि वे सिर नाराज़गी में हिल रहे थे या दया में, धिक्कारते हुए हिल रहे थे या तरस खाते हुए। मरियम ने उन सबकी तरफ़ से आं खें मूं द ली थीं।

* उस सु बह इससे पहले वो डरी हुई थी कि वो अपने को बे वकू फ़ बना ले, गिर के वो फरियादें करती और रोती हुई एक तमाशा बन जाएगी। उसे डर लगा था कि शायद वो चिल्लाएगी या उल्टियां करे गी या पे शाब कर दे गी, कि आख़िरी पलों में जानवरों की सहज प्रवृत्तियां या फू हड़ तरीके उस पर हावी हो जाएं गे लेकिन जब उसे ट्रक से उतारा जा रहा था तो मरियम के पां व डोल नहीं रहे थे । उसके हाथ झू ल नहीं रहे थे । उसे घसीटने की ज़रूरत नहीं पड़ी। और जब उसे लगा कि वो डगमगा रही है, उसने जल्मै के बारे में सोचा जिससे उसने उसकी जिंदगी के प्यार को छीन लिया था, जिसके दिन अपने पिता की गै रमौजू दगी के दर्द के साथ आकार लें गे । और तब मरियम तन कर खड़ी हो गई और वो बिना विरोध किए चल सकी।

एक हथियारबं द आदमी उसकी तरफ़ बढ़ा और उसने उसे बताया कि वो दक्षिणी गोलपोस्ट की तरफ़ चले । मरियम इं तज़ार में कसमसाती भीड़ को महसू स कर सकती थी। उसने निगाह नहीं उठाई। अपनी आं खें ज़मीन पर अपनी और पीछे आ रहे उसे सज़ा दे ने वाले आदमी की परछाइयों पर गड़ाए रही।

हालांकि इसमें कु छ खू बसू रत पल भी रहे, मरियम जानती थी कि उसकी ज़्यादातर जिंदगी उसके लिए मे हरबान नहीं रही थी। लेकिन आख़िरी बीस कदमों के दौरान उसने और कु छ नहीं बल्कि सबसे ज़्यादा ज़िंदगी ही चाही। उसने चाहा कि वो फिर से लै ला को दे ख सके, उसके ठहाके सु न सके, सितारों से रोशन आसमान के नीचे एक बार फिर चाय और बचे हुए हलवे लिए हुए उसके साथ बै ठ सके । उसने इसका दुख हुआ कि अब वो अज़ीज़ा को फिर से नहीं दे ख पाएगी, उस खू बसू रत नोजवान औरत को नहीं

दे ख पाएगी, जो वह आने वाले वक़्त में बनने वाली थी। वो उसके हाथों हिंसा से नहीं रं ग पाएगी और उसकी शादी पर नोकु लमिठाइयां नहीं लु टा सके गी। वो अज़ीज़ा के बच्चों के साथ कभी नहीं खे ल पाएगी। उसे बू ढ़ी बनना और अज़ीज़ा के बच्चों के साथ खे लना बहुत अच्छा लगता।

गोलपोस्ट के करीब उसके पीछे वाले आदमी ने उससे रुकने को कहा।मरियम रुकी। बुर्के की जाली से उसने दे खकि हाथों की परछाईं ने कलश्निकोव की परछाईं को उठाया ।

मरियम ने इन अख़िरी पलों में बहुत कु छ चाहा। उसने अपनी आं खें बं द कर लीं। तब भी उसे कोई पछतावा नहीं था, बल्कि एक विशाल शांति ने उसे अपने साए में ले लिया। उसने इस दुनिया में अपने आने के बारे में सोचा. एक नीच दे हाती की एक हरामी औलाद, एक अनचाही चीज़, एक तरस खाने लायक, पछताने लायक हादसा। एक पतवार। और तब भी, जब वो इस दुनिया से जा रही है तो उसने लोगों को प्यार किया था और उसे बदले में प्यार मिला था। वो इसे एक दोस्त, एक साथी, एक निगहबान के रूप में छोड़ रही है । एक मां के रूप में । आख़िर में एक ऐसे इं सान के रूप में, जिसकी अहमियत है । नहीं। मरियम ने सोचा, इस कदर मरना यह इतना बु रा नहीं था। उतना बु रा नहीं। यह एक नाजायज़ शु रुआत का जायज़ अं त है ।

मरियम के अख़िरी ख्याल कु रान की ये कु छ शब्द थे, जिसे वो अपनी सां सों में बु दबु दा रही थी।

उसी ने सच्चाई से जन्नत और धरती बनाई है । उसी ने दिन के बाद आती रातें बनाई हैं और दिनों को बनाया है ताकि वो रातों को ढं क लें और उसी ने सू रज और उसके मातहत चां द को बनाया है । हरे क अपने तयशु दा फे रों को पू रा करता है, अब वही खु दा सबसे बड़ा है, सबसे मे हरबान है ।

'झुकिए,' तालिब ने कहा।
ओ मे रे खु दा, माफ़ करना और रहम करना, क्योंकि तु म्हीं सबसे बे हतर रहम करने वाले हो।
'यहां झुकिए हमशीरा। और नीचे दे खिए।'
इस आख़िरी बार, मरियम को जो कहा गया, वो उसने किया।

भाग चार

अड़तालीस

अब तारिक़ के सिर में दर्द रहता था।

कु छ रातों को लै ला जागती और उसने अपने बिस्तर के किनारे तड़पते हुए पाती। उसकी अं डर्ई उसके सिर पर खिंची हुई होती। उसने बताया कि दर्द नासिर बाग में शु रू हुआ था और जे ल में और बढ़ गया था। कभी कभी दर्द की वजह से उसे क़ि ल्टियां होतीं और एक आं ख से दिखना बं द हो जाता। वो बताता कि दर्द ऐसा महसू स होता मानो कसाई की छु री उसकी एक कनपटी को काटती हुई उसके दिमाग में धं सते हुए सही तरफ़ निकल रही हो।

'जब ये शु रू होता है तो मु झे लोहे का स्वाद तक पता लगता है ।

कभी कभी लै ला कपड़ा गीला करके उसकी ललाट पर रखती और इससे उसे राहत मिलती। सईद डॉक्टर ने तारिक़ को जो नहीं गोल सफ़े द गोलियां दी थीं, उन्होंने भी मदद की। लेकिन कु छ रातों में तारिक़ बस अपना सिर पकड़ कर कराहता रहता, उसकी आं खें लाल हो जातीं और नाक से पानी बहता। जब उसे दर्द का ऐसा हमला होता तो लै ला उसके साथ बै ठती, उसकी गर्दन के पिछले हिस्से को सहलाती, उसके हाथ अपने हाथों में ले ले ती। तब तारिक़ की शादी की अं गू ठी का ठं डापन उसकी हथे ली में महसू स होता।

शादी उन्होंने मु रीं पहुं चने वाले दिन ही कर ली थी। सईद को सु कू न मिला था, जब तारिक़ ने उन्हें बताया था कि वो शादी करें गे । उन्होंने तारिक़ से होटल में एक बिना शादीशु दा जोड़े के रहने जै से एक नाजु क मसले पर बात

नहीं चलाई होती। सईद वै से नहीं थे जै सी लै ला ने उनकी कल्पना की, थी लाल चे हरा और छोटी आं खें । उनकी काली-सफ़े द मूं छें , थीं जिनके किनारों को लपे ट कर उन्होंने नोकदार बना रखा था, और ललाट पर

लं बे स्याह बालों की एक लट को उन्होंने पीछे की तरफ़ कं घी कर रखी थी। वो मीं से बातें करते ,थे सलीके वाले आदमी थे और नापतौल कर बोलते और उनकी हरकतें रिमा से भरी हुई होतीं।

सईद ही थे, जिन्होंने उसदिन निकाह के लिए अपने एक दोस्त और मु ल्ला को बु लाया था। सईद ही ,थे जिन्होंने तरिक़ को भीतर खींच कर उसे पै सेदिए थे । तरिक़ उन्हें नहीं ले ता,लेकिन सईद ने ज़ोरदिया। तारिक़ मॉल गया और सादी-सी, शादी की दो पतली अं गूठियां ले कर आया। बाद में उस रात उन्होंने शादी की, जब बच्चे सो चु के थे ।

मु ल्ला द्वारा ओढ़ाए गए हरे पर्दे के नीचे शीशे में लै ला की आं खें तरिक़ से मिलीं। आं सू नहीं थे,शादियों के दिन वाली मु स्कानें भी नहीं थीं,लं बे समय तक प्यार के बने रहने की फु सफु सा कर कही गई कसमें भी नहीं थीं। खामोशी में लै ला ने अपने तिम्बिंबों को दे खा, वो चे हरे जो उनके सामने बड़े हुए थे । उसी रही थैलियां, लकीरें और झु की हुई चमड़ी एक समय के अविकसित, जवान चे हरों की निशानियां थे । तरिक़ ने अपना मुं ह खोला और कु छ कहने लगा,लेकिन ज्यों ही उसने ऐसाकिया, किसी ने पर्दा खींच लिया और लै ला उस बात से वं चित रह गई, जिसे वह कहने जा रहा था।

उस रात बिस्तर में वे एक शौहर बीवी की तरह पड़े ,थे।नके नीचे सोने के खाटों पर बच्चेरोंख ले रहे थे । लै ला को याद आया कि किस तरह जब वो छोटे थे तो अपने बीच की हवा को शब्दों से भर दे ते थे । उनकी बातों का गड़बड़, फु र्तीला प्रवाह हमे शा एक दूसरे को काटता रहता, वो किसी बात पर जोर दे ने केलिए कॉलरों में कोंचते रहते,उनकी हं सी की ते ज़ीमज़े की उत्सु कता। बचपन के उन दिनों के बाद से कितना कु छ घट चु का था,कितना कु छ कहे जाने की ज़रूरत थी। लेकिन उस पहली रात की भव्यता ने लै ला से शब्द छीन लिए थे । उस रात, उसकी बगल में होना ही सबसे बड़ा सु ख था। यह जानना ही बड़ा सु ख था कि वो यहां मौजू द था,अपनी बगल में उसकी गर्माहट को महसू स करना, अपने सिरों को छुआते हुए उसके साथ ले टना, उसकी दाहिनी बां ह में अपना बायां हाथ लपे टना ही सु खद था।

आधी रात को जब लै ला प्यास की वजह से जगी तो उसने पायाकि उनके हाथ अभी भी एक दूसरे के साथ इस तरह बं धे हुए थेजै से बच्चे कसकर गु ब्बारे का धागा पकड़े रहते हैं ।

लै ला को मुर्री की ठं डी, कोहरे भरी सु बह,इसकी चौंधियाने वाली शामें और रात के आसमान की काली जगमगाहट पसं द आई। उसे उसके सनोबरों कीहरियाली और गिलहरियों का नर्म, भू रापन अच्छा लगा, जो तने हुए पे ड़ों पर ऊपरनीचे फु दकती रहती थीं। वहां अचानक होती बौछारें भी अच्छी लगीं,जिनकी वजह से ख़रीददार सामने के चं दोवे पर तानने केलिए छतरियों की ओर भागते । उसेनिशानियों के लिए सामान बे चतीं दुकानें और होटल पसं द आए,जिनमें सै लानी रहते ,थेभले ही मु कामी लोग लगातार चलने वाले निर्माण कार्यों और बुनियादी ढां चे केविस्तार की शिकायतें करते रहते । उनका कहना थाकि यह मुर्री की कु दरती खू बसू रती को खा रहा है । लै ला को यह बात अजीब लगी कि इमारतें बनने पर लोग मातम मनाएं । काबु ल में तो लोग जश्न मनाते ।

उसे अच्छा लगताकि वहां बाथरूम थे । आउटहाउस नहींबल्कि सचमु च के बाथरूम,जिनके शौचालयों में फ्लश थी, शावर था और सिंक भी था, जिसमें जु ड़वां टोंटियां थी, जिनसे वो कलाई की एक हरकत से पानी निकाल सकती थी। पानी न ठं डा होता और न गर्म। उसे सु बह में अल्योना केमिमियाने और झगड़ालू रसोइया अदीबा, जो कमाल का खाना बनाती थी, की आवाज़ पर जागना अच्छा लगता ।

कभी-कभी जब लै ला तरिक़ को सोते हुए दे खती,बच्चों को नींद में बड़बड़ाते औरहिलते-डुलते दे खती तो कृ तज्ञता की एक लहर उसके भीतर उठती और उसका गला भर आता। उसकी आं खें गीली हो आतीं ।

सवे रे लै ला तरिक़ के पीछेपीछे एक कमरे से दूसरे कमरे में जाती। उसकी कमर में खु ंसे हुए छल्ले में चाबियां बजतीं और उसकी जींस के बे ल्ट लू पों मेंखिड़कियां साफ़ करने की स्प्रे की बोतल झू लती रहती। लै ला एक बाल्टीलिए रहती, जिसमें चीथड़े, डिस् इन्फे क्टें,एक ट्वायले टब्रश और ड्रे सरों केलिए स्प्रे वै क्स होती। अज़ीज़ा भी उससे लगी हुई चलती जो एक हाथ में झाड़ूलिए रहती और दूसरे में पत्तियों से बनी गुड़िया होती जिसे मरियम ने उसकेलिए बनाया था। जल्मे हिचकते हुए पीछेपीछे आता। वो रूठा हुआ-सा, एक क़दम पीछे रहता ।

लै ला वै क्यु म से साफ़ कर,तबिस्तर लगाती और धू ल झाड़ती। तरिक़ बाथरूम के सिंक और टब साफ़ करता, ट्वायले ट को रगड़ता औरलिनोलियम के फ़र्श पर झाड़ू लगाता। खानों में वो धु ले हुए तौलिए, शैं पू की छोटी बोतलें और बादाम की खु शबू वाले साबु न,ुके कड़े ट सजाता। अज़ीज़ा नेखिड़कियों पर स्प्रे मारने और उन्हें साफ़ करने काजिम्मा ले रखा था। जब वो काम करती तो गुड़िया उससे बहुत दू र नहीं रहती।

लै ला नेनिकाह के कु छदिनों के बाद अज़ीज़ा को तरिक़ के बारे में बतादिया था।

लै ला को लगताकि अज़ीज़ा और तारिक़ के बीच चीजें अजीब और लगभग बे चै न कर दे ने वाली हैं । अज़ीज़ा तारिक़ के वाक्यों को पू रा करती और तारिक़ उसके वाक्यों को। तरिक़ के मां गने से पहले ही वो उसे चीजें थमा दे ती। रात के खाने की टे बल पर उनके बीच मु स्कानेंखिल उठतीं मानों वो बिल्कु ल ही अजनबी न हों, बल्कि साथी हों जो एक लं बे समय तकबिछुड़े रहने के बादफ़िर से मिल गए हों।.

जब लै ला ने उसे बताया तो अज़ीज़ा अपनी नज़रें नीचीकिए अपने हाथों को दे ख रही थी।

'मु झे वो पसं द,हैंएक लं बी चु प्पी के बाद उसने कहा।

'वो तु म्हें प्यार करते हैं ।

'ऐसा उन्होंने कहा?'

'उन्हें कहने की ज़रूरत नहीं है,अज़ीज़ा।'

'मु झे बाक़ी चीजें बताइए मम्मी। मु झे बताइएकिमैं जान सकूं'।

और लै ला ने बताया ।

'तु म्हारे अब्बा एक अच्छे आदमी हैं । मैंजितने लोगों को जानती हूं उनमें वां सबसे अच्छे आदमी हैं ।

'अगर वो छोड़ कर चले गए तो?' अज़ीज़ा ने कहा।

'वो कभी नहीं जाएं गे । मु झे दे खो अज़ीज़ा। तु म्हारे अब्बा कभी तुम्हें नहीं पहुं चाएं गे और वो कभी छोड़ कर नहीं जाएं गे '।

अज़ीज़ा के चे हरे पर आई राहत ने लै ला के दिल को तोड़ दिया।

तारिक ने जल्मै के लिए डोलने वाला एक घोड़ा खरीदा, उसके लिए एक वै गन बनाई। जे ल में एक साथी कै दी से उसने काग़ज़ से जानवर बनाना

सीखा था और इस तरह उसने जल्मै के लिए अनगिनत काग़ज़ों को मोड़ कर, काट कर और लपे ट लगा कर उन्हें शे रों और कं गारुओं, घोड़ों और चमकीली मोटी चिड़ियों में बदल दिया था। लेकिन इन तोहफ़ों को जल्मै ने बे रुखी और कभी कभी नफ़रत से ठुक रा दिया था।

'तु म गधे हो' वो चिल्लाता । 'मु झे तु म्हारे खिलौने नहीं चहिए!' 'जल्मै!' लै ला धक से रह जाती।'ठीक है,' तारिक़ ने कहा। 'लै ला, ठीक है । उसे जाने दो।

'तु म मे रे बाबा जान नहीं हो मे रे असली बाबा जान दौरे पर हैं और लौटने पर वो तु म्हें पीटने वाले हैं। तु म भागने के काबिल भी नहीं रहोगे क्योंकि उनके दो पां व हैं और तु म्हारा एक ही है!'

रात में लै ला जल्मै को अपने सीने पर बै ठा कर और उसके साथ बुलाएं दपढ़ती। जब वो पू छता तो वो फिर से झू ठ बोलती।उसे बताती कि उसके बाबा जान चले गए हैं और वो नहीं जानती कि वो कब लौटें गे । वो इस काम से नफरत करती थी, इस बच्चे से इस तरह झू ठ बोलने के लिए खु द से नफ़रत करती थी।

लै ला जानती थी कि इस शर्मनाक झू ठ को बार-बार बोला जाना है । ऐसा होना ही है, क्योंकि जल्मै यह सवाल झू लों से उतरते हुए दोपहर की अपकियों से जागते हुए पू छा करे गा और बाद में जब अपने जू ते बां धने और खु द से चल कर स्कू ल जाने की उम्र का हो जाएगा तब भी वो यह सवाल करे गा और उससे यही झू ठ बोला जाएगा।

लै ला जानती थी कि एक समय जाकर सवाल ख़त्म हो जाएगा। धीरे-धीरे जन्म इस पर सोचना बं द कर दे गा कि उसके अब्बा ने क्यों उसे छोड़ दिया। वो ट्रैफिक लाइटों के पास, सड़क पर चलते या सामने से खु ले हुए समोवार वर्ग के आगे चाय पीते बड़ी उम्र के लोगों के बीच वो अपने अब्बा को नहीं तलाशे गा। और एक दिन किसी घु मावदार नदी के किनारे टहलते हुए या बिना गह वाले किसी बर्फीले मै दान को दे खते हुए उसे समझ आएगा कि उसके अब्बा का लापता होना अब एक खु ला हुआ हरा जख्म नहीं था कि अब यह कु छ और हो गया था, कोई नर्म किनारों वाली सु स्त सी चीज़। लोरियों की तरह। कभी, कभी जिसकी पू जा होती है, जिस पर रहस्य की परतें चढ़ जाती हैं ।

लै ला मुर्री में खु श थी। लेकिन यह एक आसान खु शहाली नहीं थी। यह मु फ्त की खु शी नहीं थी।

छु ट्टी के दिन तारिक़ लै ला और बच्चों मॉल ले कर जाता जिससे लगी दु कानों में सस्ते गहने बिकते थे । उसकी बगल में उन्नीसवीं सदी के मध्य में बनी एंग्लिकन चर्च की इमारत थी। तारिक़ उनके लिए रे ड़ीवालों से मसाले दार चपली कबाब ख़रीदता। वो मु कामी लोगों, यू रोपीयों और उनके से ल्यु लर फोनों और डिजिटल कै मरे, और मै दानी इलाके की मर्री से भाग कर यहां आए पं जाबियों की भीड़ के बीच चलते ।

कभी-कभी वो कश्मीर प्वाइं ट तक बस से जाते । वहां से रिक्शा उन्हें झे लम नदी की वादी, सनोबर से ढं की ढलानें, हरियाली, घने जं गल वाली पहाड़ियां दिखाता। वो बताता कि वहां बं दरों को अभी भी एक डाल से दूसरी डाल पर कू दते हुए दे खा जा सकता है । किनारे से ढं की नथिया गली भी जाते, जो मुर्री से तीसे क किलोमीटर दूर थी और जहां गवर्नर हाउस जाने वाली सड़क पर पे ड़ों के साए में सिर्फ़ लै ला का हाथ थामे हुए चलता। वो पु राने ब्रिटिश कब्रिस्तान पर रुकते या पहाड़ी की चोटी पर जाने के लिए टै क्सी करते, ताकि नीचे की हरी, कोहरे से भरी वादी का नज़ारा कर सकें ।

कभी कभी इस सैर में जब वो किसी दुकान की खिड़की से गुज़रते तो लैला को उसमें उन लोगों के तस्वीर बिंब दिखते। शौहर, बीवी, बेटी, बेटा। वो जानती थी कि अजनबियों को वो रहस्यों, झूठों और पछतावों से मुक्त सबसे मामूली परिवार लगते होंगे।

अज़ीज़ा को बुरे सपने आते, जिनसे वो चिल्लाते हुए जग पड़ती। लैला को खाट पर उसकी बगल में लेटना पड़ता, उसके गालों को अपनी आस्तीनों से पोंछते हुए उसे तसल्ली देते हुए, सुलाना पड़ता।

लैला को खुद भी सपने आते। उनमें हमेशा वो खुद को काबुल के घर के हॉल में चलते हुए, सीढ़ियाँ चढ़ते देखती।

वो अकेली होती, लेकिन दरवाज़ों के पीछे एक स्त्री की लयबद्ध फुफकार सुनाई देती, दरवाज़ों का झटका जाना और फिर तहें लगाना सुनाई देता। कभी कभी वो एक औरत को धीमी आवाज़ में हेरातीगीत गुनगुनाते हुए सुनती। लेकिन जब वो उस कमरे में जाती तो कमरा खाली होता। वहां कोई नहीं होता।

सपने लैला को हिलाते। वो पसीने से लथपथ, आंखों में चुभते आंसुओं के साथ उन सपनों से जगती। यह सब काफ़ी सदमा पहुंचाने वाला था। हर वक़्त यह सदमा पहुंचाने वाला था।

उनचास

उस सितंबर के एक इतवार को लैला जल्मै को सुला रही थी, उसे ठंड लग गई थी कि तारिक़ अचानक बंगले में दाख़िल हुआ।

'सुना तुमने?' उसने थोड़ा हांफते हुए कहा। 'उन्होंने उन्हें मार डाला। अहमद शाह मसूद को। वो मर गए।

'क्या?'

दरवाज़े पर खड़े खड़े ही रफ़ीक़ ने उसे वह बताया जो वो जानता था। "कहते हैं कि वो दो पत्रकारों को इंटरव्यू दे रहे थे। उन पत्रकारों ने खुद को कनाडियन बताया था, जबकि वो असल में मोरक्को से थे। जब वो बातें कर रहे थे तो मिसाइलों के मरे में कुछ बम में धमका हुआ। इसमें मसूद और एक पत्रकार मारे गए। उन्होंने भागने की कोशिश कर रहे दूसरे पत्रकार को गोली मार दी। वो अब कह रहे हैं कि पत्रकार शायद अल कायदा के लोग थे"।

लैला को मसूद का वह पोस्टर याद आया, जिसे मम्मी ने अपने सोने के कमरे में ठोक रखा था। आगे की ओर झुके हुए मसूद, एक भौंह तनी हुई, एकाग्रता से सिकुड़ा हुआ चेहरा मानो वो किसी को पूरे आदर के साथ सुन रहे हों। लैला को याद आया कि अम्मी इस पर कितनी कृतज्ञ थीं कि मसूद ने उनके बेटों के दफन के वक़्त उनकी क़ब्र पर दुआ पढ़ी थी। कैसे वो सबको इसके बारे में बताती थीं। जब उनके गुटों और मसूद के बीच लड़ाई छिड़ गई तब भी अम्मी ने उन्हें दोष देने से इन्कार कर दिया। वो एक भले आदमी हैं, वो कहा करतीं।

वो अमन चाहते हैं। वो अफ़ग़ानिस्तान को फिर से बनाना चाहते हैं। लेकिन वो ये लोग बनाने नहीं देंगे। वो बस उन्हें ऐसा नहीं करने देंगे। मम्मी के लिए आख़िर तक भी, हर चीज़ के बुरी तरह तबाह हो जाने और काबुल के धूल में मिल जाने के बाद भी मसूद पंजशेर के शेर थे।

लैला उतनी क्षमाशील नहीं थी। मसूद के हिंसक अंत से उसे कोई खुशी नहीं हुई। लेकिन उसने यह भी याद किया कि मसूद की निगाहों के सामने मोहल्ले धूल में मिलाए जाते रहे, लाशें मलबों से निकाली जाती रहीं, बच्चों को दफनाए जाने के बाद के दिनों में छतों और पेड़ों की ऊंची शाखों पर से उनके हाथ और पांव बरामद होते रहे। उसे वह भाव भी बहुत साफ़ याद है जो रॉकेट हमले के कुछ पलों पहले उसकी मम्मी के चेहरे पर था और उसने उसे भूलने की कितनी कोशिश की थी, पास ही में पड़ी हुई बावी की सिरकटी देह या आई, घनी धुंध और खून के बीच से झांकती टीवी पर छपा ब्रिज टावर याद आया।

'दफनाने की रस्म तो होगी' तारिक़ कह रहा था। 'मु झे यकीन है । शायद रावलपिंडी में ही। यह बहुत बड़ी होगी।'

लगभग सो चु का जल्मै अब उठ बै ठा था और अपनी बाँ ह से आं खें रगड़ रहा था।

दो दिनों के बाद वो कमरा साफ़ कर रहे थे कि उन्हें शोरगु ल सु नाई दिया। तारिक़ ने झाड़ू रख दी और बाहर भागा। लै ला उसके पीछे पीछे गई।

शीर होटल की लॉबी से आ रहा था। रिसे प्शन डे स्क की दाहिनी तरफ़ लाउं ज एरिया था, जिसमें कई कुर्सियां और मटमै ले सु एड से मढ़े दो सोफे रखे हुए थे । सोफों के सामने कोने में विज़न टेलीविज़न और सईद, दरवान और दूसरे मे हमान सामने जमा थे ।

लै ला और तरिक़ रास्ता बनाते हुए भीतर घु से ।

टीवी पर वीवीसी लगाया हुआ था। पर्दे पर एक इमारत, एक टावर दिखाई जा रही थी और इसकी ऊपरी मंजिल से धु आं निकल रहा था। तारिक़ ने सईद से कु छ कहां और सईद जवाब दे ही रहा था कि पर्दे के एक कोने पर एक हवाई जहाज दिखा। वी बगल के टावर से जा टकराया और आग का गीला फू ट पड़ा जिसके मु काबले लै ला जितने भी आग के गोले दे खे थे वो बौने थे । लॉबी से हरे क इं सान की एक मिलीजु ली चीख उठी।

दो से भी कम घं टों में दोनों टां वर ढह गए।

जल्दी ही टीवी स्टे शन अफ़ग़ानिस्तान और तालिबान और ओसामा बिन लादे न के बारे में बातें कर रहे थे ।

'सु ना तु मने कि तालिबान ने ओसामा बिन लादे न के बारे में क्या कहा?' तारिक़ ने पू छा।

अज़ीज़ा बिस्तर पर उसके सामने शतरं ज पर ध्यान लगाए बै ठी थी। तारिक़ ने उसे शतरं ज खे लना सिखाया था। वो त्यौरियां चढ़ाए हुए थी और अपना निचला होंठ थपथपा रही थी। वो अपने अब्बा की हरकतों की नकल कर रही थी, जो वो कोई चाल चलने का फै सला करते वक़्त अपनाता था।

जल्मै को लगी ठं ड में अब थोड़ा सु धार हुआ था। वो सो रहा था और लै ला उसके सीने पर मेंहदी लगा रही थी।

'मैं ने सु ना,' वो बोली ।

तालिबान ने एलान किया था कि वो ओसामा बिन लादे न को नहीं सौंपें गे क्योंकि वो एक मे हमान हैं जिन्होंने अफ़ग़ानिस्तान में पनाह ले रखी है । और एक मे हमान को किसी के हवाले कर दे ना पश्तू नवली कायदों के ख़िलाफ़ है । तारिक़ कड़वाहट से हं सा और लै ला ने इस हं सी में एक साया पश्तू नरिवाज़ को इस तरह तोड़े-मरोड़े जाने और लोगों के तौर-तरीकों को गलत तरीके से पे श किए जाने के ख़िलाफ़ विद्रोह को सु ना।

हमलों के कु छ दिनों के बाद लै ला और तारिक फिर से होटल की लॉबी में थे । टीवी के पर्दे पर जॉर्ज डब्ल्यू बु श का भाषण आ रहा था। पीछे एक बड़ा अमरीकी झं डा था। एक मौके पर आवाज़ कां पी और लै ला को लगा कि बु श को रुलाई आने वाली है ।

सईद अं ग्रे ज़ी बोल सकते थे और उन्होंने उन लोगों को बताया कि बु श ने अभी अभी जं ग का एलान किया है ।

'किनके ख़िलाफ़?' तारिक़ ने कहा।

'सबसे पहले तो हमारे वतन के ख़िलाफ़ ।'

'हो सकता है कि यह उतनी बु री चीज़ न हो,' तारिक़ ने कहा।

उन्होंने अभी अभी प्यारकिया था। लै ला की बग़ल में ले टे हुए उसने अपना सिर उसके सीने पर रख रखा था। उसके हाथ लै ला के पे ट पर थे । शु रुआत में जब उन्होंने सेक्स शु रू की थी तो मुश्किल आई थी। तारिक़ माफ़ी मां गता। लै ला तसल्ली दे ती। मुश्किलें अब भी थीं, लेकिन अब शारीरिक नहीं

बल्कि व्यावहारिक मुश्किलें थीं। बच्चों के साथ वो जिस कोठरी में रहते थे वो छोटी थी। बच्चे उनके नीचे खाट पर सोते थे और इसलिए बहुत कम एकां त मिल पाता था। ज़्यादातर वक़्त लै ला और तारिक़ चु पचाप प्यार करते, अपनी उत्ते जना पर काबू रखते और बच्चों के बीच में दखल दे ने की गु ंजाइश को ध्यान में रखते हुए कं बल के नीचे भी पू रे कपड़े पहने रहते । हमे शा उन्हें चादरों के सरसराने या खाट की स्प्रिंग के चरमराने की फिक्र लगी रहती। लेकिन लै ला के लिए तारिक़ के साथ होना ही इन चिंताओं से बचने का तरीका था। जब वो प्यार करते तो लै ला को लगता कि उसे किनारा मिल गया है, उसे पनाह मिल गई है । उसका यह डर कि उनका साथ एक अस्थायी सु ख है, कि जल्दी ही इसके रे शे शे बिखर जाएं गे, धीरे-धीरे हल्का पड़ गया था। जु दा हो जाने का उसका डर गायब हो गया था।

'क्या मतलब है तु म्हारा?' अब उसने कहा।

'वहां वतन में जो हो रहा है, आख़िर में इसका नतीजा उतना बु रा नहीं निकले गा।'

वतन, एक बार फिर बम गिर रहे थे । इस बार अमरीकी बम। लै ला रोज़ चादरें बदलते हुए और वै क्यु म करते हुए टीवी के पर्दों पर जं ग की तस्वीरें दे खती । अमरीकियों ने जं गी सरदारों में फिर से हथियार बां टे थे और तालिबान को खदे ड़ने तथा बिन लादे न को पकड़ने के लिए उत्तरी गठबं धन को मदद दे ना शु रू किया था।

लेकिन तारिक़ जो कह रहा था, उससे लै ला भड़क उठी। उसने उसका सिर बे रुखी से अपने सीने से हटा दिया।

'उतना बु रा नहीं? लोग मर रहे हैं, औरतें, बच्चे, बू ढ़े? फिर से घर तबाह हो रहे हैं, उतना बु रा नहीं?'

'तु म बच्चों को जगा दोगी।'

'तु म ऐसा कै से कह सकते हो?' वो तड़क उठी। 'करम में उस तथाकथित भारी गलती के बाद भी? एक सौ बे गु नाह लोग। तु म खु द उन लाशों को दे खा।

'नहीं,' तारिक़ ने कहा। उसने खु द को कोहनियों पर टिकाया और लै ला की तरफ़ दे खा। 'तु मने गलत समझा। मे रा जो मतलब था..'

'तु म नहीं जान पाओगे,' लै ला ने कहा। वो जानती थी कि उसकी आवाज़

ते ज़ हो रही है, कि वो शौहर और बीवी के बतौर पहली बार लड़ रहे हैं। 'तु म तब चले गए थे जब मु जहिदीनों ने झगड़ना शु रू किया था, याद है? पीछे मैं रह गई थी। मैं । मैं जं ग को जानती हूं । मैं ने जं ग में अपने अम्मी-अब्बू खोए हैं । अपने अम्मी-अब्बू तरिक़। और अब तु मसे यह सु ननकि जं ग उतनी बु री नहीं है?'

'मैं शर्मिंदा हूं लै ला। मैं शर्मिंदा हूं ।' उसने लै ला का चे हरा अपनी हथे लियों में लिया। 'तु म सही हो। मैं शर्मिंदा हूं । मु झे माफ़ कर दो। मे रे कहने का मतलब था शायद इस जं ग के ख़त्म होने पर कोई उम्मीद पै दा होगी, कि शायद अरसे बाद पहली बार..'

'मैं इसके बारे में और बात नहीं करना चाहती,' लै ला ने कहा। वो इस पर है रान थी उसने कै से तारिक़ को फटकारा था। वो जानती थी कि जो उसने उससे कहा था वो नामु नासिब था, क्या जं ग ने उसके अम्मी-अब्बा को भी नहीं छीन लिया था? और इस तरह उसके भीतर जो भी भड़क उठा था, वो नर्म पड़ गया। तारिक़ नर्मी से बोलता रहा और जब उसने लै ला को अपनी तरफ़ खींचा तो लै ला ने उसे ऐसा कर लेने दिया। जब तारिक़ ने उसकी बां हें और फिर उसका ललाट चू मा तो उसने उसे ऐसा कर लेने दिया। वो जानती थी कि शायद

तारिक सही था। वो जानती थी कि उसके कहने का इरादा क्या था। शायद यह ज़रूरी था। हो सकता है कि जब बु श के बम गिराने बं द हों तो कोई उम्मीद पै दा हो। लेकिन वो खु द इसे नहीं कह सकती थी। ऐसे में नहीं जब बाबी और मम्मी के साथ हुआ हादसा अफ़ग़ानिस्तान में किसी और के साथ हो रहा था। ऐसे में नहीं पीछे, वतन में जब एक मासू म लड़की या लड़का रॉके टों द्वारा यतीम बनाया जा रहा था। जैसे कि वो बना दी गई थी। लै ला इसे कबू ल नहीं कर सकी। इस पर खु श होना मुश्किल था। यह दोमुं हा और विकृ त लगा।

उस रात जल्मै खां सी से जग गया। लै ला हिल भी पाती, उससे पहले तारिक़ बिस्तर से उठ गया था। उसने अपना नकली पां व बां धा और जल्मै के पास गया। उसे हाथों में उठा लिया। बिस्तर पर से लै ला ने तारिक़ की आकृति को अं धे रे में आगे पीछे जाते दे खा। उसने कं धे पर जल्मै की सिसकी की झलक दे खी। उसके हाथ तारिक़ की गर्दन से बं धे हुए थे। उसके नन्हें पां व तारिक़ के कू ल्हों पर उछल रहे थे ।

जब तारिक बिस्तर पर लौटा तो उनमें से किसी ने कु छ नहीं कहा। लै ला उसका चे हरा छूने के लिए बढ़ी। तारिक के गाल गीले थे ।

पचास

लै ला के लिए मुर्री का जीवन आराम और चै न से भरा हुआ था। काम बहुत भारी नहीं था और छु ट्टियों के दिनों में तारिक़ बच्चों को पैट्रियाटा पहाड़ी पर चे यरलिफ्ट की सवारी के लिए या फिर पिंडी प्वाइं ट पर ले जाता जहां एक साफ़ दिन में इस्लामाबाद और रावलपिंडी का निचला हिस्सा दे खा जा सकता था। वहां वो घास पर कं बल बिछाते और खीरे के साथ कोफ्ता सैंडविच खाते और अदरक वाली ठं डी चाय पीते ।

लै ला खु द से कहती कि यह एक अच्छा जीवन था, जिसके लिए शुक्रगु ज़ार होना चाहिए। असल में यह ठीक वै सा ही जीवन था, जिसके लिए रशीद के साथ अपने अं धेरे दिनों में वो सपने दे खती थी। हर रोज़ लै ला यह बात खु द को याद दिलाती थी।

तभी जु लाई 2002 की एक गर्म रात में जब वो और तरिक़ बिस्तर में दवी हुई आवाज़ों में वतन में आ रहे बदलावों के बारे में बातें कर रहे थे। कई सारे बदलाव आए थे। गठबं धन बलों ने तालिबान को हरे क मु ख्य शहर से खदे ड़दिया था, उन्हें पकिस्तानी सरहद के पार और अफ़ग़ानिस्तान के दक्षिण और पू रव के पहाड़ों की तरफ धके लदिया था। एक अं तरराष्ट्रीय शति से ना आईएसएएफ काबु ल रवाना कर दी गई थी। दे श में अब एक अं तरिम राष्ट्रपति हामिद करज़ई थे।

लै ला ने फै सलकिया कि अब तारिक़ से कह दे ने का वक़्त आ गया है।

एक बरस पहले उसने खु शी से काबु ल से बाहर आनेलिये अपना एक हाथ दे दिया होता। लेकिन पिछले कु छ महीनों में उसे अपने बचपन का शहर बहुत याद आया था। उसने शोर बाज़ार की भीड़,भाड़ बाबर के बागीचे, चमड़े की थैलियों में पानी ढोतेभिश्तियों की पु कारों की बहुत कमी खल रही थी। उसने चिकन स्ट्रीट में कपड़ों के मोलतोल करने वालों और बोंह परवान में तरबू ज़ बे चने वालों की याद आ रही थी।

लेकिन यह महज घर की याद या अतीत से लगाव ही नहीं था, जो लै ला इनदिनों काबु ल के बारे में इतना सोचने लगी थी। उस पर बे करारी हावी हो गई थी। उसने सु ना थाकि काबु ल में स्कू ल बन रहे, सड़कें फिर से पक्की की जा रही हैं, औरतें काम पर लौट रही हैं और यहां उसका जीवन,जो अपने आप में सु खद था और वो इसके लिए कृ तज्ञता से भरी हुई थी,लेकिन यह 'जीवन उसके लिए नाकाफ़ी था। महत्वहीन था। इससे भी बु रकि बे कार था। इधर उसे मन में बाबी की आवाजें सु नाई दे ने लगी थीं। वो कह रहे तु म्हे जो चाहो वो बन सकती हो लै ला। मैं तु म्हारे बारे में ये बात जानता हूं। और मैं यह भी जानता हूंब जं गख़त्म होगी तो अफ़ग़ानिस्तान को तु म्हारी ज़रूरत पड़े गी।

लै ला को मम्मी की आवाज़ भी सु नाई दे ती। जब बाबी अफ़ग़ानिस्तान से उनलोगों के चले जाने की सलाह दे ते तो उसे मम्मी का जवाब याद आता। मैं अपने बे टों के सपनों को हक़ीकत में बदलते दे खना चाहती हूं। मैं चाहती हूंकि जब ऐसा हो, जब अफ़ग़ानिस्तान आज़ाद हो तो मैं यहां रहूंताकि लड़के दे ख सकें। वो इसे

मे री आं खों के लिए दे खें गे । लै ला के मन का एक हिस्सा अब काबु ल लौटना चाहता था, मम्मी और बाबी के लिए, ताकि वो उसकी आं खों के लिए इसे दे ख सकें ।

और फिर लै ला केलिए सबसे बड़ा सम्मोहन ये था कि वहां मरियम है । क्या मरियम ने इसकेलिए जान दी थी? लै ला खु द से पू छती। क्या उसने खु द की बलि दी ताकि लै ला एक परदे श में एक नौकरानी बन जाए? लै ला ने जो किया था, उससे शायद मरियम के लिए इससे तब तक फ़र्क नहीं पड़ता, जब तक वो और उसके बच्चे महफू ज़ और खु श थे किन्तु इससे लै ला को फ़र्क पड़ता था। अचानक, इससे काफ़ी फ़र्क पड़ता था।

'मैं घर वापस जाना चाहती हूं' उसने कहा।

तारिक बिस्तर में उठ बै ठा और उसे दे खने लगा।

लै लाफिर से इसे मु ग्ध हो गई कि वो कितना खू बसू रत है उसके ललाट का शानदार घु माव़ उसकी बां हों की सु डौल पेशियां, उसकी ख्यालों में डू बी समझदार आं खें । एक साल गु ज़र गया था और अब भी लै ला को कभी कभी ऐसे मौक़ों पर यकीन नहीं आता था कि उन्होंने फिर से एक दूसरे को पालिया था। कि वो सचमु च वहां है अपनी बीवी के साथ, कि वो उसका शौहर है ।

'वापस ? काबु ल?' उसने पू छा।'सिर्फ तभी जब तु म भी इसे चाहो'।

बनाई। 'क्या तु म यहां ु खी हो? तु म खु श दिखती हो। बच्चे भी। लै ला उठ बै ठी। तारिक़ ने बिस्तर पर थोड़ा खिसकर उसके लिए जगह

'मैं खु श हूं' लै ला ने कहा।'बे शक मैं खु श हूं ।किन्तु... हम यहां से कहां जाएं, तारिक़? हम यहाँ कब तक रहें गे? यह हमारा घर नहीं है । काबु ल हमारा घर है और वहां इतना कु छ हो रहा है इतनी सारी अच्छी चीजें

हो रही हैं । मैं इन सबका हिस्सा बनना चाहती हूं । मैं कु छ करना चाहती हूं । मैं इसमें अपनी भागीदारी निभाना चाहती हूं । तु म समझे?'

है?' तारिक ने धीरे-धीरे सिर हिलाया। 'तो तु म ये चाहती हो तु म्हें यकीन

'हां, मैं यही चाहती हूं । मु झे यकीन है कि ना यह इससे भी ज़्यादा है । मु झे महसू स होता कि है मु झे लौटना है । यहां रहना अब और सही महसू स नहीं होता।'

तारिक़ ने अपने हाथों की तरफ दे खा और फिर लै ला को दे खा।'लेकिन तभी जब तु म भी लौटना चाहो।'

तारिक़ मु स्कु राया। उसकी ललाट की शिकन दूर हो गई और एक पल को वो फिर से वही पु राना तारिक़ था, वो तारिक़ जिसके सिर में दर्द नहीं रहता था, जिसने एक बार बताया था कि साइबेरिया में नाक की रें ट ज़मीन पर गिरने से पहले बर्फ़ बन जाती है । हो सकता है कि यह उसकी कल्पना हो, लेकिन लै ला को यकीन था कि इन दिनों अभी पु राने तारिक़ की और भी झलकें दिखें गी।

'मैं?' उसने कहा। 'मैं तो तु म्हारे पीछे दुनिया के अखिरी छोर तक

जाऊं गा, लै ला ।'

लै ला ने उसे करीब खींच लिया और उसके होंठ चू म लिए। उसे यकीन था कि उसने तारिक़ को कभी इस पल से ज़्यादा प्यार नहीं किया था। 'शुक्रिया,' लै ला ने तारिक़ के ललाट पर अपना ललाट टिकाते हुए कहा।

'चलो, घर चलें,'

'लेकिन पहले मैं हे रात जाना चाहती, हूंउसने कहा।

'हे रात?'

लै ला ने उसे बात समझाई।

बच्चों को अपने-अपने तरीकों से भरोसादिलाने की ज़रूरत पड़ी। लै ला को गु स्साई हुई अज़ीज़ा के साथ बै ठना पड़ा, जिसे अब भी डरावने सपने आते, थेजो एक हफ़्ते पहले बु री तरह परे शान हो गई, थीजब पास में शादी परकिसी ने हवा में गलियां दागी थीं। लै ला को उसे समझाना पड़ाकि जब वो काबु ल लौटें गे तो वहां तलिबान नहीं होंगे, कि वहां अब कोई लड़ाई नहीं होगी और उसे फिर यतीमखाने नहीं भे जा जाएगा। 'हम सब साथ रहें गे । तु म्हारे अब्बू, मैं, जल्मै । और तु म, अज़ीज़ा। अब तु म्हें मु झसे फिर कभी भी अलग नहीं होना पड़े गा। मैं वादा करती हूं' यो अपनी बे टी को दे खते हुए मु स्कु राई ।

'जब तक कि तु म अलग होना नहीं चाहो। जब तु म किसी नौजवान से प्यार करने लगी और उसे शादी करना चाहो।'

जिस दिन वो मुर्री से रवाना हुए, जल्मै उदास और बे चै न था। उसने अल्योना की दुमा में हाथ लपे ट रखा था और उसे छोड़ने को तै यार नहीं था।

'मैं बकरी के पीछे जल्मै को नहीं छोड़ सकती म, मी' अज़ीज़ा ने कहा। 'जल्मै । हम बकरी को बस में नहीं ले जा सकते,' लै ला नेफिर समझाया।

जब तारिक़ ने उसकी बगल में घु टने को बल बै ठ कर जल्मै से कहा कि वो काबु ल में अल्योना जै सी ही एक बकरी खरीद दे गा, तब जाकर जल्मै नेहिचकते हुए उसे छोड़ा।

सईद के साथविदाई भी आं सु ओं से भरी हुई थी। अच्छी किस्मत की खातिर उसने पर कु रान पकड़े रखा ताकि तारिक, लै ला और बच्चे उसे तीन बार चू म सकें और इसके बाद उसे इतनी ऊपर उठा कि वो उसके नीचे

से गु ज़र सकें । उसने सिक को दो सू टके स और ट्रं क अपनी कार में रखयाने में मदद की। सईद ही कार चला कर उन्हें स्टे शन ले गया,जो बस के चल पड़ने पर बस पर खड़े-खड़े उन्हें हाथ हिला कर विदा किया।

पीछे की तरफ़ झुके हुए औरपिछड़ी खिड़की में सईद को ओझल होते दे खते हुए लै ला ने मन में सं दे ह से भरी फु सफु साहटें सु नीं। उसने जानना चाहा मुर्री की सु रक्षा को छोड़ कर क्या वो बे वकू फ़ बन गए हैं एक ऐसी जगह जाना, जहां उसके अम्मी-अब्बू और भाई तबाह हुए, जहां बमों के धु एं बस अभी-अभी बै ठने शु रु हुए हैं'

और तभी अपनी यादों की अं धे री चक्करदार तहों में से दो चीखें उठीं, जो बाबी के लिए काबु ल से विदाई का गीत थीं :

कोई गिन नहीं सकता इसकी छतों पर चमकते चां दों को या इसकी दीवारों के पीछे हजारों दमकते आफ़ताबों को लै ला अपनी सीट से टिक कर बै ठ गई और गीली पलकें झपकाने लगी।

काबु ल इं तज़ार कर रहा था। उसे ज़रूरत थी। घर वापसी का ये सफ़र एक सही काम था।

लेकिन पहले एक अखिरी विदाई कही जानी बाक़ी थी।

अफ़ग़ानिस्तान में जं ग ने काबु ल से हे रात और कां धार को जोड़ने वाली सड़कों को तबाह कर दिया था। अब हे रात जाने का सबसे आसान रास्ता ईरान के मसहद से गु ज़रता था। लै ला और उसके साथी वहां के वल रात भर रहे । उन्होंने रात एक होटल में गु ज़ारी और अगली सु बह उन्होंने एक और बस पकड़ी।

मसहद एक भीड़भाड़ वाला, चहल पहल से भरा शहर है । लै ला ने गु ज़रते हुए कई मस्जिदें और चे लो कबाब रेस्टोरें ट दे खे । जब बस आठवीं शिया इमाम, इमाम रज़ा की दरगाह से होकर गु ज़री तो लै ला को

इसकी चमकती हुई टाइलें, मीनारें और इसकी शानदार सु नहरी गु ंबद दे खनेलिए अपनी गर्दन तानी पड़ी। इन सबको बड़े करीने से और प्यार से सं जो कर रखा गया था। उसे अपने वतन के बु द्धों का ख्याल आया। यो विशालकाय बु द्ध अब धू ल मेंमिल गए थे और बमियान बादी में हवा के साथ उड़तेफिर रहे थे ।

ईरान-अफ़ग़ानिस्तान सरहद पर बस के सफ़र में करीब दस घं टे लग

गए। ज्यों-ज्यों वो अफ़ग़ानिस्तान के करीब आते गए ज़मीन ज़्यादा वीरान,बं जर होती गई। सरहद पार करके दे रात आने के कु छ ही दे र पहले वो एक अफ़ग़ानी शरणार्थीशिविर से होकर गु ज़रे । लै ला किलिए यह एक पीली धू ल, काले तं बु ओं और थोड़े से ढां चों की एक धुं धली सी जग़ह,जहां करुगे टे ड्टील की चादरों से बनाया गया था। उसने सीट की दूसरी तरफ़ हाथ बढ़ा कर तारिक़ का हाथ थाम लिया।

हे रात में ज़्यादातर सड़कें पक्की थींजिनके दोनों तरफ़ खु शनु मा सनोबर के पे ड़ों की कतारें थींनिसयूपल पार्क और लाइब्रेरियां बनाई जा रही थीं, आं गन जतन से सं वारे गए थे,इमारतें ताजा-ताज़ा रं गी गई थीं। ट्रैफिक लाइटें काम कर रही थीं और लै ला केलिए सबसे है रानी की बात ये थीकि बिजली लगातार आ रही थी। लै ला ने सु ना थाकि हे रात के सामं ती जं गी सरदार इस्माइलं खान नेड्रग्स की भारी कमाई से हे रात कोफिर से बनाने में मदद की थी। खान यह रकम अफ़ग़ानी-ईरान सरहद पर वसू लता था और काबु ल का कहना था कि यह खान का नहीं बल्कि कें द्रीय हुकू मत का पै सा था। उन्हें मु वफ्फक होटल ले जाने वाले टै क्सी ड्राइवर ने जब इस्माइल खान का नामलिया तो उसमें आदर और डर दोनों का लहजा शमिल था।

मु वफ्फक में दो रातें गु ज़ारने की कीमत उनकी बचत का करीब पां चवांसा थी, लेकिन मसहद से सफ़र लं बा और थकाऊ था और बच्चे हल्कान हो गए थे । डे स्क पर मौजू द युवामु ने कमरे की चाबियां उठाते हुए तारिक़ को बताया कि मु वफ्फक पत्रकारों और एनजीओ कार्यकर्ताओं में बहुत लोकप्रिय था।

'बिन लादे न एक बार यहां सोए थे,उसने शे खी मारी।

कमरे में दो बिस्तर थे और एक बाथरूम था जिसमें ठं डा पानी आ रहा था। बिस्तरों के बीच की दीवार पर ख्वाजा अब्दुल्लाह अं सारी की शायरी पें ट की गई थी। खिड़कियों से लै ला को नीचे भीड़ से भरी हुई सड़क और सड़क के पार पार्क दिखाई दिया, जिसमें फू लों की घनी क्यारियों के बीच से निकलती हल्के रं ग की ईंटों की राहें थीं। टीवी के आदी हो गए बच्चे इस पर निराश थे कि कमरे में टीवी नहीं था। हालांकि जल्दी ही लै ला और तरिक़ भी बिस्तर पर ढह गए। लै ला तरिक़ की बां हों में खर्राटे ले ते हुए सो गई थी। बस रात में एक बार उसकी नींद तब खु ली जब वो एक सपने से जग पड़ी थी। उस

सपने को वो याद नहीं कर पाई।

अगली सु बह चाय और ताज़े ब्रे ड, किंस के मु रब्बे और उबले हुए अं डों के नाश्ते के बाद लै ला ने एक टै क्सी खोजी ।

- 'पक्के तौर पर तु म नहीं चाहतीं कि मैं तु म्हारे साथ आऊं' तारिक़ ने पू छा। अज़ीज़ा ने तारिक़ का हाथ पकड़ रखा था। जल्मै ने नहीं पकड़ा था लेकिन वो भी उसके करीब खड़ा उसके कू ल्हों से अपना एक कं धा टिकाए हुए था।

'मु झे यकीन है' ।

'मु झे फिक्र हो रही है ।'

'मैं ठीक से रहूं गी' लै ला ने कहा। 'वादा करती हूं । बच्चों को बाज़ार ले जाओ। उन्हें कु छ ख़रीद दो।'

जब टै क्सी चली तो जल्मै रोने लगा और जब लै ला ने मु ड़ कर दे खा तो उसने कि खो तारिक़ की तरफ़ हाथ बढ़ा रहा है । इस बात से लै ला के दिल को सु कू न और रु ह दोनों पहुं चा कि उसने तरिक़ को कबू ल करना शु रु कर दिया था।

'आप हे रात से नहीं हैं ड्राइवर ने कहा।

उसके काले कं धों तक लं बे बाल थे । लै ला ने पाया कि यह वापस खदे ड़े जा चु के तालिबान को दिया जाने वाला एक आम जवाब था। इसके अलावा उसकी मूं छों पर दाहिनी तरफ़ एक जख्म का निशान था। उसकी तरफ़ के शीशे पर एक फोटो टे प की चिपकाया हुआ था। यह गु लाबी गालों वाली एक नन्हीं लड़की का फोटो था, जिसके बाल बीच से बां ट कर दो चोटियों नें गूं थे गए थे ।

लै ला ने उसे बताया कि वो पिछले साल पकिस्तान में रही थी और काबु ल लौट रही थी।'दे ह्माजं ग।'

शीशे के पीछे उसने बर्तन बनाने वालों को जगों में पीतल के हैं डल जोड़ते हुए और जीनसाज़ों को चमड़े के टुकड़े धू प में सू खने के लिए डालते हुए दे खा।

'बिरादर, क्या आप यहां लं बे समय से रह रहे हैं?' लै ला ने पू छा।

'ओह, अपनी पू री जिंदगी। मैं यहीं पै दा हुआ। मैं ने हर चीज़ दे खी है । आपको वह बगावत याद है

लै ला ने बताया कि उसे याद है, लेकिन वो बोलता रहा।

'यह मार्च, 1979 की बात है । सोवियतों के हमला करने से करीब नौ महीने पहले की बात है । कु छ गु स्साए हुए हे रतियों ने कु छ सोवियत सलाहकारों की हत्या कर दी थी, इसलिए सोवियतों ने तोपें और हे लीकॉप्टर भे जे और इस जगह को धू ल में मिला दिया। हमशीरा, तीन दिनों तक उन्होंने शहर पर गोलीबारी की। उन्होंने

इमारतें ढहा दीं, मीनारों में से एक को तोड़ डाला, हज़ारों लोगों को मार डाला। हज़ारों। उन तीन दिनों में मैं ने अपनी दो बहनें खोईं। उनमें से एक बारह साल की थी। उसने शीशे पर लगे फोटो को थपथपाया। 'ये वही है।'

'मु झे दुख है,' लै ला ने कहा। वो इस पर है रान थी कि कै से हरे क अफ़ग़ान कहानी में मौत और नु क़सान और कल्पना से परे गम के निशान मिलते हैं। और तब भी वो दे खती है कि लोग जीने और आगे बढ़ने के तरीके खोज ले ते हैं। लै ला ने अपनी जिंदगी और उन सारे हादसों के बारे में सोचा जो उसके साथ घटे, और उसे बात पर अचरज हुआ कि वो भी बच गई थी, कि वो जिंदा थी और इस टै क्सी में बै ठी हुई इस आदमी की दास्तान सु न रही थी।

गु ल दामन मिट्टी और फू स के बने सपाट कोल्बाओं के बीच खड़े हारदीवारियों वाले कु छे क घरों का एक गां व था। कोल्बाओं के बाहर लै ला ने धू प में सी औरतों को खाना बनाते दे खा। कामचलाऊ चू ल्हों में चलती लकड़ी पर रखे काले पड़ गए बड़े तवों से उठ रही भाप की बू ं दें उनके चे हरों पर जमा थीं। खच्चर नां द में खा रहे थे। गिद्धों के पीछे भागते बच्चे अब टै क्सी के पीछे भागने लगे थे। लै ला ने पत्थरों से भरा ठे ला धके ल रहे आदमियों को दे खा। वो रुक कर कार को गु ज़रते हुए दे खने लगे। ड्राइवर ने गाड़ी घु माई और वो एक कब्रिस्तान की बगल से गु ज़रे जिसके बीच में एक जर्जर मकबरा था। ड्राइवर ने उसे बताया कि उसमें गां व के एक सू फी दफ्न थे।

एक पवनचक्की भी थी। इसकी स्थिर, जं ग के रं ग के पं खों के साए में तीन छोटे बच्चे बै ठे मिट्टी की खे ल रहे थे। ड्राइवर ने गाड़ी किनारे की और खिड़की से बाहर सिर निकाला। जवाब उन तीनों में से सबसे बड़े दिख रहे लड़के ने दिया। उसने सड़क पर पीछे दूर एक घर की तरफ़ इशारा किया।

ड्राइवर ने उसे शुक्रिया कहा और कार को बै कगियर में डाला। उसने चहारदीवारी वाले एकमंजिला मकान के बाहर गाड़ी को रोका।

लै ला ने दीवारों के ऊपर निकले अं जीर की फुनगियों को दे खा, जिसकी कु छ डालें बाहर की ओर निकली हुई थीं।

'मु झे दे र नहीं लगे, गी,' उसने ड्राइवर से कहा।

जिस अधे ड़ आदमी ने दरवाज़ा खोला, वो छोटे कद का, दुबला और लाल-भू रे बालों वाला था। उसकी दाढ़ी लं बी थी और उसमें कु छ स्याह बालों की लटें थीं। उसने अपनी पी रहन-तु बन के ऊपर चापन पहन रखी थी।

उन्होंने एक दू सरे को सलाम अलै कु म कहा।

'क्या ये मु ल्ला फै जु ल्ला का घर है?' लै ला ने कहा।

'हाँ । मैं उनका बे टा, हू ं मज़ा। क्या मैं आपके लिए कु छ कर सकता हू ं हमशीरा ?'

हू ं । 'मैं यहां आपके अब्बा की एक पु रानी दोस्त रियम के सिलसिले में आई

हमज़ा ने पलकें झपकाईं। उसके चे हरे पर उलझन का एक भाव आया मरियम...'

'जलील खान की बे टी ।'

उसने फिर से पलकें झपकाईं। फिर उसने अपने हथे ली अपने गालों से लगाई और उसका चे हरा मु स्कान से रोशन हो उठा, जिससे उसके टू टे हुए और ख़राब दां त दिख गए। 'ओह!' उसने कहा। यह एक छोड़ी हुई सां स की तरह, ओहहहहहह की तरह सु नाई दिया। 'ओह! मरियम! क्या आप उनकी बे टी हैं? क्या वो' वो अब अपनी गर्दन घु मा कर उत्सु कता से लै ला के पीछे दे ख और तलाश रहा 'क्या वो यहां हैं? इतना लं बा अरसा गु ज़र गया! क्या मरियम यहां हैं?'

'मु झे आशं का है कि वो गु ज़र चु की हैं ।

हमजा के चे हरे की मु स्कान बु झ गई।

एक पल को वो वहीं दहलीज पर खड़े रहे । हमज़ा ज़मीन पर ताक रहा था। कहीं कोई गधा रें का।

'भीतर आइए,' हमज़ा ने कहा। उसने दरवाज़ा पू रा खोलदिया। 'मे हरबानी करके भीतर आइए '।

वो कम साजो-सामान वाले एक कमरे में शॉ पर बै ठे । फ़र्श पर बै ठने केलिए एक है राती कालीन और गोटे दार कु शन थे । दीवार पर मक्का की एक

मढ़ी हुई तस्वीर थी। वो एक खु ली हुईखिड़की के पास बै ठे । उन दोनों के बीच चौकोर धू प का एुकड़ा था। लै ला ने पूरे कमरे में औरतों के फु सफु साने की आवाजें सु नीं। एक नं गे पां वों वाला छोटा लड़का उनके बीच में ग्रीन टी औरपिस्ते रख गया। हमज़ा ने उसकी तरफ़सिर से इशाराकिया।

'मे रा बे टा'।

बच्चा बिना बोले चला गया।

'तो मु झे बताइए,' हमज़ा ने थके हुए लहजे में कहा।

लै ला ने बताया। उसने उसे हर चीज़ बताई। इसमें उससे ज़्यादा वक़्त लगा,जितनी उसने कल्पना की थी। आखिर में उसे अपने को सं यत बनाए रखने केलिए जू झना पड़ा। यह अब भी, एक बरस बाद भी मरियम के बारे में बात करना आसान नहीं था।

उसकी बात पू री होने के काफ़ी दे र बाद तक हमज़ा ने कु छ नहीं कहा। वो अपनी तश्तरी में-धीरे-धीरे चाय के प्याले को घु माता रहापहले एक तरफ़, फिर दूसरी तरफ ।

'मे रे अब्बाउन्हें सु कू न हासिल हो, मरियम को बहुत प्यार करते थे' आखिरकार वो बोला । 'पता है, उन्होंने ही तब उनके कान में अज़ान पढ़ी थीजब वो पै दा हुई थीं। वो हर हफ़्ते उनसेमिलने जाते थे । उन्होंने कभी नागा नहीं किया। कभी कभी वो अपने साथ मु झे भी ले जाते । वहीं उनके उस्ताद थे लेकिन वो उनके दोस्त भी थे । मे रे अब्बा एक बड़ेदिल वाले आदमी थे । जलील खान ने जब उन्हेंर द कर दिया तो इसने उन्हें करीब-करीब तोड़ डाला।'

'मु झे आपके अब्बा के बारे में सु न कुरहुआ। उन पर खु दा की मे हरबानी हो '।

हमज़ा ने शुक्रिया जताते हुएसिर हिलाया। 'वो बहुत उम्र होने तक जीए। असल में वो जलील खान के बाद तक जीए। हमने उन्हें गां व के क़ब्रिस्तान में दफनाया। ये जगह उससे दूरनहीं है, जहां मरियम की अम्मी को दफनाया गया था। मे रे अब्बा एक प्यारेप्यारे आदमी थे यकीनन वो जन्नत में गए होंगे '।

लै ला ने अपना प्याला रखदिया। 'क्या मैं आपसे कु छ पू छ सकती?' हूं

'बे शक ।

'क्या आप मु झेदिखा सकते हैं' उसने कहा। 'मरियम जहां रहती थीं। क्या आप मु झे वहां ले जा सकते हैं'

ड्राइवर कु छ और दे र इं तज़ार करने को राजी हो गया।

हमज़ा और लै ला गां व सेनिकले और गु ल दामन और हे रात को जोड़ने वाली सड़क पर नीचे की तरफ़ पै दल चले । पं द्रह या इतने हीमिनटों के बाद हमज़ा ने सड़क के दोनों तरफ़ पसरी लं बी घास में एक सं-कीरी खाली जगह की ओर इशारा किया।

'ऐसे आप वहां जा सकती हैं' उसने कहा। 'एक रास्ता है।'

रास्ता उबड़-खाबड़, घुमावदार, अंधेरा और छोटा था और पेड़ों के नीचे से होकर जाता था। लैला और हमज़ा उस रास्ते पर चल रहे थे और घास की लंबी पत्तियां हवा से लैला के सिर पर टकरा रही थीं। उनके दोनों तरफ़ हवा में झूमते हुए जंगली फूल खिले हुए थे, कुछ मुड़ी हुई पंखुड़ियों वाले लंबे फूल थे तो कुछ, नीचे बड़ी पत्तियों वाले फूल। यहां-वहां नीची झड़ियों में से कुछ चीथड़े बटरकप झांक रहे थे। लैला को ऊपर स्वैलोचिड़ियों की चहचह सुनाई पड़ी और नीचे लगातार टिट्टिड बोल रहे थे।

इस तरह वो पहाड़ी की तरफ़ चढ़ान पर दो सौ गज या इससे ज़्यादा चले। इसके बाद राह समतल हो गई और ज़मीन के एक सपाट टुकड़े में मिल गई। वो सांस लेने के लिए रुके। लैला ने अपनी ललाट पर से आस्तीन से पसीना पोंछा और अपने चेहरे के सामने मंडराते मच्छरों के झुंड को हाथों से भगाया। वहां उसने क्षितिज में नीचे खड़े पहाड़ों को देखा, कुछ कास के पौधे, कुछ पोपलार, तरह-तरह की जंगली झाड़ियां देखीं जिनके नाम वो नहीं जानती थी।

'यहां धारा हुआ करती थी,' हमज़ा ने हल्के से हांफते हुए कहा, 'लेकिन अब इसे सूखे हुए बहुत वक़्त हो गया है।'

उसने कहा कि वो वहां इंतज़ार करेगा। उसने बताया कि वो धारा की सूखी हुई धारा की पेटी को पार करे और पहाड़ों की तरफ़ बढ़ती जाए।

'मैं यहीं इंतज़ार करूंगा,' उसने एक पोपलार के नीचे एक चट्टान पर बैठते हुए कहा, 'आप जाइए।'

'मैं नहीं।'

'फिक्र मत कीजिए। अपना वक़्त लीजिए। जाइए, हमशीरा।'

लै ला ने उसे शुक्रिया कहा। एक पत्थर से दूसरे पत्थर पर क़दम रखते हुए उसने धारा की पे टी को पार किया। उसने चट्टानों के बीच में सोडा कीटी हुई बोतलें, जं ग लगे कैन, लोहे के जं ग लगे डिब्बे दे खे जिनके जिंक के ढक्कन ज़मीन में आधे धं से हुए थे ।

वो पहाड़ों की तरफ़, वीपिंग विलो यानी बड़ी जटाओं वाले बे दमजनू की तरफ बढ़ी। यहीं से वो अब दे ख सकती थी। हवा के हर झोंके के साथ उसकी लं बी लटकती हुई जटाएं हिल रही थीं। सीने में उसका दिल धड़क रहा था। वो दे ख रही थी कि मरियम ने जै सा बताया था, बे दमजनू उसी तरह से मौजू द हैं । चारों तरफ़ से एक गोल घे रे के बीच में एक खाली सपाट जगह थी। लै ला अब तेज़ी से चल रही थी, वो लगभग दौड़ रही थी। उसने कं धे के पीछे से दे खा और फिर यह हमज़ा अब एक छोटी सी आकृति भर रह गया है । पे ड़ों की गहरी हरियाली के आगे उसके चापन का रं ग एक धब्बे के रूप में दिख रहा था। उसके पां व एक पत्थर से टकराए और वो लगभग गिरते-गिरते बची। इसके बाद उसने फिर से अपने कदमों को सं भाला। बाक़ी रास्ते उसने अपना पजामा ऊपर उठाए रखा। जब वो बे दमजनु ओं तक पहुं ची तो वो लगभग हां फ रही थी।

मरियम का कोल्बा अब भी वहां था।

वहां पहुं च कर लै ला ने दे खा कि अके ली खिड़की का चौखटा खाली था और दरवाज़ा नहीं था। मरियम ने मुर्गियों के एक दड़बे, एक तं दू और लकड़ी के एक आउटहाउस के बारे में भी बताया था। लेकिन लै ला को उनका कोई निशान नहीं मिला। वो कोल्बा के दखिले पर रुक गई। वो भीतर मक्खियों की भु नभु नाहट सु न सकती थी।

भीतर जाने केलिए उसे एक बड़े मकड़ी के जाले से बचते हुए जाना पड़ा। भीतर हल्का अं धे रा था। लै ला को अपनी आं खों को दे खने लायक होने दे नेलिए कु छ पल इं तज़ार करना पड़ा। जब वो दे खने लायक हुईं तो उसने पाया कि उसने जितनी कल्पना की थी, भीतर उससे भी कम जगह थी। फर्श के तख्तों में से महज़ एक का ही आधा सड़ रहा, टूटा हुआ हिस्सा वहां बचा था। उसने कल्पना की कि बाक़ी को जलावन के लिए उखाड़ लिया गया था। फर्श पर अब सू खी हुई पत्तियां, टूटी हुई बोतलें, च्यू इं ग गमों के बे कार रै पर

जं गली मशरूम, पु राने, पीले पड़ गए सिगरे ट के टु कड़े पड़े थे। लेकिन ज़्यादातर घास थी, जो कु छ तो अबाध और कु छ अड़ियल तरीके से दीवारों की आधी ऊं चाई तक उगी हुई थी।

पं द्रह बरस, लै ला ने सोचा। इस जगह पर पं द्रह बरस।

लै ला दीवार से पीठ लगाए हुए बै ठ गई। उसने खिड़कियों से सरसराती हुई बहती हवा को सु ना। छत पर और भी मकड़जाले तने हुए थे। किसी ने एक दीवार पर स्प्रे से कु छ लिखा था, लेकिन उसका ज़्यादातर हिस्सा झड़ गया था और जो लिखी गई बात लै ला नहीं समझ पाई। तब लै ला को समझ में आया कि अक्षर रूसी भाषा के थे। एक कोने में एक खाली घोंसला था और दू सरे कोने में, जहां दीवार छत से मिल रही थी, एक चमगादड़ उल्टा लटक रहा था।

लै ला ने अपनी आं खें बं द कर लीं और कु छ दे र वहीं बै ठी रही।

पाकिस्तान में कभी-कभी मरियम के चे हरे की बारीकियां याद करने में मु श्किल आती थी। कई बार ऐसा भी होता था, जब मानो ज़बान पर आई बात की तरह मरियम का चे हरा याद ही नहीं आता। लेकिन अब, यहां इस जगह पर मरियम को आं खों की पलकों के पीछे बु लाना आसान था। उसकी निगाह की नर्म चमक, उसकी लं बी ठोढ़ी, उसकी गर्दन की खु रदरी चमड़ी, भिंचे हुए होंठो वाली मु स्कान। यहां, लै ला अपने गाल मरियम की गोद की नर्मी में फिर से रख सकती थी, मरियम को आगे-पीछे झू लते हुए महसू स कर सकती थी, वो उसे कु रान की आयतें पढ़ते हुए महसू स कर सकती थी। वो उन शब्दों को, मरियम की दे ह में, उसके घु टनों में, और उसके अपने कानों में गू ंजते हुए महसू स कर सकती थी।

फिर एकाएक घास गायब होनी शु रू हुई, मानो किसी ने उनकी जड़ें पकड़ कर उन्हें ज़मीन के नीचे खींच लिया हो। वो नीचे धं सती गईं, धं सती गई जब तक कि कोल्बा की मिट्टी ने अख़िरी नु कीली पत्ती तक नहीं निगल ली। मकड़जाले किसी जादू से सिमटते हुए अपने में समा गए। चिड़ियों का घोंसला खु द ब खु द बिखर गया, तिनके एक एक कर खु ले और उड़ते हुए कोल्बा से बाहर चले गए। एक अदृश्य पोछे ने दीवार पर से रूसी इबारत को मिटा दिया।

फर्श के तख्ते लौट आए। लै ला को खाटों का एक जोड़ा, लकड़ी की एक टे बल, दो कुर्सियां, कोने में लोहे का एक स्टोव और दीवारों से लगे खाने

दिखे, जिन पर मिट्टी के बर्तन और तसले, काली पड़ चु की चाय की एक के तली प्याले और चम्मच रखे हुए थे। उसे बाहर मुर्गियों का कु ड़कु ड़ाना और दूध धारा की कलकल सु नाई दी।

नन्ही मरियम लकड़ी की टे बल के पास बै ठी ते ल के दीए की रोशनी में एक गुड़िया बना रही थी। वो कु छ गु नगु ना रही थी। उसका चे हरा चिकना और ताज़ा था, उसके बाल धु ले हुए थे और उन्हें पीछे की तरफ़ कं घी किया हुआ था। उसके सारे दां त मौजू द थे।

लै ला ने मरियम को गुड़िया के सिर पर सू त के धागे चिपकाते दे खा। कु छ बरसों में यह छोटी लड़की औरत बने गी जो ज़िंदगी के सामने छोटी-छोटी मां गें पे श करे गी, जो कभी दूसरों पर बोझ नहीं बने गी, कभी यह ज़ाहिर नहीं करे गी कि उसने भी गम उठाए थे, निराशाएं झे ली थीं, सपने दे खे थे, जिनका मखौल उड़ा दिया गया था। एक ऐसी औरत जो नदी की पे टी में पड़ी एक पत्थर की तरह होगी, बिना किसी शिकायत के सब कु छ चु पचाप सहते हुए। उसकी शालीनता उस पर आई उथलपु थल से ख़त्म नहीं होगी, बल्कि उनके बीच ही वह आकार ले गी। लै ला इस नन्हीं लड़की की आं खों, में, उसके भीतर की गहराई में कु छ दे ख चु की थी, जिसे न तो रशीद और न ही तलिबान तोड़ पाने के काबिल थे। एक चट्टान के टु कड़े की तरह सख़्त और अडिग। ऐसी चीज़ जो आख़िर में उसकी नाकामी की वजह और लै ला की निजात बने गी।

नन्हीं लड़की ने सिर उठाया। गुड़िया को रख दिया। मु स्कु राई।

लै ला जो?

लै ला की आं खें झटके से खु ल गईं। वो धक से रह गई थी और उसका शरीर आगे की तरफ़ उठ गया था। उसने उस चमगादड़ को चौंका दिया था, जिसने कोल्बा के एक सिरे से दूसरे सिरे तक चक्कर लगाया और

खिड़की से बाहर निकल गया। उसके पं ख किताब के फड़फड़ाते हुए पन्नों की तरह थे । लै ला अपने पां वों पर उठी, अपने पजामे पर से सू खी हुई पत्तियों को झाड़ा। वो कोल्वा से बाहर निकल आई। बाहर रोशनी ने अपनी जगह थोड़ी सी बदल ली थी। हवा घास को काटती हुई और बे दमजनू की टहनियों को आपस में टकराते हुए बह रही थी।

खाली जगह से जाने से पहले लै ला ने कोल्बा को आखिरी बार दे खा, जहां मरियम सोई थीं, खाना खाया था, सपने दे खे , अलील के लिए सां स

रोके इं तज़ार किया था। झुकी हुई दीवारों पर वे दमजनु ओं के टेढ़े-मेढ़े छापे बन रहे थे जो हवा के हर झोंके के साथ बदल जाते थे । सपाट छत पर एक कौवा आकर बै ठ गया। उसने किसी चीज़ में चोंच मारी, कां व-कां वकिया और उड़ गया।

'अलविदा, मरियम ।'

और इसी के साथ, इस वात से अनजान कि वो रो रही है, वो घास के वीच से दौड़ने लगी।

उसने हमज़ा को अब भी चट्टान पर बै ठे हुए पाया। जब हमज़ा ने उसे दे खा तो खड़ा हो गया।

कु छ है '।'चलिए, लौटते हैं,' उसने कहा। फिर, 'मे रे पास आपको दे ने के लिए

लै ला ने सामने के दरवाज़े के पास हमज़ा का इं तज़ार किया। कु छ दे र पहले जिस लड़के ने उसे चाय लाकर दी थी, वो अब अं जीर के एक पे ड़ के नीचे एक औरत को पकड़े हुए बे सब्री से उसे दे ख रहा था। लै ला को दो चे हरे दिखे, एक उम्रदराज़ औरत का और हिजाब में एक छोटी लड़की का चे हरा, जो एक खिड़की के पीछे से उसे सं कोच के साथ दे ख रहे थे ।

घर का दरवाज़ा खु ला और हमज़ा दिखा। उसने एक डिब्बा ले रखा था।

उसने उसे लै ला को दिया।

'जलील खान ने अपने मरने से महीना भर या इससे पहले इसे मे रे अब्बा को दिया था।' हमज़ा ने कहा। 'उसने मे रे अव्वा से कहा कि इसे वो तब तक सं भाल कर रखें जब तक वो इसे ले ने नहीं आती। मे रे अब्बा ने इसे दो वरसों तक रखा फिर, अपने गु ज़रने के ठीक पहले उन्होंने इस मुझे और मरियम के लिए सं भाल कर रखने को कहा। लेकिन वो.

.. आप जानती हैं, कभी नहीं आई।'

लै ला ने उस टिन के अं डाकार डिब्बे को दे खा। यह एक पु राने चॉकले ट के डिब्बे जै सा था। यह एक पीले भूरे रं ग का फीकी पड़ गई चमक वाला डिब्बा था, जिस पर एक ढक्कन जड़ा हुआ था। उसकी बगल की तरफ़ हल्का जं ग था और ढक्कन के सामने की रिम में दो नन्हें गहे थे । ले ला ने उसे खोलने की कोशिश की, लेकिन उसकी कुं डी में ताला लगा था।

'इसमें क्या है?' उसने पू छा ।

हमज़ा ने एक चाबी उसकी हथे ली पर रख दी। 'मे रे अब्बा ने इसे कभी

नहीं खोला। न ही मैं ने । मु झे लगता है कि यह खु दा की मर्जी है कि इसे आप खोलें '।

तारिक़ और बच्चे अभी होटल नहीं लौटे थे ।

लै ला बिस्तर पर बै ठी थी और डिब्बा उसकी गोद में था। उसके भीतर एक हिस्सा चाहता था कि डिब्बे को बिना खोले रहने दिया जाए और जलील की इच्छा को एक राज़ ही रहने दिया जाए। लेकिन आख़िर में

कौतू हल मज़बू त सम्मित हुआ। उसने चाबी लगाई। वो थोड़ाकिरकिराई, हिली लेकिन उसने डिब्बा खोल लिया।

भीतर तीन चीजें थीं एकलिफाफा, कपड़े का एक थै ला और एक वीडियोकै से ट ।

लै ला ने टे लिया और नीचे रिसे प्शन डे स्क पर गई। उसे बुर्जुआर क्लर्क से, जिसने पिछले दिन उनका स्वागत किया था, पता लगा कि होटल में एक ही वीसीआर है और वो इसके सबसे बड़े सु ईट में है । सु ईट इस पल खाली है और वो उसे वहां ले जाने को राजी हो गया। उसने डे स्क को एक मूं छों वाले नौजवान के ऊपर छोड़ा, जो से ल्यु लर फोन पर बातें कर रहा था।

बू ढ़ा क्लर्क लै ला को दूसरी मंजिल पर एक लं बे लियारे के अं त में एक दरवाज़े तक ले गया। उसने ताला खोला और उसे भीतर आनेदिया। लै ला की आं खों ने एक कोने में टीवी खोज ली। सु ईट में उसने और किसी चीज़ पर गौर नहीं किया ।

उसने टीवी और वीसीआर चालूकिया। टे प उसने वीसीआर में लगाया और प्ले बटन दबाया।दर्पाकु छ पलों तक खाली रहा, और लै ला को समझ में नहीं आयाकि जलील ने एक खाली टे प सियम को दे ने के लिए इतनी ज़हमत क्यों उठाई। लेकिन तभी सं गीत शु रु हुआ और पर्दे पर तस्वीरें आने लगीं।

लै ला ने त्यौरियां चढ़ाईं। वो एक या दोमिनटों तक दे खती रही। फिर उसने स्टॉप बटन दबा कर और टे प को आगे बढ़ाया औरफिर से प्ले दबाया। वहींफ़िल्म चल रही थी।

बू ढ़ा आदमी है रानी भरी नज़र से लै ला को दे ख रहा था।

वो फ़िल्म वाल्ट डिज़्नी की पिनोच्चियो थी। लै ला समझ नहीं सकी। तरिक़ और बच्चे छह बजे के ठीक बाद होटल लौटे । अज़ीज़ा दौड़ी हुई लै ला के पास गई और उसने कान कीबालियां उसेदिखाई, जिन्हें तारिक़ ने

उसके लिए खरीदा था। चां दी की दोनों बलियों पर तितलियां रं गी हुई थीं। जल्यै ने एक फु लाने वाली डॉल्फिन पकड़ रखी थी, जिसकी थू थन दबाने पर वो बज उठता था।

'कै सी हो?" तारिक़ ने उसके कं धों केगिर्द वर्हि लपे टते हुए कहा।

'मैं ठीक हूं' लै ला ने कहा।'मैं तु म्हें बाद में बताऊं गी।

खाने केलिए वो पास के एक कबाब घर गए। यह एक छोटी सी, चिपचिपी, प्लास्टिक के टे बलक्लॉथों वाली, धु एं और शोर से भरी हुई जगह थी। लेकिन गोश्त शानदार और नम था और रोटी गर्म थी। इसके कु छ दे र बाद वो सड़क पर टहले । तारिक़ ने सड़क केकिनारे एककियोस्क से बच्चों को गु लाब जल के आइसक्रीम खरीद कर दिए। उन्होंने उसे एक बें च पर बै ठ कर खाया। उनके पीछे ढलती शाम कीलिमा के बरअक्स काली पहड़ियां दिख रही थीं। हवा हल्की गर्म थी और उसमें दे वदार की महक़ भरी हुई थी।

लै ला पहले हीलिफाफा खोल चु की थी, जब वो वीडियोटे प दे ख कर कमरे में लौटी थी। इसमें हाथ से लिखा हुआ एक ख़त था, जिसे धरियों वाले पीले काग़ज़ पर नीली स्याही सेलिखा गया था।

इसमें लिखा था :

13 मई, 1987

मे री प्यारी मरियम :

दुआ करता हूं कि जब तु म्हें यह ख़त मिले, तु म से हतमं द होओ।

जै साकि तु म्हें पता है,मैं एक महीना पहले तु मसे बात करने काबु ल आया था,लेकिन तु म मु झसे नहीं मिलीं। मैं निराश हुआ था लेकिन तु म्हें दीप नहीं दे सका। तु म्हारी जगह मैं होता तो शायद मैं ने भी यही

किया होता। मैं ने तु म्हारी कृ पा का सु ख अरसा पहले खो दिया था और इसके लिए मैं के वल खु द को ही दोष दे सकता हूं । लेकिन अगर तु म यह ख़त पढ़ रही हो, तब तु मने वो व्रत पढ़ा होगा जिसे मैं तु म्हारे दरवाज़े पर छोड़ आया था। तु मने यह ख़त पढ़ा और तु म मु ल्ला फै जु ल्ला से मिलने आईं जै सा करने को मैं ने तु म्हें कहा था। मैं इसके लिए तु म्हारा शुक्रगु जार हूं मरियम जो कि तु मने ऐसा किया। मैं तु मसे कु छ बातें कह पाने के इस मौके के लिए शुक्रगु ज़ार हूं ।

कहां से शु रू करूं

हमारी आखिरी बातचीत के बाद से तु म्हारे अब्बा ने बहुत गम झे लाहिय मरियम जो। तु म्हारी सौते ली अम्मी अफसूं 1979 बगावत के पहले दिन ही मारी गईं। उसी दिन एक आवारा गोली ने तु म्हारी बहन नीलोफर को मार डाला। मैं अब भी उसे दे ख सकता, हूं अपनी नन्हीं नीलोफर को मे हमानों को प्रभवित करने के लिए सिर के बल खड़ी होते दे ख सकता हूं । तु म्हारा भाई फरहाद 1980 में जिहाद में शमिल हुआ। सोवियतों ने हे लमं द के ठीक बाहर उसे मार डाला। मैं उसकी लाश तक नहीं दे ख पाया। मु झे नहीं पता तु म्हारे अपने बच्चे हैं या नहीं मरियम जो, लेकिन तु म्हारे बच्चे हैं तो मैं दुआ करता हूं कि खु दा उनका ख़याल रखे और तु म्हें उस गम से बचाए जिससे मैं दोचार हूं । मु झे अब भी उनके सपने आते हैं । मैं अब भी अपने मरे हुए बच्चों के सपने दे खता हूं ।

मैं तु म्हारे सपने भी दे खता हूं मरियम जो। मु झे तु म्हारी कमी महसू स होती है । मु झे तु म्हारी आवाज़ की तु म्हारी हं सी की कमी महसू स होती है । मु झे तु म्हें पढ़ कर सु नाना याद आता है और वो वक़्त याद आते हैं जब हमने ताय मछलियां पकड़ी थीं। क्या तु म्हें वो वक़्त याद, है जब हमें साथ मछलियां पकड़ी थीं? तु म एक अच्छी बे टी थीं, मरियम जो, और मैं शर्मिंदगी और पछतावा महसू स किए बिना तु म्हारे बारे में सोच तक नहीं सकता। अफसोस... तु म्हारे मामले में मे रे पास अफसोस का सागर है मरियम जो। मु झे अफसोस है कि जिस रोज़ तु म हे रात आईं तो मैं तु मसे नहीं मिला। अफसोस है कि मैं ने तु म्हारे लिए दरवाज़ा नहीं खोला और तु म्हें भीतर नहीं ले गया। मु झे अफसोस है कि मैं ने तु म्हें अपनी बे टी नहीं बनाया। अफसोस है कि मैं ने तु म्हें उतने बरसों तक उस जगह में रहने दिया। और किस लिए? इज्ज़त खो दे ने के डर से अपने तथाकथित अच्छे नाम के

कलंकित हो जाने के डर से इस घिनौनी जं ग में इतने नु क़सान उठाने के , इतनी सारी भयानक चीजें दे खने के बाद अब ये सारी बातें कितनी छोटी लग रही हैं । लेकिन बे शक अब बहुत दे र हो चु की है । शायद यह उन लोगों के लिए जायज़ सजा है जो निर्मम होते हैं कि उन्हें तब समझ आए जब कोई भी चीज़ पलटी नहीं जा सकती हो, सु धारी नहीं जा सकती हो। अब मैं इतना ही कर सकता हूं कि मैं कहूं कि तु म एक अच्छी बे टी थीं, मरियम जो, और यह कि मैं कभी तु म्हारे लायक नहीं था। अब मैं बस

तु मसे माफ़ी ही मां ग सकता हूं । इसलिए मु झे माफ़ कर दो मरियम जो। मु झे माफ़ कर दो। माफ़ कर दो। माफ़ कर दो।

अब मैं वो दौलतमं द आदमी नहीं रहा जिसे तु म कभी जानती थीं। कम्यु निस्टों ने मे री ज़्यादातर ज़मीन जब्त कर ली है और मे रे सारे स्टोर भी ले लिए हैं । लेकिन शिकायत करना नीचता है, क्योंकि खु दा ने अब भी मु झे ज़्यादातर लोगों से कहीं अधिक ही बख्शा है और मैं इसकी वजह नहीं समझ पाता। काबु ल से लौटने के बाद मैं ने अपनी बची खु ची ज़मीन भी बे च दी। मैं ख़ेत के साथ में तु म्हारे लिए तु म्हारे हिस्से की विरासत रख दी है । तु म दे ख सकती हो कि यह बहुत बड़ी दौलत से तो कहीं कम है, लेकिन यह, फिर भी कु छ है । यह कु छ है । (तु म इस पर भी गौर करोगी कि मैं ने रकम को डॉलरों में बदलने की छूट ले ली है । मु झे लगता है कि यह बे हतर होगा। के वल खु दा ही हमारी सं कट में फं सी हुई करें सी का नसीब जानता है ।

उम्मीद करता हूं कि तु म यह नहीं सोचोगी कि मैं तु मसे माफ़ी ख़रीदने की कोशिश कर रहा हूं । उम्मीद करता हूं तु म मु झे इस बात से नवाज़ोगी कि तु म्हारी माफ़ी बिकाऊ नहीं है । यह कभी बिकाऊ नहीं थी। भले ही दे र से, लेकिन मैं तु म्हें बस वो दे रहा हूं जो शु रु से ही तु म्हारा था। तु म्हारा मैं जिंदगी में एक फर्ज़ निभाने वाला बाप नहीं रहा। शायद मैं मौत के बाद हो पाऊं ।

आह मौत। मैं तु म्हें ब्योरे दे कर परे शान नहीं करूंगा लेकिन मौत अब मे री नज़रों के दायरे में है । डॉक्टर कहते हैं कि दिल कमज़ोर है । मु झे लगता है कि एक कमज़ोर आदमी के लिए मौत का माकू ल सलीका है ।

मरियम जो,

मैं जुर्रत कर रहा हूं, मैं यह उम्मीद करने की जुर्रत कर रहा हूं कि यह ख़त पढ़ने के बाद तु म मे रेतिप्रऊससे कहीं ज़्यादा दयालु होओगीजितना मैं कभी तु म्हारेलिए था। कि तु म अपनेदिल में अपने अब्बा को आकर दे खने की चाहत पाओगी।कि एक बार और तु म मे रा दरवाज़ा खटखटाओगी और मु झे इस बार इसे खोलने का एक मौक़ा दोगी, कि मैं तु म्हारा स्वागत कर सकूंतु म्हें अपनी बां हों में ले ,मेरी बे टीजै सा मु झे बरसों पहले करना चहिए था। यह एक कमज़ोर उम्मीद है, मे रेदिल जितनी ही कमज़ोर। यह

मैं जानता हूं । लेकिन मैं इं तज़ार करूं गा। मैं तु म्हारी दस्तक को सु नने का इं तज़ार करूं गा। मैं उम्मीद करता रहूं गा।

खु दा तु म्हें एक लं बी और आरामदेज़िंदगी बख्शे, मे री बे टी। खु दा तु म्हें से हतमं द और खू बसू रत औलादों से नवाज़े । तु म वो खुशियां, चै न और मकबूलियत हासिल करो, जो मैं तु म्हें नहीं दे पाया। अच्छे से रहो। मैं तु म्हें खु दा की प्यार करने वाली बां हों के हवाले कर रहा हूं ।

तु म्हारा नालायक बाप

जलील

उस रात होटल लौटने के बाद जब बच्चे खे ल कबिस्तर पर चले गए तो लै ला ने तारिक़ को ख़त के बारे में बताया। उसने कपड़े की थै ली में रखी रकबिखाई। जब वो रोने लगी तो तारिक़ ने उसे चू मा और अपनी बां हों में उसे थामें रहा।

इक्यावन

अप्रै ल 2003

सू खाख़त्म हुआ। आख़िरकार पिछली सर्दियों में बर्फ़बारी हुई और घु टनों तक हुई। और अब कईदिनों से बारिश हो रहीं है । काबु ल नदीफिर से बह रही है । इसकी बसं त की बाढ़ ने टाइटेनिक सिटी को बहा दिया था।

रास्तों पर अब कीचड़ था। जू ते धं स जाते । कारें फं स जातीं। से ब के भारी बोझ से लदे गधों केखुर बा के बने छोटे तालाबों से पानी के छींटे उड़ाते किन्तुकोई भी कीचड़ की शिकायत नहीं कर रहा था, कोई भी टाइटेनिक सिटी का मातम नहीं मना रहा था। लोग कहते, हमें फिर से हरे भरे बन गए काबु ल की ज़रूरत है ।

कल लै ला बच्चों को बौछारों में खे लते हुए दे ख रही थी। वो काले आसमान के नीचे आं गन में पानी के एक तालाब से दूसरे तालाब में कू द रहे थे । वो दो छोटे सोने के कमरों वाले मकान की रसोईकी खिड़की से दे ख रही थी। यह मकान उन्होंने दे साजं ग मेंकिराए पर लिया था। आं गन में अनार का एक पे ड़ था और स्वीटब्रियर की झाड़ियां थीं। तरिक़ ने दीवारों की मरम्मत की थी और बच्चों केलिए एक फिसलन पट्टी, एक झू ले का से ट और जल्मै की नई बकरी केलिए बाड़ से घिरी एक नई जगह बना दी थी। लै ला ने जल्मै की खोपड़ी पर से ढुलकती बारिश को दे खा उसने पू छा थाकि वो तारिक़ की तरह, सिर के बाल हटाना चाहता है । थोड़ा बदलाव करते हुए तरिक अब बबलू ढुआएं पढ़ता था। बरिश ने अज़ीज़ा के लं बे बालों को चिपका कर सपाट

कर दिया था और उन्हें गीली पूं छ में बदल दिया था। वो जब सिर झटकती तो उससे छींटे उड़ कर जल्मै पर पड़ रहे थे ।

जल्मै अब करीब छह बरस का था। अज़ीज़ा दस की थी। उन्होंने पिछले हफ़्ते उसका जन्मदिन मनाया था। वो उसे सिने मा पार्क ले गए थे जहां सरकार टाइटेनिक काबु ल के लोगों के लिए दिखाई जा रही थी।

'चलो बच्चो, हमें दे र हो रही है,' लै ला ने उनके दोपहर का खाना काग़ज़ के थै ले में रखते हुए पु कारा।

सु बह के आठ बज रहे हैं । लै ला पां च बजे उठ गई थी। हमे शा की तरह अज़ीज़ा ने उसे सु बह की नमाज़ के लिए हिला कर उठाया था। लै ला जानती थी कि नमाज़ों के ज़रिए अज़ीज़ा मरियम को थामे रखती थी, ये मरियम को अपने करीब बनाए रखने का तरीका थी, जब तक कि वक़्त अपना काम न कर जाए, उसकी यादों के बागीचे से मरियम के खींच न ले जै से कि पतवारों को जड़ों की तरफ़ से खींच लिया गया।

नमाज़ के बाद लै ला वापस बिस्तर पर चली गई थी और अभी सो ही रही थी कि तारिक़ चला गया। उसे इसकी धुं धली सी याद है कि उसने उसने गालों पर चू मा था। तारिक़ को एक फ्रां सीसी एनजीओ में काम मिल गया था, जो बारूदी सु रं गों और कटे हुए अं गों वाले लोगों को नकली पां व लगाते थे ।

जल्मै अज़ीज़ा का पीछा करते हुए रसोई में आया।

'तु म्हारे पास अपनी नोटबु कें, है ं म दोनों के पास? पेंसिलें? किताबें ?'

'यहां है' अज़ीज़ा ने अपना पीठ पर टां गने वाला बै ग उठाते हुए कहा। फिर से लै ला ने गौर किया कि उसकी हक़लाहट कम हो रही है ।

'तो फिर चलें ।'

लै ला ने बच्चों को घर से बाहर आने दिया, फिर दरवाज़े में ताला लगाया। उन्होंने बाहर एक साथ सु बह में क़दम रखे । आज बरिश नहीं हो रही है ।

आसमान नीला है और लै ला को दूर आसमान में बादलों का एक झुंड दिखा। हाथ पकड़े हुए वो तीनों बस स्टॉप तक गए। सड़के पहले से ही भर चु की लाइनमें रिक्शों, टैक्सियों, सं यु क्त राष्ट्र के ट्रकों, बसों, आईएसएएफ की जीपों का एक मज़बू त प्रवाह है । उनींदी आं खों वाले कारोबारी अपनी दुकानों के दरवाज़ों के ताले खोल रहे थे, जिन्हें पिछली रात बं द किया गया था। च्यू इं ग गम और सिगरे ट के डिब्बों की मीनारों के पीछे रे हड़ीवाले बै ठे थे । राहगीरों

से सिक्के मां गती हुई विधवाएं नु क्कड़ों पर अपनी अपनी जगहें पकड़ चु की हैं ।

लै ला को काबु ल लौटना अजीब लगा। शहर बदल चु का है । हर रोज़ वो लोगों को पौधे रोपते, पुराने घरों को रं गते हुए, नए घर बनाने के लिए ईंटे ले जाते हुए दे खती है । वो गटर और कु एं खोदते हैं । खिड़कियों के ओटे पर लै ला को मु जाहिदीनों के पु राने रॉके टों के खोखे में उगाए हुए फूल दिखे हैं । काबु ली उन्हें रॉके ट फू ल कहते हैं । हाल ही में रंगे लै ला और बच्चों को बाबर के बागीचे में ले गए जिनकी मरम्मत करके उन्हें नया बनाया जा रहा था। बरसों में पहली बार लै ला को काबु ल के नु क्कड़ों पर सं गीत सु नाई दे रहा है, रुबाब और तबला, दोतार, हारमोनियम और तं बू रा। अहमद ज़ाहिर के पु राने गीत।

लै ला चाहती है कि मम्मी और बाबी इन बदलावों को दे खने के लिए ज़िंदा होते । लेकिन जलील के ख़त की तरह काबु ल का पछतावा दे र से पहुं चा।

लै ला और बच्चे बस स्टॉप जाने के लिए सड़क पार कर रहे थे कि दागदार खिड़कियों वाली एक काली लैं ड क्रू ज़र ते ज़ी से आई। उनको बचाने के लिए आखिरी मौके पर वो मु ड़ गई और लै ला हाथ भर से भी कम मीद से बाल-बाल बची। इससे चाय के रं ग का गंदा पानी उड़ कर बच्चों की कमीज़ों पर पड़ गया।

लै ला ने जल्दी से बच्चों को फु टपाथ पर खींच लिया। उसका दिल गले में धड़क रहा था।

लैं डक्रू ज़र ने सड़क पर ते ज़ी से भागते , हुए बार हॉर्न बजाया और जल्दी से बाईं तरफ़ मु ड़ गई।

लै ला वहीं खड़ी अपनी सां सें ु स्त करती रही। उसकी उं गलियां अपने बच्चों की कलाइयों पर कसी हुई थीं।

इसने लै ला की जान ले ली थी। इसने उसकी जान ले ली थी जं गी सरदारों को काबु ल लौटने दिया गया था। कि उसके अम्मी अब्बू के महल चहारदीवारियों से घिर बागीचों वाले आलीशान घरों में रह रहे हैं, कि वो इसके मं त्री और उसके उप मं त्री बनाए जा रहे हैं कि वो चमकदार, बु ले टप्रू फ एसयू वी ज़ियों में उन मु हल्लों से होकर बे धड़क घू म रहे हैं जिनसे उन्होंने तबाह किया था। यह उसकी जान ले ले ता है ।

लेकिन लै ला ने फै सला किया कि वो गु स्से से लड़खड़ाएगी नहीं। मरियम ने यह नहीं चाहा होता। क्या तु क है? वो एक मासू म और समझदार मु स्कान के साथ कहती। इसमें क्या अच्छाई है लै ला? और इसलिए लै ला ने आगे बढ़ने के लिए इसे बर्दाश्त कर लिया। अपने लिए, तारिक़ के लिए, अपने बच्चों के लिए। और मरियम के लिए, जो अब भी लै ला के सपनों में आती थी, जो कभी भी उसकी चे तना में एक या दो सां सों से ज़्यादा नहीं रही थी। लै ला आगे बढ़ती रही। क्यों कि आखिरकार वो जानती थी कि वो बस यही कर सकती है । बस वो यही कर सकती है और उम्मीद कर सकती है ।

जमान फ्री थ्रो लाइन पर खड़े घु टने मोड़े बास्के टबॉल उछाल रहे हैं । दो दर्जन एक जै सी जर्सियां पहने और आधा दायरा बना कर बै ठे हुए लड़कों के एक समू ह को निर्देश दे रहे हैं । जमान ने लै ला को दे खा और अपनी बां हों में दबाई और उसकी तरफ़ हाथ हिलाया। उसने लड़कों से कु छ कहा जिन्होंने इसके बाद हाथ लहराया और चिल्लाए, 'सलाम, मोअल्लिम साहिब!'

लै ला ने भी हाथ हिलाया।

यतीमखाने के खेलने के मैदान में पूरब रुख की दीवार से लगा कर सेब के छोटे-छोटे पौधों की कतारें रोपी गई थीं। लैला ने मंसूबा बनाया था कि दक्षिण की दीवार फिर से बनते ही वहां भी कुछ पौधे रोपे जाएंगे। झूले का एक नया सेट, बड़े मैदान की बार और एक जंगलजिम लगे हैं।

स्क्रीन डोर से होकर लैला भीतर चली गई।

1 उन्होंने यतीमखाने को बाहर और भीतर से फिर से रंगा था। तारिक़ और जमान ने चूती हुई छत की मरम्मत की थी, दीवारों को ठीक किया था, खिड़कियां बदली थीं, जिन कमरों में बच्चे सोते और खेलते, उनमें दरियां बिछाई थीं। इस पिछली सर्दी में लैला ने बच्चों के सोने के कमरों के लिए कुछ बिस्तर, तकिए और अच्छे ऊनी कंबल ख़रीदे थे। उसने सर्दियों के लिए लोहे के स्टोव लगवाए थे।

काबुल के अखबारों में से एक अनीस ने यतीमखाने को फिर से बनाए जाने पर एक लेख छापा था। उन्होंने जमान, तारिक़, लैला और सहायकों में से एक को बच्चों की एक कतार के सामने खड़ा करके फोटो भी लिया था। जब लैला ने लेख देखा तो उसे बचपन की अपनी सहेलियों गीती और हसीना का ख़याल आया। और हसीना की बात का ख़याल आया, बीस की होने तक गीती और

मैं, हममें से हरेक चार-पांच बच्चे पैदा कर चुकी होंगी। बिना तुमलैलातुम हम दोनों बेवकूफ़ों को नाज़ से भर दोगी। तुम कुछ बनने जा रही हो। मैं जानती हूं, एक दिन मैं एक अखबार उठाऊंगी और उसके पहले पन्ने पर तुम्हारा फोटो देखूंगी। फोटो पहले पन्ने पर नहीं छपा था, हालांकि इसके बावजूद, यह छपा था जैसा कि हसीना ने कहा था।

लैला मुड़ी और ठीक उसी गलियारे में आगे बढ़ी जहां दो बरस पहले उसने मरियम ने अज़ीज़ा को जमान के हवाले किया था। लैला को अब भी याद था कि कैसे उन्हें अपनी कलाइयों पर से अज़ीज़ा की उंगलियों को छुड़ाना पड़ा था। उसे इसी गलियारे में रुलाई को दबाते हुए भागना याद आया। मरियम का उसे पुकारना और आतंक से अज़ीज़ा का चिल्लाना याद आया। गलियारे की दीवारें अब डायनासोरों, कार्टून

किरदारों, बामियान के बु द्धों और यतीमों द्वारा बनाई गई तस्वीरों के चित्रों से भरी हुई थीं। उनमें से अधिकतर तस्वीरों में झोंपड़ियों पर चलती तोपों, एक-47 लहराते आदमियों, शरणार्थी शिविरों के तं बु ओं और जिहाद के दृश्यों कोदिखाया गया था।

लै ला गलियारे में एक कोने पर मु ड़ी और अब बच्चों को क्लासरूम के बाहर इं तज़ार करते हुए दे खा। उसका स्वागत दुपट्टों और घु टे हुएसिरों पर पहनी टोपियों ने, नन्हीं, पतली उं गलियों ने, उदासी की खू बसू रती ने किया।

जब बच्चों ने लै ला को दे खा तो वो भागते हुए आए। वो पू री तरहचिल्लाकर दौड़ते हुए आए। लै ला उनसे घिर गई। फिर तो ऊं चे सलामोंतेज़ आवाज़ों, हां फने, पकड़ने, थपथपाने, छूने और उसकी गोद में चढ़ने के लिए दूसरों से धक्कामु क्कीकिए जाने का रे ला आ गया। फै ले हुए नन्हें हाथ और खु द की तरफ़ धकियाए जाने की अपीलें हैं । उनमें से कु छ ने उसे अम्मी कहा। लै ला ने उन्हें सु धारा नहीं।

इस सु बह इन बच्चों को शां त करने और उन्हें बाकायदा एक कतार बना कर क्लासरूम में ले जाने में लै ला को मे हनत करनी पड़ी।

तारिक़ और जमान ने एक साथ लगे हुए दो कमरों के बीच की दीवार कोगिरा कर क्लासरूम बनाया था। फर्श में अब भी ढे रों दरारें हैं और कहींहीं टाइलें नदारद हैं । कु छ वक़्त केलिए फर्श को तिरपाल से ढं क दिया गया है, लेकिन तारिक़ ने जल्दी ही सीमें ट से कु छ नई टाइलें लगाने औरफ़र्श पर दरी बिछाने का वादा किया है ।

क्लासरूम के दरवाज़े के ऊपर एक आयताकार बोर्डटोंका गया है, जिसे जमान नेघिस पर चिकना बनाया और उस पर चमकदार सफ़े द रं ग लगाया। इस पर एकब्रश से जमान ने शायरी की चार पंक्तियां पें ट की हैं । लै ला जानती हैंकि ये उन लोगों को जवाब है, जो ये रोना रो रहे हैंकि अफ़ग़ानिस्तान को जिस सहायता रकम का वादा किया गया था वो नहीं आ रही है, कि पु नर्निर्माण बहुत धीरे चल रहा है, कि भ्रष्टाचार फै ला

हुआ है, कि तालिबान एकजु ट हो चु के हैं और बदला ले नेलिए आएं गे, कि दुनिया एक बार फिर अफ़ग़ानिस्तान को भू ल जाएगी। ये लाइनें जमान के पसं दीदा शायरफ़िरदौस की गज़लों से ली गई थीं

यु सू फ़ लौटे गफिर से कन, गम न कर झोंपड़ियां गु लाब के बागीचों में लौटें गी, म न कर अगर एक बाढ़ आनी है, सभी जिंदा चीज़ों को डुबोने केलिए नू ह तू फान की आं खों में है ते रा रहनुमा न कर

लै ला इस बोर्ड के नीचे से गु ज़री और क्लासरूम मेंदाख़िल हुई। बच्चे अपने जगहों पर बै ठ रहे, पन्ने फड़फड़ाते हुए अपनी नोटबु कें खोल रहे , बातें कर रहे हैं । अज़ीज़ा अपनी बगल की एक कतार में एक लड़की से बातें कर रही है । काग़ज़ का एक हवाई जहाज़ ऊं चा उड़ते हुए कमरे कीदूसरी तरफ़ जा रहा है । किसी ने इसे दोबारा उछाल दिया है ।

'अपनी फ़ारसी की किताबें खोलो बच्चो,' लै ला ने टे बल पर रखी अपनीकिताब पर झुकते हुए कहा।

फड़फड़ाते पन्नों के कोरस के बीच लै ला बिना पर्देवाली खिड़की तक गई। शीशे से वो खे ल के मै दान में फ्री थ्रो का अभ्यास करने केलिए कतार में खड़े लड़कों को दे ख सकती है । उनके ऊपरपहाड़ों के ऊपर सु बह का सू रज उग रहा है । उसने बास्के टबॉल के लोहे के छल्ले को दे खा। टायर के झू ले की जं जीरें । जमान के गले में लटकती सीटी, उसका नया चश्मा। लै ला ने शीशे के हल्केगर्म पल्लों पर अपनी हथे ली सटा दी। अपनी आं खें बं द कर ली। उसने धू प को अपने गालों, अपनी पलकों और ललाट पर आने दिया।

जब वो काबु ल लौटे थे तो लै ला को पहले इसका बहुत सदमा हुआ था। वो नहीं जानती थी कि तालिबान ने मरियम को कहां दफनाया था। उसका मनकिया था कि वो मरियम की कब्र पर जा सकती, कु छ दे र बै ठती, एक

या दो फू ल वहां रख आती। लेकिन अब लै ला दे खती थी कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मरियम कभी भी बहुत दूर नहीं है । वो यहीं है, इन्हीं दीवारों में जिनको उन्होंने फिर रं गा है, इन पे ड़ों में जिनको उन्होंने रोपा है, उन कं बलों में जो बच्चों को गर्म रखते हैं, इन तकियों, किताबों और पेंसिलों में । वो बच्चों की हं सी में है । वो

उन शे रों में हैंजिन्हें अज़ीज़ा पढ़ती है और उन दुआओं में हैजिन्हें पश्चिम की तरफ़ सिर झुकाए वो पढ़ती है । लेकिन मरियम सबसे ज़्यादा लै ला के अपनेदिल में है, जहां वो हज़ारों आफताबों की फू टती हुई जगमगाहट में दमक रही है ।

लै ला ने महसू सकिया कि कोई उसका नाम ले कर बु ला रहा है । वो मु ड़ी और आदतन उसने अपनेसिर को अपने अच्छे वाले कान की तरफ़ से ज़रा सा उठाया। यह अज़ीज़ा थी।

'मम्मी? क्या आप ठीक हैं?'
कमरा शां त हो गया है । बच्चे उसे दे ख रहे हैं ।
लै ला जवाब दे ने ही वाली थीकि एकाएक उसकी सां स फं स गई। उसने हाथोंको सीने से लगा लिए। उसने वहां थपथपाया जहां पल भर पहले उसने एक हौल महसू सकिया था। उसने इं तज़ारकिया। लेकिन अब कोई हरकत नहीं हो रही है ।
'मम्मी ?'
'हां, मे री जान। लै ला मु स्कु राई।'मैं ठीक हूं । हां । बहुत ठीक।
क्लास के सामने अपनी डे स्क पर जाते हुए लै ला ने नामों के उस खे ल के बारे में, जिससे उसने और पिछली रात खाने के दौरान खे ल रहे थे । जब से लै लाने मरियम और बच्चों को खबर दी थी, तब से यह उनके रोज़ रातों की रस्म हो गई थी। वो हिलते-डुलते हुए और अपनी अपनी पसं द पे श करते ।कि मु हम्मद को पसं द करता है । जल्मै कि, जिसने हाल ही में टे प पर सु परमै न दे खी, यही उलझन होती है कि क्यों एक अफ़ग़ानी लड़के का नाम क्लार्क नहीं रखा जा सकता। अज़ीज़ा अमन के लिए मुहिम छे ड़े हुए है । लै ला को उमर पसं द आता है ।

लेकिन इस खे ल मेंसिर्फ मर्दों के नाम ही शामिल हैं । क्योंकि अगर यह लड़की हुई तो लै ला उसका नाम पहले ही रख चु की है ।

***** समाप्त *****

sjeet

आख़िर में

करीब तीस सालों में अफ़ग़ानिस्तान में शरणार्थियों के सं कट ने पू री दुनिया के सबसे गं भीर सं कटों में से एक का रूप ले लिया है। जं ग, भु खमरी, अराजकता और उत्पीड़न ने ज़बरदस्ती दे शों लाख लोगों को उनके घरों से उजाड़ दिया है। वे भाग कर पड़ोस के दे शों पाकिस्तान और ईरान में बसने को मजबू र हुए हैं। पलायन के इन सबसे बु रे दिनों में करीब अस्सी लाख अफ़ग़ानी लोग विदे शों में शरणार्थियों के रूप में रह रहे है। आज बीस लाख से अधिक अफ़ग़ानी पाकिस्तान में पनाह लिए हुए हैं।

2002 से करीब पचास लाख शरणार्थी सं यु क्त राष्ट्र की शरणार्थी संस्था यू एनएचसीआर की मदद से अपने घरों को लौटे हैं। सितं बर 2007 में मैं उत्तरी अफ़ग़ानिस्तान में इनमें से कु छ लोगों से मिला। मैं उन परिवारों से मिला जो एक डॉलर रोज़ से भी कम पर जीवन बसर कर रहे हैं। वे पू री तरह ज़मीन के भीतर खोदे गए गड्ढों में बं द रह कर गु ज़ारते हैं। मैं उन गां वों में गया जहां दो में से एक गर्मी के मौसम में परिवारों के दस से पं द्रह बच्चे मर जाते हैं। जिन लोगों से मिला वे कीचड़ भरी नदियों से लाया पानी पीते हैं और जिनकी आसानी से ठीक हो सकने वाली बीमारियों से मौते हो जाती हैं। उनके पास सिर छुपाने को घर नहीं है और न ही उन्हें इलाज, स्कू ल, खाना और नौकरी मयस्सर हैं। मैं यह सब दे ख कर टूट गया था।

जीवन को बदल दे ने वाले इस सफ़र का ही नतीजा है द खालिद हुसै नी फाउं डे शन

इस फाउं डे शन के साथ हम स्थाई और लं बे बदलाव की उम्मीद करते हैं। 2009 में फाउं डे शन ने यू एनएचसीआर के साथ मिल कर उत्तर-पूर्वी अफ़ग़ानिस्तान में 71 बे घर परिवारों के लिए घर बनाने में मदद दी। लौटने वाले बे घर शरणार्थियों के लिए और भी घर बनाए जाने की योजनओं पर काम चल रहा है। हम

अभी सबसे ज़्यादा उन परियोजनाओं को फं ड दे ने में तरजीह दे रहे हैं जिससे शरणार्थियों, औरतों और बच्चों को फायदा हो। ये दोनों समू हों ने इस फं से हुए दे श में सबसे ज़्यादा तकलीफें उठाई हैं और इन्हीं पर अफ़ग़ानिस्तान का आने वाला कल निर्भर करता है ।

अफ़ग़ानिस्तान को फिर से बनाने की ज़रूरतें बहुत बड़ी हैं । वहां लोगों को तकलीफों से बचाने ज़िम्मे दारी एक लं बी और मुश्किल कोशिश है । इसके बारे में या खालिद हुसै नी फाउं डे शन के बारे में जानने के लिए इस वे बसाइट पर आएं: www.khaledhosseinifoundation.org

शुक्रिया

खालिद हुसै नी

शुक्रिया

शुक्रिया अदा करने के पहले कु छ बातें साफ़ कर दूं । जहां तक मैं जानता-हूं ल दामन का गां व एक काल्पनिक जगह है । जो लोग है रात शहर से वाक़िफ हैं, वो इस पर गौर करें गे कि मैं ने इसके आस पास के भू गोल का व्योरा दे ने में थोड़ी बहुत छूट ली हैं । अख़िर में, इस उपन्यास का शीर्षक सत्रहवीं शताब्दी के फ़ारसी शायर साएबे-तिवरिज़ी द्वारा लिखी गई एक नज़्म ले लिया गया है । जिन लोगों ने यह नज़्म फ़ारसी में पढ़ी है, वो बे शक इस पर गौर करें गे कि जिस शे र में इसका शीर्षक है, उसका अं ग्रे ज़ी तर्जुमा शाब्दिक अनु वाद नहीं है । लेकिन यह एक आम तौर से कबू ल कर लिया गया तर्जुमा है, जिसे डॉ जोसे फीन डविस ने किया है और मु झे यह अनु वाद प्यारा लगा। मैं उनका आभा री हूं ।

मैं क्रिस्टी न सरवर, हिक़मत सादात, एल्सी हे थवे गजमे रीस्टे से क्लॉग्स क्विल और हलीमा जज़मीन क्विल को उनके द्वारा की गई मदद और सहारे के लिए शुक्रिया अदा करता हूं ।

अपने अब्बा, बाबा को इस किताब की पां डुलिपी को पढ़ने, इस पर अपनी राय दे ने और हमे शा की तरह उनके प्यार और सहारे के लिए बहुत खास शुक्रिया। और अपनी अम्मी को भी बहुत खास शुक्रिया, जिनकी

निस्वार्थ, सौम्य अं तरात्मा इस पू री कहानी में रची-बसी है । आप मे री समझ हैं अम्मी जी। अपनी सास और ससु र को भी उनकी उदारता और मे हरबानियों के लिए

मे रा शुक्रिया।

मैं अपनी एजें ट एले न कोस्वर को हमे श्हा मे शा अपने में भरोसा रखने के लिए, जोडी हॉचकिस्स (आगे भी), डेविड ग्रॉसमै न, हे ले न हे लर और कभी न धकने वाले चै डलर फोर्ड को शुक्रिया अदा करना चाहता हूं । मैं रिवरहे ड बु क्स के हरे क व्यक्ति के प्रति कृ तज्ञ और कर्जदार हूं । खास तौर में मु सान पीटरसन के ने डी और ज्यॉफ्री क्लोस्के को इस कहानी में भरोसा रखने के लिए शुक्रिया अदा करना चाहता हूं । मेरे लिन डक्सवर्थ, मिह-हो चा, कै यरिन चिंच, क्रे ग डो बर्क, ले स्ली श्वार्ट्ज, होनी वर्नर और वें डी पर्ल को तहेदिल से शुक्रिया। ते जनिगाह वाले मे रे कॉपी सं पादक टोनी बिस को खास तौर से शुक्रिया, जिनकी निगाह से कभी कु छ भी नहीं टूटता, और मे री प्रतिभाशाली सं पादक तारा मै कग्राथ को उनके ब्रा, दूरदर्शिता और रहनु माई के लिए शुक्रिया।

आख़िर में शुक्रिया, रोया। इस कहानी को पढ़ने और बार-बार पढ़ने के लिए, मे रे आत्मविश्वास के ज़रा से सं कट को (और वे एक बार के बड़े सं कटों को) भरपूर करने के लिए, कभी सं दे ह नहीं करने के लिए। आपके बिना इस किताब का वजू द नहीं रहा होता। मैं आपको प्यार करता हूं ।

पश्चलेख

खालिद हुसैनी

यह लेख 2 जून 2007 को बुकएक्सपो अमेरिका में दिए गए एक भाषण का सार है।

मैं ने द काईट रनर के समय की तरह लिखना शुरू किया। मैं काबुल में 1970 के दशक में बड़ा हुआ और मैं कविताएं और छोटे नाटक लिखता था, जिन्हें मैं अपने और चचेरे भाईयों को फुसला कर अपने अब्बा और चाचाओं की दावतों में खेला करते थे। मैं ने कहानियां भी लिखीं, जिनके बारे में मुझे याद है वो उदास, तीव्र और बेशर्मी और गर्व से भरी हुई अतिनाटकीय हुआ करती थी। और अपने बचकाने तरीके से उनमें वफादारी, दोस्ती और वर्ग संघर्ष को दिखाया गया होता। उनमें परिष्कृत अंदाज़ या अदा की जो कमी थी वो उनका मन जीत लेने वाला विशाल दिल पूरा कर देता था। ऐसा द काईट रनर के किरदारों के बारे में लोग कहते हैं और शायद ये सही भी है।

जिस भाषा में मैं लिखता था, वो बदल गई है। मैं ने फ़ारसी में लिखना शुरू किया था, फिर मैं ने फ्रेंच में लिखा और अब मैं ज़्यादातर अंग्रेज़ी में लिखता हूं, लेकिन एक बात हमेशा बरकरार रही मैं एक अकेले पाठक के लिए लिखता रहा हूं। मेरे लिए, लिखना हमेशा खुद को एक कहानी सुनाने की एक लंबी, आत्मसंवाद की कार्रवाई रही है। आप जानते हैं कि कोई चीज़ मेरी दिलचस्पी को खींच लेती है और मुझे बैठ कर उसके भीतर देखने पर बाध्य कर देती हैं। इसी तरह द काईट रनर लिखी गई थी। मेरे दिमाग में दो बच्चे थे, जिसमें से एक के मन में भारी उथलपुथल थी और वो एक बेहद निश्चित नैतिक ज़मीन पर टिका था, और दूसरा मासूम और वफादार था और जिसकी जड़ें

ईमानदारी में जमी हुई हैं। मैं जानता था कि उनकी दोस्ती का बुरा अंत होगा, कि यह ख़त्म हो जाएगी और कि इसका उनके आसपास के लोगों की जिंदगियों पर गंभीर असर पड़ेगा। यह कैसे होगा और क्यों होगा इसकी बाध्यता ने मुझे घेरा, 2001 में बैठ कर यह उपन्यास लिखवाया।

मे रा इरादा कभी उपन्यास को प्रकशित कराने का नहीं था। जब मैं ने दीतीहाई उपन्यास लिख लिया था, तब भी मे रेदिमाग में यह बात नहीं आईकि कोई इसे पढ़े गा। हालकिि मैं ने सोचाकि शायद मे री बीवी इसे पढ़ें गी क्योंकि वो मु झे प्यार करती हैं । इस तरह आप द काईट रनर के छपने के बुदियाद भर में इसको मिली लोकप्रियता पर मे री है रानी की कल्पना कर सकते हैं । मु झे भारतदन, सिडनी, पेरिस, अरकां सास और सारी दुनिया से पढ़ने वालों केख़त हासिल हुए, जिन्होंने मे रे प्रति उनके मनोभावों को ज़हिर किया। उनमें से अने क ने जानना चाहाकि वो अफ़ग़ानिस्तान में कै से रकम भे ज सकते हैं । कु छ ने लिखाकि वो एक अफ़ग़ानी यतीम को गोद ले ना चाहते हैं । उन खतों में मैं ने एक अनोखीबिल्लियत दे खीकि कै से एक काल्पनिक कहानी ऐसे लोगों को आपस में जोड़ सकती हैजो अलग पहनावे पहनते हैंअलग तरह के मजहबों पर चलते हैं और मैं ने दे खाकि दोस्ती, अपराधबोध, माफ़ी, नु क़सान और प्रायश्चित के कु छ इं सानी एहसासात किस कदर सार्वभौम हैं ।

उन खतों में मैं ने यह भी दे खाकि कै से मैं ने अनचाहे ही खु द को एक खतरनाकस्थिति में रखदिया है कि द काईट रनर के बाद की कहानी कहने कीस्थिति में, और एक ऐसी किताब लिखने कीस्थिति में जिसके पन्नों की स्याही अभी गीली ही होगी कि उसे द काईट रनर से तु लनाकिए जाने का बोझ ढोना पड़े गा। और इसमें उसका कोई दोष भी नहीं होगा। मु झेमिले हरे कख़त को पढ़ने के साथ ही में एक ते ज़ और उत्ते जना से भरी हुई सां स से भर जाता और मैं अब तकलिखे जा रहे इस उपन्यास के प्रति दयाभाव से भर जाता। मैं अपने परिवार के विवे क के प्रति डरा हुआ था, जिसे इसकिताब को लिखते हुए मु झे वर्जित करना था।

मैं ने एक ऐसी कहानीलिखने का फै सला करके मामले को और भीजटिल बना दिया, जो एक नहीं बल्कि दो मु ख्यकिरदारों की मां ग करती थी और उनमें से दोनों ही औरतें थीं। यह फै सला मैं ने किया था, जब मैं द काईट रनर का अखिरी सं पादन कर रहा था- एक बाप और एक बे टे की कहानी।ख़ास

तौर से मर्दों की दुनिया में स्थित थी। मैं अफ़ग़ानिस्तान में केंद्रित एक दूसरी प्रे म कहानीलिखना चाहता था, लेकिन इस बार मां-बे टी की कहानी और दो सं घर्षरत औरतों की आं तरिक ज़िंदगी की कहानी कहना चाहता था। मे रा अं दाज़ा हैकि कु छ आसान रास्ते भी थेजिन पर मैं आगे बढ़ सकता थालेकिन मैं ने यही चु ना क्योंकि एक ले खक और एक अफ़ग़ानी होने के नाते मैं अपने वतन कीघर्षरत औरतों की कहानी से ज़्यादा

आकर्षक या अहम या बाध्यकारी कहानी नहीं सोच सकता था। नाटकीय तौर पर कहें तो इसकी तु लना में दूसरी हरे क कहानी फीकी लगी।

बदकिस्मती से तालिबान अफ़सरों के सख्त चमकते हुए चे हरे के सामने से गु ज़रने में बु ढं की औरतों की छवि दुनिया भर में बे हद आम हो गई है । शायद उससे भी बढ़ कर यह एक प्रतीक बन गई है । जब मैं 2003 में काबु ल में था तो मैं एक ऐसे आदमी से मिला जिसने सरकारी बॉडीगार्ड के रूप में काम किया था। उसने यों ही मु झे एक औरत की कहानी बताई जिसे उसने तालिबान अधिकारी द्वारा सड़क पर पीटे जाते दे खा था। यह कहानी उसने खु शनु मा भावों के साथ बताई। उसने कहा कि अफ़सर ने उस औरत को तब तक पीटा जब तक उसकी हड्डियों से उसकी मां का जू ता नहीं चू ने लगा। वह कहानी सु नते हुए मु झे यह बात हक़ीकत से परे लगी कि ऐसा काबु ल में हो चु का था। यह बहुत पहले की बात नहीं है जब अफ़ग़ानिस्तान में औरतें यूनिवर्सिटियों में प्रोफ़े सर हुआ करती थीं वे डॉक्टर और वकील थीं, अस्पतालों में काम करती थीं, स्कू लों में पढ़ाती थीं और समाज में एक अहम भूमिका अदा करती थीं। मे री अम्मी की तरह यूनिवर्सिटियों में पढ़ी हुई और फ़ारसी पढ़ाने वाली औरतें थीं जो आख़िर में लड़कियों के एक बहुत बड़े हाई स्कू ल में वाइस प्रिंसिपल भी बनीं। लेकिन यह काबु ल की बात थी और अफ़ग़ानिस्तान एक शहरी मध्य वर्ग का राष्ट्र नहीं है । यहां हमे शा उदार सु धारवादी काबु ल और दे हाती अफ़ग़ानिस्तान के बीच वै चारिक फ़र्क़ रहा है । दु:खद सच्चाई यह है कि तालिबान के पकिस्तानी खुफिया विभाग की आं खों का तारा बनने के बहुत पहले से औरतों के ख़िलाफ़ तालिबान की शै ली का उत्पीड़न अफ़ग़ानिस्तान के कु छनिश्चित इलाकों में मौजू द रहा था। अगर तु लनात्मक रूप से दे खें तो एक तरफ़ काबु ल औरतों की खु दमु ख्तारी का एक मरकज़ था और दूसरी तरफ़ दे हाती अफ़ग़ानिस्तान में औरख़ास कर दक्षिण और पू रब के पश्तून इलाके

लगे सरहदी इलाकों में रिवायती तौर पर पितृ सत्तात्मक कबीलाई इलाके मौजू द रहे हैं जहां औरतों की किस्मत तय किया करते हैं । वहां औरतें हमे शा कै द रही हैं । हमे शा उन्हें रास्तों पर सहम कर चलना पड़ता रहा है और बारह साल की उम्र के बाद शायद ही कभी वो स्कू ल गई हों। इस तरह उन इलाकों में भारी निरक्षरता रही है । सदियों से औरतों को यह बताया जाता रहा है कि वो कहां शादी करें, किनसे शादी करें और अखिरकार कितनी शादियां करें । ज़्यादातर हिस्सों में दे हाती औरतें चु पचाप पर्दे के भीतर आज्ञा मानते हुए, से वा करते हुए जीती रही हैं ।

हो सकता है कि आपको इससे है रानी हो लेकिन काबु ल सेपिछली पू री सदी में अफ़ग़ानिस्तान की औरतों को आज़ाद करने की अने क कोशिशें शु रू हुईं।1920 के दशक में अमानु ल्लाह नाम के एक बादशाह थे जिन्होंने सरे आम बुर्का पहनने पर पाबं दी लगा दी थी। उन्होंने औरतों केलिए पहला अस्पताल और लड़कियों के लिए पहला स्कू ल बनवाया। वो पू र यू रोप सेशिक्षकों को ले कर आए और औरतों को तालीम हासिल करने केलिए यू रोप भे जा। अमानु ल्लाह ने जबरन होने वालीशादियों पर पाबं दी लगाने की कोशिश की, लड़कियों के लिए शादी की न्यू नतम उम्र को बढ़ा कर सोलहकिया और दुल्हनों के लिए पै से दे ने के चलन पर पाबं दी लगाई। बदकिस्मती से, मु ख्यतः इन कोशिशों के नतीजे में बगावत हो गई और उन्हें शहर छोड़ कर भागना पड़ा। वो निर्वासन में बू ढ़े होकर मरे ।

1950, 60 और 70 के दशकों में भी कोशिशें हुईंजिनमें से कु छ केअच्छे नतीजे सामने आए1964 में अफ़ग़ानी औरतों को वोट दे ने का हक़ हासिल हुआ। लेकिन काबु ल के इन सु धारों कोपितृ सत्तात्मक कबायली ने ताओं ने हमे शा मखौल उड़ाया।उन्हें मानने से इन्कारकिया और कु छ मामलों में तो बगावत कर दिया, जै साकि बे चारे बादशाह अमानु ल्लाह के साथ हुआ था।

इसलिए आप दे ख सकते हैंकि अफ़ग़ानी औरतों के लिए जिंदगी तालिबान के पहले से ही एक जद्दोजहद थी। लेकिन यह अलग-अलग गु टों के बीच जं गछिड़ जाने, अराजकता और उग्रवाद की शु रुआत के साथ असहनीय हो गई। अने क तरीकों से तभी सचमु च तबाही आई।

औरतों को सभी की तरह न के वल आम लोगों केरिहाइशी इलाकों में बमबारी और अं धाधुं ध गोलीबारी का सामना करना पड़ा, न के वल उन्हेंपिटाई

और यातनाएं और जलालतें और कै दबर्दाश्त करने पड़े न के वल उनके बुनियादी हक़ों की बार-बार धज्जियां उड़ाई गई बल्कि बड़ी सं ख्या में वो नीक आधार पर होने वाले दुर्व्यवहारों की शिकार भी हुईं। उन्हें अगवा किया गया और गु लामों की तरह बे चा गया।मिलीशिया कमां डरों से उनकी जबरन शादी कराई गई।उन्हें

वे श्या बनने पर मजबूकिया गया, उनका बलात्कार किया गया। बलात्कार एक ऐसा घिनौना और अक्षम्य अपराध था, जिसका इस्ते माल उन परिवारों को धमकाने केलिए किया गया, जो एक या दूसरे गु ट का विरोध कर रहे थे ।

आज तालिबान के चले जाने के बा9/11 के बाद के अफ़ग़ानिस्तान में फिर से औरतों की आज़ादी की बातें हो रही हैं, जै सीकि होने चहिए। अफ़ग़ानी औरतों पर थोपा गया लैंगिक भे दभाव आधुनिक दुनिया की अब तक हल नहीं हुई सबसे नाइं सफियों में से एक है । इसके साथ-साथ अफ़ग़ानिस्तान को अपनी औरतों की ज़रूरत है । अफ़ग़ानिस्तान के पु निर्माण में अगर अफ़ग़ानी औरतों के बुनियादी हक़ों का सम्मान नहीं किया गया और उनको इसमें भागीदारी की इजाज़त नहीं दी गई तो यह पू री परियोजना नाकाम हो जाएगी।

बादशाह अमानु ल्लाह की बीवी रानी सु रै या ने कहा था, 'जो भी हो, यह मत सोचिए कि हमारे कौम को अपने लिए सिर्फ मर्दों की ज़रूरत है । औरतों को भी इसमेंहिस्सा ले ना चहिए जै सा उन्होंने इस्लाम के शु रुआती बरसों में लिया था। पू रे इतिहास में औरतों द्वारा की गई अनमोल से वाओं का ब्योरा मिलता है । और उन मिसालों के ज़रिए हम सीखते हैंकि हम सबको ही अपने कौम की तरक्की केलिए मिल कर भागीदारी करनी होगी।' रानी ने ये शब्द1926 में कहे थे और मु झे लगताकि है उनकी बातें अस्सी बरसों के बाद भी प्रासंगिक हैं और शायद तब तो और भी प्रासंगिक होंगी।

मैं 2003 में काबु ल लौटा और हर तरह की ज़िंदगी जी रहे लोगों से मिला। और मु झे एक नु क्कड़ पर खड़े होना और पू री तरह ढं की हुई औरतों को चलते दे खना याद है । उनके पीछे, क्यांस, छह बच्चे चल रहे होते । मु झे यह सोचना याद है कि इसके भीतर का इं सान कौन है? उसने क्या-क्या दे खा है? उसने क्या-क्या सहा है? किस बात से उसे खु शी मिलती है? क्या उसे दु ख दे ता है? उसकी उम्मीदें, उसकी लालसाएं, उसकी निराशाएं क्या हैं?

एक तरह से हजारों दमकते आफ़ताब (ए थाउजें ड स्प्लेंडिड सं स) उन सवालों के जवाबों की कल्पना करने की मे री कोशिश है । ये उन दो काल्पनिक औरतों की भीतरी जिंदगी को तलाशने की और उन पर्दों के भीतर के बे हद मामू ली इंसानियत को दे खने की मे रे द्वारा की गई कोशिश है ।

हजारों दमकते आफ़ताबमु झे बहुतबहुत प्रिय है । इसे प्यार ने जनदिया है और मैं उम्मीद करता हूंकि यह कहना उतना महत्वाकांक्षी नहीं लगे गाकि मैं सोचता हूंकि ये अफ़ग़ानिस्तान के महान साहस, सहनशीलता और लचीले पन को मे रीविनम्र श्रद्धां जली है ।

मैं उम्मीद करता हूंकि ये किताब आपके दिल को छुएगी, कि मैं आपको अपने साथ बहा ले जाऊं गा और उपन्यास आपको हिला कर रख दे गी और आपको अफ़ग़ानी औरतों के प्रति हमदर्दी से भर दे गी,जिसकी तकलीफों की मिसाल हाल की दुनिया के इतिहास में बहुत कममिले गी।

- खालिद हुसै नी

मरियम तव महज़ पं द्रह साल की थी जब रशीद के साथ उसकी शादी करा दी गई और उसे काबु ल भे ज दिया गया। करीव दो दशक बाद उसकी दोस्ती वहां की एककिशोरी लै ला से होती है औफिर यह मां-बे टी जै से एक मज़बूतिश्ते में बदल जाती है । दे श परतालिवान की हुकू मत शु रु होने के बजिंदगी भू ख, क्रू रता और डर केख़िलाफ़ निराशा से भरी एक जद्दोजहद में तब्दील हो गई थी। लेकिन तब भी प्यार लोगों से गै र मामू ली काम करा ले ता है और है रान कर दे ने वालीुरीबहादसाथ मुश्किल से मुश्किल रुकावटों से पार पाने में उनकी मदद करता है ।

'अगर आप जानना चाहते हैंकि हज़ारों दमकते आफ़ताब, द काईट रनर जितना ही अच्छा है या नहीं तो जवाय है : नहीं। यह उससे बे हतर' है

- वॉशिंगटन पोस्ट

'इसे पढ़ करसिर्फ कठोर दिलवाले ही नहींहिलें गे
-ग्लौमर

'दिल को छू ले ने वाली दास्ताऩ. यह तालिवान की हुकू मत में औरतों के ु ख और धैर्य की एक ज़ोरदार कहानी भी है'
-डे ली मे ल

एक हज़ार शानदार सू रज, खालिद हुसै नी
पें गु इन ह्रिया
प्रकाश बु क्स
1384 178-0-691-96587-9

sjeet